

श्रीसहजानंदस्वामिनेनमो नमः ॥ अथश्रीवास्तुदेवमहात्म्यभाष्यप्रारंभते ॥ छंदभुजंगप्रयात ॥ नमामिधर्म
 नंदने ॥ अज्ञादिदेववंदने ॥ एकांतदृष्यधारकं ॥ अधर्मवंशदाहारकं ॥ १ ॥ स्वभक्तगर्वांगजनं ॥ मराल
 युथरंतने ॥ मनोजमसुभेदकं ॥ अनंगमुलछेदकं ॥ २ ॥ विशाललीललोचनं ॥ भवाब्धिदुःखमोचनं
 उच्चवर्त्मपोषकं ॥ कुकर्मपंकशोषकं ॥ ३ ॥ मनुष्यदेहधारकं ॥ सदास्फुटिकारकं ॥ प्रफुट्टकंत
 हस्तकं ॥ स्फुफालश्रेतमस्तकं ॥ ४ ॥ शरिणीतचंदने ॥ फकंजहारमंडने ॥ जनांतरारितईने ॥ कुमारम
 नमईने ॥ ५ ॥ अमंतलीकनायकं ॥ स्वभक्तमोक्षदायकं ॥ मुनींद्रमोदयोषकं ॥ कुगर्भबंधमोचकं ॥ ६
 स्फुधर्मवंशमंडने ॥ स्फुरिसैमदेडने ॥ कुसंगकामखंडने ॥ स्वभक्तमानभंडने ॥ ७ ॥ हृषादीसेतुकार
 कं ॥ प्रयत्नभक्ततारकं ॥ स्फुभक्तीधर्मबालकं ॥ नमामिलीकपालकं ॥ ८ ॥ सोरठा ॥ वेदुचरनसरी
 ज ॥ श्रीनिकेतसंतापहर ॥ आनंदकरप्रदमो ज ॥ ध्यानधस्तजाहिमुनिवर ॥ १ ॥ करकुंठ्यामोयसां
 म ॥ स्फुभगुनकेतुमहोसदन ॥ अहोनिशिआनुंजाम ॥ तवगुनगावकुप्रमवदन ॥ २ ॥ होहा ॥ अखिल
 जिवअंतरकी ॥ जोहेज्ञाननहार ॥ सोभूतलप्रगटभये ॥ भक्तीधर्मकुमार ॥ ३ ॥ सोसहजानंदउरही ॥ ॥१॥



अरकसुंकरकुंउजास ॥ वास्तुदेवमहात्मकी ॥ करकुंभुमानंदभाष्य ॥ ४ ॥ श्रीकृष्णस्कंदधारसें ॥ सावर्णि
 कुंकीन ॥ उपदेवाभक्तीशास्त्रको ॥ पंचरात्ररसलिन ॥ ५ ॥ वालखिल्यब्रह्मोत्तर ॥ काशिरिवकेदार ॥ विद्यु
 खंडप्रभासहि ॥ सातखंडनिर्धार ॥ ६ ॥ एकात्रिहजारहे ॥ सांख्यास्कंदपुराण ॥ तामेविद्युखंडविषे ॥ माहा
 त्म्यवास्तुदेवज्ञान ॥ ७ ॥ प्रथमकेअध्यायमें ॥ सावरगाभेकिन ॥ प्रथमस्वामिस्कंदसें ॥ सोहमनेलिखिदीन
 ८ ॥ चौपार्श्व ॥ सोनककहेस्ततुप्रबहुकनीना ॥ जिवकेस्फुभलियेसाधनकिन ॥ ज्ञानवेरागपधर्मविस्तारि
 ॥ अष्टांगजोगविधिस्तभारि ॥ १ ॥ जोइतिहासकहिगयेअनंता ॥ करिआग्रहहमस्फुनेबुधि वंता ॥
 अखिलजनकुंडुकराह ॥ विघनबहुपरतविचतेह ॥ २ ॥ द्विजातीतिनवरनजननेकु ॥ साधनकोनही
 पावेफलनेकु ॥ जाजलिनैसैतनकियेजबहि ॥ बहुतकालफलपायेतबहि ॥ ३ ॥ याकारनस्तमन
 मेविचारी ॥ स्फुगमउपायकहोपावेपारि ॥ वरनआश्रमशुद्धअरुनारि ॥ किंचितकरिफलपावेभारी ॥
 ४ ॥ विघनसेनेकुनासंहोहि ॥ शुद्धअरुनारिकरेजोकोही ॥ स्फुभसाधनयाविधकोविचारि ॥ सबजीवही
 तलियेकहोधारि ॥ ५ ॥ व्यासरुमरगेमहर्षणाताता ॥ प्रसनभयेतुमपरसाक्षाता ॥ जानतहोतुमकहो

वास्व
॥३॥

सबगाथा ॥ स्तननकिइच्छाहेमोयनाथा ॥ ६ ॥ स्तकहेसौनकतुमजोकिना ॥ सोईप्रथमसावराणीप्रवी
ना ॥ पुछतद्विवस्तककुंशिरनाई ॥ देकुंस्वामिमोरसंवायमिदाई ॥ ७ ॥ दोहा ॥ धर्मज्ञानयोगीसांख्यहि ॥
बहुभांतिकरकिन ॥ साधनसबकनेहम ॥ तुमसेगुहप्रविन ॥ ८ ॥ जोपाई ॥ साधनकोहमपारनहिपा
वे ॥ समरथसेबहुकालबनिआवे ॥ याकारनजोगासांख्यसेंतेहु ॥ साधनश्रेष्ठकहोतुमतेहु ॥ ९ ॥ दो
हा ॥ स्तकहेस्तनसौनक ॥ सावर्णिनेकिन ॥ गाथास्वामिगुहसें ॥ स्तनिकेबोलेप्रविन ॥ १० ॥ जोपाई ॥
निजत्रमेंधरिहूरिकीधाना ॥ बोलेहुं संकरस्तकज्ञाना ॥ मोरतातमुखसेंफंनिनेहु ॥ सहजेष्ट्रु भपावे
जनतेहु ॥ ११ ॥ देवप्राणधनसमस्तभकारि ॥ साधननहि सबदेखेविचारी ॥ स्तककोफलचाहतनेहु
देवसबंधिकरेजनतेहु ॥ १२ ॥ अत्युक्तर्मसोमहाफलदाई ॥ विघननहनहिताकुंआई ॥ कर्मदेवरुपि
त्तिलियेतेहु ॥ सदाचारश्रुतइष्टितेहु ॥ १३ ॥ देवसबंधकुंजोतोपाई ॥ तुरतहोतवांछितफलदाई ॥ बुद्ध
रसांख्यैवरागपज्ञो गजेहा ॥ होतसहजस्तभदायकतेहा ॥ १४ ॥ दोहा ॥ देवप्राणधनतेहु ॥ वांछितफ
लप्रदहोतसब ॥ सबनकरिपिताहु ॥ देवपुजहुं निजसन्कीसम ॥ १५ ॥ जोपाई ॥ सावर्णिस्तदसेंसि

अ-१

वर्णाश्रमकुं
जोस्तभकारि
कदनजोग्यतु
महमसेंधारि
॥६॥

॥३॥

रनाई ॥ बोलेउवांनिस्तनोगोसांई ॥ स्तदपुरानसेंतुमबहुकीना ॥ रविरुद्रादिकदेवप्रविना ॥ १६ ॥ तिनकुं
आणधनकिनेहुइरिति ॥ बहुप्रकारकरितुमकीति ॥ प्रथक्प्रथकफलदिनबताई ॥ गीतरुनिस्वर
गादिसेपाई ॥ १७ ॥ निवृत्तधर्मनिष्ठनेजोगी ॥ जनतपससुलोकभयेभोगी ॥ अज्ञादीउपासनकोफल
नेहु ॥ अज्ञतआयुषकेअंतनवातेहु ॥ १८ ॥ कष्टहुंसेकर्मसिधकरहि ॥ फलनावाप्रदसोदेवप्रहरही
बलवपुधामकालसेजावे ॥ यादेवकीआणधननहिचावे ॥ १९ ॥ सावरणिगुहसेंशिरनाई ॥ बोलेवच
नदेवदेहुंबताई ॥ आपनिर्भयश्रीरकीभयहारि ॥ भक्तवत्सलसनातनस्तभकारि ॥ २० ॥ अक्षरधा
मअक्षयफलदाता ॥ हीदेवहमकुं देवान्श्रीसाक्षाता ॥ जासकपाहोतमनोरथपुरा ॥ याजनममेंहरिमी
लेहनुरा ॥ २१ ॥ इनकुंआणधनकिकहोरिति ॥ महाजनमानतताकुंकरधीति ॥ विनुंप्रयाससबसेबनी
आवे ॥ जाकुंज्ञाननहमारचितचावे ॥ २२ ॥ दोहा ॥ स्तकहेसौनकहुंसे ॥ सावराणीकिगाथा ॥ स्तनिसं
करस्तबोवही ॥ पुनिमुनिहुंसेनाथ ॥ २३ ॥ इतिश्रीस्तदपुराणेविष्टमुखेंदश्री वास्वदेवमाहात्म्येश्रीस
हानानंदस्वामिशिष्यभूमानंदमुनिकृतभाषायांप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ दोहा ॥ आसेतिककत्यांण

वासुदे
॥३॥

अ-३

कि॥ ५३ ॥ नैमैकहिवात ॥ नारायणानारदकी ॥ समागमसाक्षान ॥ १ ॥ सोरठा ॥ षष्ठममेंजाननहार ॥ साव
र्णिसमनाहिकोउ ॥ ज्ञानिवरूपनंतउदार ॥ मिलेतीउत्तरनांहिहोवे ॥ १ ॥ स्कंदकहेतुममुनिकीन
प्रथमहतउत्तरयाकी ॥ नहोवेदेवकृपाविन ॥ सतवरसलुनिजबुधिसें ॥ २ ॥ दोहा ॥ हरिकृपाकरि
कछु ॥ जानेहमकहुंतोई ॥ धर्मनिष्ठअतिज्ञानके ॥ गोप्यज्ञानतोहोई ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ जोतुमप्रथमकियो
मोसेआई ॥ सोकियोधर्मनेभिष्मसेजाई ॥ कृतेहतेनारनाय्यामोई ॥ ध्यानकरिकृष्णकुंउरमेंलाई ॥ ४ ॥
आगमनिगममेंसावधाननेहुं ॥ बोलेधर्मतासेमितनसंदेहुं ॥ चहुंबरणअरुआश्रममांहि ॥ चतुरव
रागफलइछेनरजाहि ॥ ५ ॥ तातकहोकीनदेवकुंसेवे ॥ विघनरहितफलकिसविधलेवे ॥ अल्पसुक
तिजनमाहाफलपाहि ॥ जानतहोतुमदेहुंबताहि ॥ ६ ॥ दोहा ॥ गुहकहेषष्ठधर्मने ॥ कियेसोफनके
तात ॥ मुसकेमुखपंकजलखि ॥ कृष्णकोसाक्षात ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ कृष्णहृगनकरिधरेगंगावा ॥ वा
सुदेवमाहात्मकह्योक्तभेवा ॥ नारायणानारदसैंजोकिना ॥ सोनिजतातसैंभीष्मनेचिना ॥ तातना
मसंतनुकहिदिना ॥ धर्मसैंकहतजोभिष्मप्रविना ॥ ८ ॥ नारदवाटेकुरुखेतमेंआई ॥ भीष्ममुखसेपु ॥ ३ ॥

निस्संनेमुद्दपाई ॥ आगोस्नेनरनारायणाहुंसैं ॥ कैलासजाईकिनमोरतातक्तसैं ॥ ९ ॥ तातकृपाकरि
केमोसेकिना ॥ सावर्निस्सुंदरेसंदोकिना ॥ कृषिसभामेनिरणितजेहुं ॥ कपटरहितजानिकुंउमेंते
हुं ॥ १० ॥ दोहा ॥ सबकुंसेवनलायक ॥ वासुदेवब्रह्मज्ञान ॥ पुरुषोत्तमश्रीकृष्णसो ॥ कहतयुंवेदपुरा
न ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ सकामनिष्कामिसुक्तनजोउ ॥ ताहिकुंपुजनतोपदेवसोउ ॥ शुद्धत्रियाक्षिज्जाश्र
मिजेहुं ॥ धर्मचुतभक्तीसंगनिरखेतहुं ॥ १२ ॥ प्रभुप्रसन्नतालियेसबकरना ॥ कर्मपितृदेवनिगमजो
ब्रह्म ॥ निजसूखलियेसुभकर्मआचरहि ॥ कृष्णसबंधविनधर्मकृतकरहि ॥ १३ ॥ ताकोसबफल
नावावंतजानो ॥ विघनकारिणहिलयैश्रानो ॥ इंधननकेदृत्रास्करकीना ॥ मुंदेइनेतिनकासिरछी
ना ॥ १४ ॥ एहिभांतिकेविघनपरैआई ॥ देवकालसैंवांछितफलजाई ॥ सोकर्मकृष्णसबंधकुंपाई ॥
निर्गुणहीहिअक्षयफलदाई ॥ १५ ॥ आपइछितसेअधिककेदाना ॥ अक्षयविघ्नविनफलसाक्षाता
प्रभुप्रतापमेंविघ्ननआवे ॥ असतदेवादिफलनहिलेमावे ॥ परतजिकुंजेसेविघनआये ॥ त्रिदेहध
रियुनिप्रभुपदपाये ॥ १६ ॥ दोहा ॥ अल्पसूक्तनिजहोई ॥ कृष्णसबंधकुंपावेजबहि ॥ महाफलदाय

वास्व
॥४॥

कसोई हीतहेफंनोकडुंसावरा॥ १७॥ **चोपाई** ॥ अनलतिरवारफुकबनकुंयाव ॥ काऊसेनबुकेअ
सविधबढप्रावा ॥ श्रीदामतंडुलजौपदीवाकतेऊ ॥ प्रभुजिमाईफलपायेअप्रमेऊ ॥ १७॥ याविधफ
लनरइछनहाए ॥ हरिहितकरिकर्महोहिउदाए ॥ निव्रतप्रवृत्तधर्ममेरहितेऊ ॥ प्रभुभजितावेब्रह्मपुर
मेंतेऊ ॥ १८॥ **दोहा** ॥ यामेइतिहासजो ॥ पुरातनकडुंवात ॥ नारायणनारदसें ॥ किनिजोसाक्षात ॥ २०
चोपाई ॥ ब्रह्मपुरमेंवास्वदेवरहेऊं ॥ धर्मरूमूर्तिमेंघगटभयेऊ ॥ स्वयंभुवमनवंतरमांई ॥ प्रथमकेस
तक्रगमेंआई ॥ २१॥ युगलरुपभयेजनरुभदाई ॥ धर्माश्रमसेंबडिवनआई ॥ धमनिसेव्यापककरु
सरिण ॥ लोकनाथतपेहरेपरपिण ॥ २३॥ तेतप्रतापनिजबडुतदेखावे ॥ करमुनिवरकीउदेखननपा
वे ॥ जापरअनुग्रहकरेविरदोउ ॥ तवयाकीपावेदरानसोउ ॥ २३॥ **दोहा** ॥ याकिप्रसनताविनजो ॥
कृषिनकीभजोउ ॥ दरानइंद्रादिककुं ॥ दुर्लभहेअप्रतिसोउ ॥ २४॥ **चोपाई** ॥ एकदिनारदकुंछेदोउ
भाई ॥ अंतरतामिहोईखिनेबोलाई ॥ मेरुशृंगसेंनभमगचलेतेऊ ॥ बडिआश्रमआयिनुतसनेऊ ॥
२५॥ **दुसेदेखतभयेदृगनपसारि** ॥ संधाकरतनैष्टिकव्रतधारि ॥ आईततकालउररहेविचारी ॥ दे

अ-३

॥४॥

खिक्रियाआश्चर्यभयोभारि ॥ परब्रह्मदोनुंहेफभकारी ॥ सबकेईशुपुजेतसत्रियुगारि ॥ देवनदेवप्रात
पितासबनके ॥ कोनयुजनजोगपदेवेइनके ॥ २५॥ **दोहा** ॥ नारदकहेनिजमनमें ॥ हेपुरुषोत्तमब्र
ह्म ॥ याकुंकरनोकुंघुटे ॥ संधावंदनकर्म ॥ २६॥ **चोपाई** ॥ मनऊंसेंचिंतनकरिहरिदासा ॥ कजो
रिनार्इरताटेपासा ॥ देवकर्मसंध्याविष्टमुपुजनादी ॥ पितृत्पणकरिनिजप्रतिपादी ॥ २७॥ तजिमु
निवृत्तनारददिगआई ॥ पुजेनारदकुंअरअपाद्यलाई ॥ अपूरवपुजादेखआश्चर्यकारि ॥ बैवेप्रभु
दिगउरभयोमोहभारि ॥ २८॥ **सोरठा** ॥ नारदकरिकेप्रणाम ॥ निरखिनारायणपुंनिनरकुं ॥ बोलेप्रभु
सेंनिष्काम ॥ करिसावधाननिजमनऊंकुं ॥ २९॥ इतिश्रीकंदपुराणोविष्टमुखंडेश्रीवास्वदेवमाहा
त्म्येश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभुमानंदमुनिकृतभाषायांछित्तियोध्यायः ॥ ३॥ **दोहा** ॥ सबजनकुं
उपासहे ॥ वास्वदेवभगवांन ॥ तिसरेअध्याकेविषे ॥ इतनिवातप्रमांन ॥ १॥ **सोरठा** ॥ नारदकहेसि
रनाई ॥ सनातनतुमआदिकरता ॥ आगामनिगमजसगाई ॥ जाहिकोयोब्रह्मतुमहिप्रभो ॥ ३॥ **चो
पाई** ॥ अखिलजगतधरअंतरतामी ॥ ब्रह्मासुपेतुमसरजहिस्वामि ॥ इंप्रजातिविषेतुमकुंजोनि ॥

वासुदे
॥५॥

अ. ३

यज्ञकरिताकुंजतहेप्रानि ॥३॥ देवप्ररुषित्रकेहीतुमदेवा ॥ किनकुंजतकुंजुमकहोसोभेवा ॥ नाराय
 एबोलेनारदसंगाथा ॥ रहस्यकहेगेकुंतुतोरासाथा ॥४॥ ओरसेकहनजोगपनहीवानि ॥ जधारथककु
 तवनिजहासजानी ॥ ससरुज्ञानअनंतनब्रह्मजेडु ॥ गगतजोश्रुतिगुणातितनरतेडु ॥५॥ दिव्यस्वरुप
 महापुरुषजेहा ॥ छहप्रवासुदेवविष्णुप्रभुनेहा ॥ नारायणकृषीभगवानकहावे ॥ आगमनिगमयं
 चरणयुंगावे ॥५॥ तबमममातपिताअसएक ॥ युजेसोहमकरिसंध्याविवेका ॥ पितरुदेवअसवि
 नतोरेगाही ॥ ब्रह्मपुरेशामीरस्वरुपकहाही ॥६॥ दोहा ॥ प्रजादाएनुमेकिये ॥ लोकहितउरलाई ॥
 देवपित्रकरुओअस ॥ कर्मजोरितकराई ॥ नरनारायणमेकह्यो ॥ निवृत्तधर्मजोनांम ॥ प्रजापतिडुनेक
 ह्यो ॥ प्रव्रतसोउसकाम ॥७॥ चौपाई ॥ वेदकेकर्महेदोनुप्रकार ॥ निवृत्तप्रवृत्तजनकरनउधार ॥ प्रवृ
 तधर्मकीकडुमेंरिती ॥ विवाकीवेदविधिसहिति ॥८॥ रवेधनमायसेयागकरेतेहा ॥ जोतिष्टोमादिक
 धनयागकेहा ॥ देवलोकलियेमावसोहेसकामा ॥ सुरअरुग्राममेंकरिरहेधामा ॥९॥ प्रवृत्तकर्मकुंवा
 रिअसभांती ॥ अंतेहोतहेअकरकसांति ॥ निवृत्तधर्मलछनलोभतेहा ॥ कामक्रोधधनत्रियसागतेहा ॥

१० ॥ ५ ॥

श्रमदमतपवनकुंमेवासा ॥ शंतिवैरागपनुतरहडिउदासा ॥ ब्रह्ममावज्ञानअरुजोगमखजेहा ॥ जपमख
 जानोकर्मनिवृत्ततेहा ॥११॥ प्रवृत्तधर्मकेपालनहारा ॥ त्रिलोकिस्वर्गमेंरहडिउदाए ॥ इंद्रकुचंडअग्निलो
 कंमार्ग ॥ बडुविधयुएफलवांचितयाई ॥१२॥ जोनिजयुएफलसोरेहाई ॥ सोयुनिपरतहेभुतलअई
 देवकेवैभवकालकरेनावा ॥ निजयुएपाईगिरेहीडिउदासा ॥१३॥ सोरखा ॥ लोकअधिपतिदेव ॥ इंद्र
 दिकेवैभोगतेडु ॥ कालवैहीतनावातेव ॥ ब्रह्मदीनमेंवेरचौदतेडु ॥१४॥ चौपाई ॥ निवृत्तधर्ममेंनिष्ठावा
 नजोगि ॥ जनतपससकेहोतहेभोगी ॥ निमितपरलेमेंआचतनोई ॥ मनवांचितभोगपावेफलदाई ॥१५
 द्विपारधपिछेभोगानावाहोहि ॥ कालकेवेगसेसंपतिसोहि ॥ याकारमदोनानावावानकिना ॥ निवृत्तप्रवृ
 तहरिसंबंधहिना ॥१६॥ गुणमयकर्मसोनिरगुणहोई ॥ छहप्रपासननुतकरेदोई ॥ अत्यकर्मअक्षयफ
 लदाई ॥ कर्ताकुंआत्रणदेतउलंघाई ॥१७॥ याकारनविवेकवानतोउ ॥ छहमभन्हीनुतक्रियाकरेसोउ ॥
 निवृत्तप्रवृत्तक्रियानुतकिनो ॥ पालनहारककुंनारदचिंनो ॥१८॥ ब्रह्मामनुभवधुगुदक्षधर्मा ॥ मरिचि
 अंगीरअत्रिपुलहकर्मो ॥ वशिष्ठवैभ्राजकतुपुलस्तयुनेता ॥ करप्रपकर्मसोमविवस्वानगिता ॥१९॥

वाक् ७
॥ ६ ॥

अ. ३

प्रतापति कृषी सबदेव हेनेऊ ॥ वर्णोऽप्राश्रमिसवपुत्रेप्रभुतेऊ ॥ प्रवृत्तधर्मके धारकाएऊ ॥ ककुंजवनि
वृत्तधर्मनेऊ धारा ॥ मनकृजानसनसनतकुमार ॥ २० ॥ मनकसनंदनसनातनतीउ ॥ आरुणिकपि
लकृभुयतिहंसोउ ॥ नैशिकव्रतधरमुनिसबाहा ॥ निवृत्तधर्मसेपुत्रेप्रभुतेहा ॥ २१ ॥ सोरला ॥ वाक्देवअं
गकीभाव ॥ लायकेदेवपितृकुंयनही ॥ उरलाधर्मअधिकउछाव ॥ हिंसाविननज्ञसंपुनही सदा ॥ २२ ॥ सो
पाई ॥ निवृत्तप्रवृत्तमेंजोरजननेऊ ॥ होयततपरतामेपुत्रेप्रभुतेऊ ॥ दोनुप्रकारकेजननोकहाई ॥ तिनकी
मरतादकीउलोपतनाई ॥ २३ ॥ धर्ममेरहितनइछतजोउ ॥ ताकुंतेसोफलदेतप्रभुसोउ ॥ भक्तीसहितपुत्र
अल्पहोताई ॥ अक्षेअमापफलदेवेप्रभुताई ॥ २४ ॥ निवृत्तप्रवृत्तधर्मयालनहाए ॥ यामेएकांतितोभ
क्तिकरेसाए ॥ हरिविनअोरखोरबासनासागी ॥ तेतीमयदेहयाइकेबउभागी ॥ २५ ॥ प्रायासेपरगोली
कमेताई ॥ प्रभुपदपुत्रेउरअानंदयाई ॥ एकांतिकविनअोरहरिदासा ॥ कालअनंतकरेप्रभुकीउपासा
२६ ॥ वासनाउरकुंसेदेवैबहार्ड ॥ प्रभुपदपावेसोएकांतिकमाई ॥ सकामनिकामकरेहरिमेजोराई ॥ ओ
रजनकिमाईसंसृतिनपाई ॥ २७ ॥ यज्ञअरुक्रमयोगसिधितेहा ॥ हरिसंबंधेहोयततकालतेहा ॥ बांछी ॥ २६ ॥

॥ ६ ॥

तविघनरहितफलतामे ॥ सबजनकरहिप्रसनहोयीतामे ॥ मुक्तमुमुक्षुकावैजननेऊ ॥ तिनकुंउपासन
लायकएऊ ॥ २० ॥ दोहा ॥ ब्रह्मरूपअजशिवजो ॥ करहिततउलास ॥ भक्तीपुरुषोत्तमकी ॥ होहिनिरे
तरदास ॥ २१ ॥ नारदकुंहरदकह्यो ॥ वेदपुराणमेंजेऊ ॥ रहसएतनिज्ञानियो ॥ भक्तज्ञानिनिजतेऊ ॥ २२ ॥
इतिश्रीस्कंदपुराणेंविद्यमुखेंश्रीवाक्देवमाहात्म्येश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदमुनिकृतभा
षायोत्तनीयो ॥ ध्यायः ॥ ३ ॥ दोहा ॥ सोथेमेवरनेहम ॥ श्वेतमुक्तकोरुप ॥ देखेतोनारदने ॥ श्वेतद्वीपअ
नुप ॥ १ ॥ सोपाई ॥ स्कंदसावर्णिसेकहियुनित ॥ नारायणनारदसेजोगिता ॥ युनिनारदस्वामिसेसिरना
ई ॥ बोलैप्रभुसेभुतलनोअ्राई ॥ २ ॥ कृषीभयेहोनिजतेनछपाई ॥ लिलातिहारिप्रववितमेप्रनाई ॥ पु
रनकामभयोदरवानपाई ॥ मनवांछितसोअतिस्वदाई ॥ ३ ॥ तदपितोररुपपुएतनतीउ ॥ देवाअोह
पाकरिक्रमसोउ ॥ नारायणकेस्वननारदसोउ ॥ एकांतिभक्तविनयावतनकोउ ॥ ४ ॥ दानतपयोगयोग
वेदभनेऊ ॥ एकांतभक्तीविनदेखातननेऊ ॥ वैरागकृतज्ञानभक्तीधर्मनेहा ॥ मोकुंघसनकियेकरितुमते
हा ॥ ५ ॥ नारदतुमदेवोरोरुपतेऊ ॥ अज्ञादिदेवकुंडुर्लभहेजेऊ ॥ आपासमेंमोरतुमजाकुंततखेऊ ॥ श्वेत

वास्तु ७
॥ ७ ॥

द्विपदेरेखोसहितसनेकुं ॥ पुरलमनोरथहोहितिहार ॥ भक्तएकांतिहेप्रभुकुंयाए ॥ ६ ॥ **शौरजा** ॥ साव
र्णिसंकहेस्कंद ॥ नारदग्रहीनारायणआग्या ॥ उरकुंमेंपाईआनेद ॥ चलेपुजनकरिनारायणकी ॥ ७ ॥
चोपाई ॥ जोगकलाकुंसेंचलेनभमार्ई ॥ वादेमैरुपरवतपरजाई ॥ सुकृतएकताकेश्रंगविलमाई ॥ श्रेत
द्विपकुदेवेवायुकीएताई ॥ ८ ॥ क्षिरसागरसेउतरहेजेकुं ॥ तेजकोपुंजविशालसीततेउ ॥ अंबकदंबनिं
वअनसअप्रवोका ॥ बिलमधुकसरदारुनियतीका ॥ ९ ॥ पिंपरवदकिश्रुकसागाचंपा ॥ पनसतमालमु
निधुमकेतकंपा ॥ स्फरमलिकाजातिमोगराजेकुं ॥ फलकुलभारसेकुकिरहेतेकुं ॥ १० ॥ कल्पवृक्षकेस
मुहरहेछाई ॥ करलिबदाभकीपंक्तीसुहाई ॥ उद्यानअनेकतामेतडागासरित ॥ कुलेकमलजामेस
गंधिअनुंपा ॥ ११ ॥ पक्षीहंसादीजामेबोलतससोर ॥ चलतमनोहरमृगागोरजोर ॥ स्थावरजंगमजिव
जामेनेहा ॥ मुक्तहेसबदिव्यदेहनुनतेहा ॥ १२ ॥ **रौहा** ॥ श्रेतद्विपमेंनारद ॥ देखेअनंतउदार ॥ पुरुषोत्त
मकेभक्तसो ॥ उतमदिअआकार ॥ १३ ॥ **चोपाई** ॥ अतिरंदिदिअस्वतंत्रज्ञाना ॥ खेदरहितदेहसुगंध
सुजाना ॥ यापरहितसबद्धीभुजधारि ॥ श्रेतसरिकीउसोहेभुजचारि ॥ १४ ॥ घनसांभवानबानिमेघस

अ. ४
॥ ७ ॥

माना ॥ कमलनयनदेहनांहेउंचनाना ॥ दिव्यकाचरनछुटेजिरकेशा ॥ सदाकिशोरउधरैरवाङ्गतवेना
१५ ॥ करचरलचिंङ्ककतअतिनिका ॥ नुरमिनआपेतेजरवीसेअधिक ॥ श्वेतवसनसांतवादेधरिधान
कालकंपेदेखमुक्तकीवाना ॥ १६ ॥ सावर्णिकहेस्वामितुमकीना ॥ कीनुवेनरसोहप्रनहिचिना ॥ दिव्यं
द्रिताकुकालउरनाई ॥ खेदरहितअंगसुगंधिसुहाई ॥ १७ ॥ कीनविधिभयेकहांजायगोसाथ ॥ श्रेतद्वि
पहेअसभुपरनाथा ॥ वामेरेवनहारहेसबएकुं ॥ दिव्यंद्रिकृतकहेतुमतेकुं ॥ १८ ॥ चिदघनअक्षरब्रह्म
धामजेकुं ॥ चिदघनमुक्तरुहिवामेसोकुं ॥ एहिबिनओरकीउहमनहिचिना ॥ मिटाओसंव्रायमोरतुष
हीप्रविना ॥ १९ ॥ **रौहा** ॥ संनिबचनसावर्णिक ॥ बोलेस्कंदरूपालु ॥ भक्तीअनमकीफलअस ॥ प्रस
नभयेउदयालु ॥ २० ॥ **चोपाई** ॥ पुरवकलयमेंभतेहेप्रभुतेकुं ॥ अजराअमारब्रह्मरूपभयेकुं ॥ अक्षरवा
सिश्रेतद्वीपमेंआथे ॥ वास्तुदेवसेचननारहजोपाथे ॥ २१ ॥ घलयकालकुंदेवकेएहा ॥ अक्षरमेंयुनिजाय
गतेह ॥ कालकेकालदृष्टाचारितनएकुं ॥ अक्षरमुक्तहेजाकेनामतेकुं ॥ २२ ॥ यालोकमेंमाधिकजननेहा
सतसाधनसेअक्षरहोहितेहा ॥ अहिंसातपवधर्मविएगा ॥ आत्मविचारज्ञानहरिकोसुएगा ॥ २३ ॥ भ

॥ ७ ॥

क्रिअनममहाजनसंगतेकु ॥ हरिसेवाविनमुक्तीसागतेकु ॥ अष्टसिद्धिअणिमादिकुंनचहहि ॥ हरि
 जसअनमोअमस्कनेअरुगाहि ॥ ३४ ॥ एकादशसाधनससएकु ॥ मुक्तहोवतहेकरिसवतेकु ॥ उसती
 प्रलयजक्तकोहोहि ॥ तामेनहिआवेखतंतरसोदि ॥ ३५ ॥ सोरत ॥ सावणिंस्कनुंतोय ॥ पुरवकीकथाक
 उवरनि ॥ मुक्तहोगयेजनतोय ॥ भुतलपरभगवानभज ॥ ३६ ॥ कथाहमसहीतविस्तार ॥ स्कंनिहेत्रिव
 जिकेसुखसे ॥ ककुंतुमसेंकरिप्यार ॥ सारसबहेअसयंथकुंको ॥ ३७ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेविष्णुवंदे
 श्रीवास्वदेवमहात्म्यश्रीसहजानंदस्वामिनिष्णुभुमानंदमुनिऋतभाषायांचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥
 दोहा ॥ वस्तुपरिचरकेसब ॥ सदगुनवरननकिन ॥ पंचप्रअधाकेविषे ॥ एहिदेवातनविन ॥ १ ॥ चौ
 पाई ॥ स्कंदकहेभयेउपरिचरराजा ॥ अमावस्कईघुसरवास्वसमाजा ॥ आयुगयकोभयेउकता ॥ भक्ती
 करतसोहोयहरिदूता ॥ २ ॥ धर्मबहुनिजतातसेवाकरही ॥ देवपित्रकर्मसदाअनुसरही ॥ सदाचारजु
 तदांतक्षमावानएकु ॥ सबउपकारिसांतअफयातनेकु ॥ ३ ॥ ब्रह्मचरकतशुचिरहेकोधसागि ॥ मृदु
 मितभोजीअमनमेनरागी ॥ निर्मानिधिरनिरविकारिस्वहाइ ॥ स्वखडुखसमआत्मनिष्ठउमाई ॥ ४ ॥

परहिमानदजोगीनिरहंभेकु ॥ इंद्रिजितहेसदातपस्वितेकु ॥ धनकृतदारसबंधिमेंनरागि ॥ कृष्णमंत्र
 जपेभक्तीसेंफभागी ॥ ५ ॥ दोहा ॥ तापरप्रसनभयेप्रभु ॥ दियोसकलजगाराज ॥ अनानाकहोईकरत
 सो ॥ भक्तीसहितसमाज ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ पंचरात्रविधिकहोअसमाई ॥ पंचकालपुजाकरिप्रभुरिकाई
 ताहिप्रसादसेंपितृदेवयजहि ॥ ताहिदोषविप्रसबंधिकुंभजही ॥ ७ ॥ ताहिदोषजमेपरहिंसासागी ॥
 मांसभक्षणदोषजानतस्फभागी ॥ निजप्रताकुंकोदोषबतावे ॥ प्रहापायसमकहिअसगावे ॥ ८ ॥ या
 विधभक्तीकरतसदाएकु ॥ प्रभुकुंभजेउरसहितसनेकु ॥ देवनकेदेवजनाईनसोउ ॥ आदिअंसमधम
 बकर्त्ताजोउ ॥ ९ ॥ याकेचरणेनिजमनउहगाई ॥ कानकथाविषेकियेहितलाई ॥ हरिहरजितकेदरशन
 काज ॥ नयनसदाकररखहिगजा ॥ १० ॥ हरिगुनगाननकियेनिजवानि ॥ घ्राणस्मनगंधलियुं किये
 जानी ॥ प्रसादिवस्त्रविनधरतनसोउ ॥ प्रसादविनअन्नपावतनकोउ ॥ ११ ॥ मंदिरतिर्थसंतदिगपावभ
 रहि ॥ कहेउहरिसेवाविषेकरही ॥ हरिवंदनलियेसिरसदाकिन ॥ सखाकोउकरतनहरिजनविना ॥
 १२ ॥ भक्तीविनुक्षणवृथानगमावे ॥ दूतसहितसदाहरिगुणागावे ॥ हरिकेजन्मउच्छवसबकरही ॥ मंदिर

वासुदे
॥ ८ ॥

वाटितुपवननप्रनुसरही ॥ १३ ॥ असविधभक्ती करत हरिकाता ॥ याकुं इंद्रासनदेतदेवगता ॥ रत्नवक्रत
 वैजयंतिमाला ॥ अमलकमलकिं इंद्रनेविनाला ॥ १४ ॥ देहगीहृदारा धनरासगतजेऊ ॥ आत्मसमरप
 नकियेसबएऊ ॥ काम्पनिमित्तक्रियातज्ञकीजेहा ॥ पंचरात्रविधिकृतकरततेहा ॥ १५ ॥ पंचरात्रज्ञान
 नमुविद्विजतेऊ ॥ याकेगहेजिमेप्रथमसंतेऊ ॥ प्रभुप्रसादकीमाहातप्रज्ञानी ॥ विप्रजिमाईजितममुद
 आनि ॥ १६ ॥ धर्मसंग्रहकरतअरिहंत ॥ कुतनबोलेमनसुधरहेसंत ॥ देहसेपापअणुमात्रनकरही
 पंचरात्रसंनिउरऊमेंधरही ॥ १७ ॥ हरिजनमुखसेसंनेहितलाई ॥ भगवतभक्तीतसपुष्टहोताई ॥ शुद्ध
 र्मधरापरवराताई ॥ प्रजापालतइंद्रदेवलोकांई ॥ १८ ॥ सप्तविधमांसकोभक्षकजोउ ॥ पाचंदवेगिया
 केराजमेनकोउ ॥ श्लोकः ॥ आहर्ताचानुमंताच ॥ विनास्ताक्रयविक्रयी ॥ संस्कर्ताचोपाभोक्ताच ॥ स्वा
 दकाः सस्यावही ॥ १९ ॥ चोपाई ॥ परत्रियगामीनरनारिबभित्तारी ॥ याकेराजमेनप्रधर्मकारी ॥ एका
 दशमद्युक्तातिनप्रकार ॥ संवैनकोउयाकोसंधनहारा ॥ २० ॥ श्लोकः ॥ पानसंज्ञक्षमाधुकं ॥ खान्तु
 रंतालमेक्षवं ॥ माधुस्यैरेमारिष्ठ ॥ भैरयंनालिकेरजं ॥ मोरवा ॥ धरमियाविधगुणवान ॥ पक्षपातकरि

अ-५
॥ ८ ॥

आमले भावडेने गौधनु पाणि एत्रण्येने उतालेने कोरेतेने ॥ गौडीमाध्वीतयापैश्रीविशेभात्रिधासुरा ॥ यशैयेकातयासकीनपातयाहिजे संभेः ॥ १ ॥ २

देवनको ॥ मिथ्याबोलिकृत्तान ॥ पैठेभूमेगिरेदेवलोकसे ॥ २१ ॥ चोपाई ॥ धर्मवञ्चलनिरंतरभुमिमांई ॥ प्र
 भुपरहोप्रतेमंत्रसुभदाई ॥ हरिकृपासेजिभित्तारा ॥ स्वर्गमेंताईभोगेसुखरूपपारा ॥ २२ ॥ विप्रसापसेपुनिभु
 मिपरआई ॥ चिदमयदेहभयनृपसुहाई ॥ पंचरात्रसेंभजेहरिमावधाना ॥ स्वर्गकुंयायेपुनिधरिदिअवान
 जनलोकवासिकुर्षीनुताएऊ ॥ हरिउपासनइंद्रकियेपुनितेऊ ॥ २३ ॥ दोहा ॥ सुनिपायेगोलीककुं ॥ दि
 यदेहधरितेऊ ॥ परमधामनिरभयनिस ॥ अक्षरपदसोएऊ ॥ २४ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे विष्णुरवंडे श्री
 वासुदेवमाहात्म्ये श्रीसहजानंदस्वामिद्विष्यभूमानंदमुनिवृत्तभाषायां पंचमोऽध्यायः ५ ॥ दोहा ॥
 हिंसापरकहिंवेदकु ॥ गिरेउछोरिचेमान ॥ उपरिचरसोकहतहि ॥ षटमोअप्रधाज्ञान ॥ १ ॥ चोपाई ॥ र
 स्कंदकहोवसुगिरेअसगाथा ॥ भक्तहोईमिथ्याबोलेवकुंनाथा ॥ किनुनेनिकासेभुसेपुनिएऊ ॥ विप्र
 शापकहांभयेकहेतेऊ ॥ २ ॥ सापसेमुक्तभयोकेसेराजा ॥ कहीमोरसंवायमिटावनकाजा ॥ सावलीसु
 रेवासमएऊ ॥ तेजप्रतापसेंअप्रावसतेऊ ॥ ३ ॥ याकि कथासुनिपापपलाई ॥ पूर्वइतिहासकऊंते
 रतांई ॥ स्वायंभुकेमनवंतरमांई ॥ विश्वजितनामंइंकहाई ॥ ४ ॥ इनुनेअश्रुमेधआरभेयागा ॥ वांधेय

वासुदे
॥१०॥

श्रुतामेकस्मिन् श्रौंगे ॥ अमरुद्राई वटेरसङ्गके लोभि ॥ महाकृषीं प्राये स्फरत्तमुं गोभि ॥ ५ ॥ लोकक
लांणलियुं विचरनयाकी ॥ करनउवेदेवदरानताको ॥ पाद्यन्नरघ्नप्रादीकपुतालाई ॥ पुत्रतभयेक
यीकुंमुदपाई ॥ ६ ॥ यामेंपशुबांधेकरतहित्रीए ॥ महाकृषीं देवभयेकमजोरा ॥ सतीगुनिदेवको
हिंसामययागा ॥ देवकेभयेमहामुनिवितरणगा ॥ ७ ॥ दोहा ॥ याविधन्नधर्मदेवके ॥ धर्मनिष्ठमुनि
गय ॥ बोलेउंइंद्रादिकमें ॥ अतिक्रपाउरलाय ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ देवकृषींनुतस्फरेवातुमन्नाई ॥ स्फुं
पोरवचनहेधर्मज्ञाभांई ॥ सनातनधर्मयाविधुजोनांई ॥ तोरउसतिकंऊंस्फुंनोदेवन्नाई ॥ ९ ॥ अथ
मसरगजब्रह्मज्ञानेकीनो ॥ सतीगुनसैरवेदेवसबचिनो ॥ ससतपदयासोचधर्मकेयाद ॥ तुमकुं
कियोहेरखोयाकीछतादा ॥ १० ॥ रत्तमोगुनसैरचेमनुसता ॥ दैतमेंमृपकीयेधर्मसैतकाजा ॥ अ
मरुद्रस्फरनरकेयागकाजा ॥ फलघदरच्योवेदसबस्फभभाजा ॥ ११ ॥ हिंसाविनसनातनधर्मकावे
वेदविषेहेश्रुतिसबमिलगावे ॥ यागमेंपशुवधवेदमतनांई ॥ धर्मस्थापनमतवेदकंकेमांई ॥ १२ ॥
हिंसामेंधर्मभंगवेदमतनांहि ॥ रत्तमहोषववपअस्फरन्वपाहि ॥ अतवेदकंमेंवहबुक्तनांई ॥ १० ॥

अ-६

॥१०॥

ब्रीहिकोअर्थज्ञागमानेमुकराई ॥ १३ ॥ सात्विकहोतुमदेवस्फरेवा ॥ वेदअरथहिंसाविनलेकासा
सतीगुनित्रीयाहेतुमकुंघटिता ॥ सतीगुनिदेवलियेयागकरमिता ॥ १४ ॥ सोरता ॥ जामेनेवीगुनहे
हि ॥ ताकीस्फभावतेसोहोतही ॥ रत्तमोगुनिदेवसोहि ॥ पुत्रततादिकुंप्रेमधने ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ सात्वि
कतुमहोदेवतिहार ॥ अहिंसयागेंयज्ञविष्णुकरिष्याए ॥ पशुवधसंतुमयागन्नाचरही ॥ केवलअध
र्मसबअनुसरहि ॥ १६ ॥ रत्तमववातवयाज्ञकभयेउ ॥ आस्फरसंपदिनजनिवेदतेउ ॥ बुद्धिनावाभई
याकेसंगेतुमारि ॥ हिंसामययागतुमचैयेनिर्धारि ॥ १७ ॥ रत्तमोगुनिदेसनरजेह ॥ भैरवन्नादिदेवउ
पासहितेह ॥ निजगुनसमरत्तमोगुनिदेवा ॥ हिंसामययागमेंकरेताकिसेवा ॥ १८ ॥ देसराक्षसविषे
हरिजनतीउ ॥ हिंसामययागनकरतसीउ ॥ यागकीवैषभागाकरेसोलावे ॥ स्फुनीसबदेवअसनिगम
बतावे ॥ १९ ॥ सात्विकदेवतीस्फामेंसपावे ॥ काऊंसेनस्फनेहमदरेखामेंनवि ॥ याकारनत्रीहिक्षीर
घृतलाई ॥ यज्ञकरकूपशुहिंसाजामेंनांई ॥ २० ॥ तिनवरसकीअन्नतोकराई ॥ अन्ननामयाकीपुनिउ
गतनांई ॥ सनातनधर्महेजोहलोभविनां ॥ हमदयातपक्ततजानप्रविना ॥ देभविनक्षामससधिरत्तनेकु

वाफवे
॥११॥

अ-६

ब्रह्मचर्यं आदिरुपधर्मको एङ् ॥२१॥ **दोहा** ॥ याकुं तो उखं घहि ॥ धर्मज्ञो हि अग्रवंत ॥ सोनरपरहिन
 रकमें ॥ कहे निगमसबसंत ॥ २२ ॥ **चोपाई** ॥ स्कंदकहतसावरणिसो एङ् ॥ वेदरहस्यनितिकहि मुनिजे
 ङ् ॥ मुनिकीमहातमज्ञानतज्ञेहा ॥ मानभंगलियेनमानततेहा ॥ २३ ॥ **सोरवा** ॥ महाकृषीवचनकोकि
 न ॥ अनारदइंद्रादिकदेवने ॥ अधर्मसर्गभयेलिन ॥ वेदिनसेअंतरमेसबके ॥ २४ ॥ **चोपाई** ॥ अजन
 दिविजज्ञागकहेदेवा ॥ कृषीभयेउदासमुनिअसभेवा ॥ इतनेकमेंउपरिचरआये ॥ अतितेजवान
 इंद्रसत्वाकहाये ॥ २५ ॥ देखवस्फुकृषिबोलेमुसकाई ॥ अपनोसंसेअसदेगेमिताई ॥ जिनहजाहं
 यागकियेनृपहोई ॥ अरण्यकपंचरात्रविधिऊतदोई ॥ २६ ॥ पशुबधविनइक्षिणाऊतज्ञेहा ॥ प्रसक्ष
 देवअरचनतामेंतेहा ॥ अहिंसाधर्मरक्षासेविराता ॥ एकत्रियद्वतहरिभक्तसाक्षाता ॥ २७ ॥ ससप्र
 तिज्ञाधर्मकेधरता ॥ मिथ्यानबोलेवेदअनुसरता ॥ याविधसंकंतकरकृषीदेवा ॥ वस्फटिगजाईकि
 येप्रश्नकोभेवा ॥ २८ ॥ गजनछेदोतुमसंवायहरमारा ॥ तुमकहोसोहमसमनिरधारा ॥ पशुसेयजेअरु
 अनंसेसोउ ॥ वस्फुतुमकहोएकविआरिदोउ ॥ २९ ॥ **दोहा** ॥ स्कंदकहेकरजोरिके ॥ बोलेवस्फुसिरा

॥११॥

ई ॥ किनकीकेसोपक्षहे ॥ दोउकहोसमुकार्द ॥ ३० ॥ **चोपाई** ॥ यतनोधामसेंकविकेहमारा ॥ देवकीपर
 श्रुपक्षकहोतोतिहारा ॥ स्कंदकहेदेवमततानिबोलेएङ् ॥ पशुसेयतोपक्षवेदमेतेङ् ॥ ३१ ॥ देवकेमत
 असतसत्यकिना ॥ पक्षज्ञोनिकोरखिज्ञानप्रविना ॥ हिंसापरवेदकहिस्वर्गसेएङ् ॥ गिरेतकालपैवे
 भुमेतेङ् ॥ बज्रतविपतपायेभुमीमेंहोङ् ॥ स्मृतिनभुलेप्रभुसंबंधसेतोङ् ॥ ३२ ॥ **सोरवा** ॥ देखडरपाये
 सबदेव ॥ छोरदियेदेवनेपशुतबहि ॥ प्रागगयेततरवेव ॥ स्वरागमेदेवकृषीआश्रममें ॥ ३३ ॥ इतिश्री
 स्कंदपुराणोविष्णुखंडेश्रीवासुदेवमाहात्म्येश्रीसहजानंदस्वामिद्विष्यभुमानंदमुनिकृतभाषायां
 छितप्रोः **ध्यायः** ॥ ६ ॥ **दोहा** ॥ सप्तऊकेअध्यायमें ॥ वस्फुउपरिचरज्ञेहा ॥ पायेअक्षरधामकुं ॥ वरनन
 किनोतेङ् ॥ १ ॥ **चोपाई** ॥ सावरणिसोभुमिऊमेंजाई ॥ नितकृतनिंदतपुनिपिछताई ॥ इहदेवसिष्टादी
 कबडेजानि ॥ श्रीकृष्णमंत्रबोलतसदाचानी ॥ २ ॥ मानसीपुजाकरतपंचकाला ॥ भजतहरिकरिभक्ती
 विद्याला ॥ अप्रापतकालमेअचरंतसोई ॥ प्रसनभयेतिनमासेप्रभुजोई ॥ ३ ॥ विनतास्फुतनिजवाहनजा
 नि ॥ बोलेगरुडसेसारांगपानि ॥ मोरअग्यासेतुमजाहुंखगेवा ॥ वस्फुनपरजातमअश्रितएसा ॥ ४

वास्ते
॥ १३ ॥

अ-७

निगमकृषीकोऽप्रयमानकारि॥ भूतलवैवेऽर्थाऽन्तरिक्षचारि॥ कृषिकुंकिनपुनिपारसनतेऽ॥ भु
सेनिकासिकरवेचरतेऽ॥ ५ ॥ दोहा॥ स्कंदकहेऽप्रगार्शुकी॥ गरुडहिशिरचदाई॥ पारदोउऊटकी
उडके॥ येवेभुमेंवस्फताई॥ ६ ॥ चौपाई॥ वस्फकुंलियोनिजचांचमेंउवाई॥ उडुप्राकात्रामेंछोउदियोत
ई॥ तेहिक्षणामेंराजादेवरूपयाई॥ सरिरक्तस्वरवभोगेस्वर्गजाई॥ ७ ॥ कृषीवेदकोऽप्रयमानकराएऽ॥
मरवकरताकुंअज्ञोगपगतितेऽ॥ वाक्यदोषकुंसेंपुनिजेऽ॥ पायेवस्फधर्मकोजाननएऽ॥ तामेऽप्रा
एधनईशुकीना॥ अघताईदेवलोकपायोप्रविना॥ मनवांचितफरवदेवलोकमांई॥ भोगतवस्फ
ओरईशुकीनांई॥ ८ ॥ एकसमेंतेजवेमानमेंएऽ॥ अद्रिकाऽप्रप्यरानुतवैवेऽ॥ अछोद्ददिसवेमान
जुतनारी॥ ध्यामप्रतातकहेपितृकुमारि॥ प्रीनतवस्फनिजस्फताकरिष्यारि॥ ९ ॥ चंदलोकमेंअग्निश्च
नपित्रजेऽ॥ अप्रापइछाविनदेरवाननतेऽ॥ याकिमानसिस्फताअछोदेहा॥ निजतातनहिदेरेकबुते
हा॥ १० ॥ ताततनयाभावदोउकोजांनि॥ सापदेवनपितृबोलतबानि॥ अछोद्दाहीयगिवस्फकीकुमा
रि॥ वस्फतुमभुतलनरतनुधारि॥ ११ ॥ दोहा॥ अद्रिकावस्फतवनारि॥ मिनवपुहोयगतब॥ याविषेठ

॥ १३ ॥

मकुंमारि॥ कालिनामअछोदाकुंजन॥ ओररूपयोबितनाम॥ गिरिकाधरनारितोरखो॥ साकुविरज
रुपदाम॥ वनचरतपवउकिर॥ १२ ॥ चौपाई॥ पितृनापस्फनिवस्फअछोदांई॥ प्रार्थनाकियेदोउसिरना
ई॥ पित्रबोलेयाकेपरदयाआनि॥ होनारभयोइछाईनाकुंकिजांनि॥ सापमानेतुमंगलनिसानि॥ १३
अछाविंशकुंकेछापमांहि॥ हृतयज्ञराजाकीस्फततांई॥ सकलगुणसंपनपुनिहोई॥ भक्तसिरेमगिरि
चरखोई॥ १४ ॥ वस्फतुमयाविधकीदेहयाई॥ हरिप्रस्वोगेपंचात्रविधिलाई॥ ताकेशेषमेंपितृअरुदेवा
हमारिकोगेप्रजानुतसेवा॥ १५ ॥ पुनिदिग्ददेहयाईस्वर्गजाई॥ दिग्भोगभेभोगेतामिमुदयाई॥ जान्प्रो
गेवस्फपुनिगोलोकमांई॥ पुनिअछोदासेंबोलेपित्रआई॥ १६ ॥ भुपरकालिनामहोतुंकुमारि॥ मछ
रुपअद्रिकाविषेदेहधारि॥ परासरसेंतुमकमाकुंवारि॥ पावेगेआसस्फतभुक्तीमुक्तीकारि॥ १७ ॥
हा॥ ॥ स्कंदकहेप्रावर्णिमें॥ उषापअनुगृहदोउ॥ पित्रकीवस्फसेंभयो॥ बरनिदेरवान्प्रोसोउ॥ १८ ॥ दो
पाई॥ हृतयज्ञसेंदेहधरिभयोभुया॥ पूर्वमांईभक्तकर्मकोअनुंपा॥ पित्रदेवकर्मकरतपुनिसोई॥ इंदु
असंरअधनदेतसरवाजोई॥ १९ ॥ नानुनावाकरनलायोइंइजेऽ॥ विजमध्वजश्चेतद्विपकुंसेंतेऽ॥ सोध

वासुदे
॥ १३ ॥

अ- 9

जइंद्रदियोसखाकुंलार्इ ॥ ध्वनकुं देविजावेनात्रुपलार्इ ॥ २० ॥ दुर्लभभोगभुतलकेभोगी ॥ दिव्यदेहधरी
 पायेस्वर्गकुंजोगी ॥ घृवेपुमफलत्रोषजोहोई ॥ स्वर्गमेदिसभोगरूपभोगोसोई ॥ २१ ॥ तिब्रवेगगपुनिभ
 योउरमांई ॥ आसनलगायेमेरुशृंगपरजार्इ ॥ उरमेंद्रदेवकीधरिधाना ॥ देववपुकीकरिसागजोगवा
 ना ॥ २२ ॥ सूक्ष्मदेहेपायो रविकीधामा ॥ जाकुं पावहियोगिनेष्टिकनामा ॥ रवितेजसेंतारिसूक्ष्मदेहा
 चिदघनरूपभयो निरमलतेहा ॥ २३ ॥ भयोएकां तिसबवासनासागि ॥ रमापतिसदारहे प्रनुरागी ॥
 आतिवाहिकरविमंडलमेंदेवा ॥ इनुंनेयोचायेश्वेतडीपततखेवा ॥ २४ ॥ दोहा ॥ भुमिपरसोक्षिपह
 दिव्यप्रमायिकएऊ ॥ हरितनयाकुं पावही ॥ भक्तीअनमकरिजेऊ ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ ब्रह्मपुरवैकुं वगो
 लोकनेहा ॥ भक्तजोइछतपावनतेहा ॥ ताकीद्वारहेश्वेतक्षिपधामा ॥ जामेंहेश्वेतसबमुक्तनिष्कामा ॥
 २६ ॥ भक्तकुंइछजोधामकीहीहि ॥ ताकुं पावविश्वेतमुक्तजोसोहि ॥ श्वेतमुक्ततुल्यदिव्यदेहाएऊ ॥ या
 यकेवस्फगयो गोलोकतेऊ ॥ २७ ॥ सोरठा ॥ धर्मएकां तिसेंतेऊ ॥ नारायणपरब्रह्मभजहि ॥ मुक्तश्वेत
 होहितेऊ ॥ स्वतंतरगतिकुं पावहि सो ॥ २८ ॥ सावर्णिनेजोकिन ॥ व्रह्मकोउत्तरस्कंदकिये ॥ श्वेतडीप

॥ १३ ॥

लच्छनप्रविन ॥ एकांतिकोएहिधामसदा ॥ २९ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेविद्यमुखंडेश्रीवासुदेवमाहात्म्येश्री
 सहजानंदस्वामिनिष्कामभूषानंदभुमिक्ततभाषायांसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ दोहा ॥ अष्टकुंकेअध्यायमें ॥
 भयोइंद्रकुंन्याप ॥ लक्ष्मितीनलोकसेसागरमेंगहिआप ॥ १ ॥ चौपाई ॥ स्कंदकहोसबहिवाभययागा
 महाकृषीवचमेंदेवकुंनेसागा ॥ युनिहिंसाकेमेंभयैकहोगाथा ॥ देवकृषीराजविद्येएकसाथा ॥ २ ॥ स
 नातनरुधधर्मकोनासा ॥ केसेभयसंश्रयमेंतजानिदासा ॥ आगमनिगममेहारदजोउ ॥ स्कंदकहेतु
 मजानतहोसोउ ॥ ३ ॥ सावर्णिककुंकारजतोई ॥ कालमेंसबकीबुद्धिनावाहोई ॥ कामक्रीधलोभरसमान
 धारि ॥ जथार्थबोवनकोअप्रमानकारि ॥ ४ ॥ इतनेकिसतबुधिका लहरहि ॥ होयसयानेअनितिअ
 नुसरहि ॥ मानरुकोधकेववाअप्रतिहोई ॥ नरकचोरसिद्धवभोगहिसोई ॥ ५ ॥ कामक्रीधलोभमानवास
 नासागि ॥ कालकीजोरयाकिबुद्धिमेंनलागि ॥ एकांतधर्मकेआश्रयविनां ॥ संसृतिछुदेअसहमनांही
 चिना ॥ ६ ॥ दोहा ॥ सुनुमुनिहिंसायागकि ॥ कहुंप्रवरतितोय ॥ मोरतातनिवमुखसे ॥ संनिदेहमतो
 सोय ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ कहुंपुरातनइतिहासगई ॥ नारायणलक्ष्मीमाहात्म्यमेई ॥ महाकृषिकेअप्रपरा

वास्तु ७
॥ १४ ॥

अ. ८

धकियेनवसें ॥ इंद्रकीसतबुधिनान्नाभर्तवसें ॥ ८ ॥ शंकरः प्रसदुर्वासानपकारि ॥ पुष्यभङ्गनदीऽप्रा
येदृच्छाचारी ॥ तेहिथ्यलज्जायेतलकीडाकाजा ॥ मदकलानामलेहिसविसमाजा ॥ ९ ॥ विद्याधरफ्रमती
किजोनारि ॥ स्वर्गगाकमलमालाकरधारि ॥ कंचनवानप्रतिस्फुगंधिमान ॥ दुर्वासादेखभयेगुलता
ना ॥ १० ॥ देवांगनादीगन्धार्द्रमागोएह ॥ बावराभ्यांईनिजदेखायदेह ॥ कृषीचरनमेदेविसिरनाई ॥ ये
एयेमालाउरमाहातमपाई ॥ ११ ॥ सोरता ॥ प्रसनहोयमुनिएय ॥ उनमतनुंगामकरतचले ॥ आवतदे
खमगामोय ॥ इंद्रकुंनदिमेनावनलिये ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ गंधवन्नप्रसरातालस्वरबाई ॥ गावहिनसया
कीवातांबजाई ॥ छत्रचमररुक्तगजपरवारि ॥ रंभामुखदेखतनेनपसारि ॥ १३ ॥ निजहीनदेखतइंद्रकुं
जोई ॥ अत्रीसुतमालदेतरानिहोई ॥ अर्धमसर्गइंद्रकुंमेंऽप्राई ॥ कृषीअप्रमानसेरत्नोउरछाई ॥ १४
याकारनमालागजकुंभभारि ॥ गतनिजसुंदयहिभुमिपरडारि ॥ देखतकृषीमालापगजुंसेरोरि ॥
सुगंधिसुमनकिडारदियेतोरि ॥ १५ ॥ क्रोधसेकियेजाललोचनविनाज ॥ बरसनलागीजामेकुं
नान्नत्वाला ॥ इंद्रकुंकहेकामिलेपदमंद ॥ अनन्नइष्टहोमूदस्वच्छंद ॥ दियेहप्रतीकुंस्त्रनशी

॥ १४ ॥

भाधामा ॥ अनादरकियेशिरचगाइनदामा ॥ तुमजेसेमतकेमेंशिक्षकराका ॥ रज्जसेभयोअंधा
येविवेका ॥ १७ ॥ दोह ॥ राजानुमत्रिलोककी ॥ भयीजाहिप्रताप ॥ सोलक्ष्मीत्रिलोकसे ॥ गिरीसिंधु
मेंप्राप ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ कठोरचवनवज्जपातसमजानी ॥ गिरेततकालगजकुंसेनिर्मानि ॥ कृषीच
रनमेंपरेसिरनाई ॥ थरथरकंपेकायमुखमानुवाई ॥ १९ ॥ करतघनामबोलेदासपरस्वामी ॥ कर
कुंकपातुमअंतरजामि ॥ इंद्रसेबोलेसुमिअंखियांचदाई ॥ नहिगौतमजसदागसंघचाई ॥ २० ॥ क्रो
धभुषननामदुरवासानेज ॥ हमअपानेप्रापअवपिछानतेज ॥ ओरकृषीधनलियुंजसतवभन
हि ॥ निःपेहिमेतीकुंकिदतुल्यगनहि ॥ २१ ॥ सोरता ॥ बंकेदृगभ्रूहनरातोई ॥ पापिपुरुषमोसेनांही
उरे ॥ एसीब्रह्मांडभेकोई ॥ देखेनहिदमअखियनसें ॥ २२ ॥ इतिश्रीकंदपुराणोविष्णुखंडेश्रीवासु
देवमाहात्म्येश्रीसहजानंदस्वामिनिष्कामभुषनंदमुनिकृतभाषायांअष्टितमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ होहा
पुनिहिसामययागकी ॥ चलिघवरतिनेज ॥ नचमेअध्यामेंलिवे ॥ आपतकालतेज ॥ १ ॥ चौपाई ॥
स्कंदकहेअसविधइंद्रकुंदिना ॥ सापकीकारनकजुमेंपविना ॥ कालजुंसेधर्महोतहेनासा ॥ सो

वासु
॥ १५ ॥

अ. ८

कालवेगवशाभयेदुरवासा ॥ ३ ॥ होवनहारमिथ्याकाङ्गसेनहोहि ॥ इतनोकहिगयेकैलासमेंसोहि ॥
त्रिलोकलक्ष्मीसिंधुमेंभईलिना ॥ अपसरइंद्रकुंसागकरदिना ॥ ३ ॥ सौचदयानपससयागनेहु
सतधर्मकृधिसिधिप्रष्टतेहु ॥ इंद्रदेहबलनाशाभयोतकाला ॥ गजादिवादनस्वर्णभूषणमाह्ला
ध ॥ रत्नमणिधातुपात्रनरहेउ ॥ श्लोषधिअन्नरसचिकासगयेउ ॥ महिषिधेनुस्तनविषेपयनेहु ॥
अल्पकालमेंनाशाभयेतेहु ॥ ५ ॥ कुबेरगोहविधिनवगयेनाना ॥ इंद्रनुतदेवभयेतपसिसमाना ॥ त्रि
लोकिवैभवसबनाशापाये ॥ दनुजमनुष्यदेवदरिद्रपीडये ॥ ६ ॥ चंद्रसागामेंगयेजलहोई ॥ नाशापा
येसबधाम्बिजसोई ॥ जलदनवखतबहुकालवारि ॥ अनअनतनसबकरेपोकारि ॥ ७ ॥ निर्ब
लभयेअतिशुधाङ्गसेक्षांमा ॥ गिरिवनमेंवसेछोडियुरगामा ॥ १३ ॥ धाम्माकुललगेखानपशुमारी
ग्रामअज्ञादिकभृगवनचारि ॥ ८ ॥ कचेपकेमांसखानलगेएहा ॥ हरितनविनअोरतनतेजेहा ॥
धर्मपालकतोमुनिविद्यावाना ॥ मरुलगेतेउमांसनवाना ॥ ९ ॥ अनगानवृतधरधर्मकुंजोई ॥ मनु
अरुक्रुषीसबएकगहोई ॥ वेदमेंसुअपसधर्मनिकासी ॥ मांससेरखोदेहफेरनहिआसी ॥ १० ॥

पीडापत्रिका

॥ १५ ॥

धर्मसाधनरुपदुर्लभदेहा ॥ मनुष्यकेनांहिमिलेपुनितेहा ॥ दोहा ॥ मुनिहोहियाकुलमुखसे ॥ मंत्रके
जाननहार ॥ अहिंसअर्थतोवेदकी ॥ दियोहिसापरडार ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ अज्ञबितनाहीकहेछागजा
नी ॥ हमसबखवेमांसतुममानो ॥ वेदकहेहिसासोदीयरुपनाई ॥ देवलियेहनोपुष्टपशुलाई ॥ १२ ॥ नि
वेददेवादिकुंधरिपुनियाकुं ॥ आपलियुं पशुहिंमानचाहुं ॥ वृद्धचचनमांनिभूपकृषीदेवा ॥ यागक
रतभयेहिसामयाएवा ॥ १३ ॥ सोरठा ॥ भक्तएकांतिकनेहुं ॥ तेहिबिनयागसबकरखलगे ॥ गोअश्वनरमे
धतेहुं ॥ करकेमांससबपावतभये ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ धनयावनलियेकीउयागकरहि ॥ त्रियसूतवृत्तलि
येकीअनुसरहि ॥ महयागकरनेकुंस्मृथनहोई ॥ पितृआहुलियेपशुमारिसोई ॥ १५ ॥ ज्ञातिअरुवि
प्रकुंजिमायकेपावे ॥ सरितसागरतिरपेरहावे ॥ जालसेमिनमारकेसोईपावे ॥ निजगुरुआदिकीउबड
घरुआवे ॥ १६ ॥ तिनकेलियेगोआदिपशुमारि ॥ करेमितमानिताकीमांससुधादि ॥ सजातिविवाहनि
मनरहेउ ॥ धनधामविनसबभ्रष्टभयेउ ॥ १७ ॥ विप्रछत्रिकमाछत्रिविप्रकुंकी ॥ परनतभयेवंशावृष्टी
लियेचुकी ॥ दोहा ॥ अैसेआपतकालमें ॥ हिंसामयभयेयाग ॥ लक्ष्मीकेपिछेगयो ॥ धर्मजगतकुसाग १८

चोपाई ॥ अर्धमस्तिनलोकमेरहेछाई ॥ बुधिवंतजसेनिकसतनाई ॥ बडुवायकभयेदरिद्रिकेगेडु ॥ लो
कमेमावतनविस्तारतेडु ॥ १६ ॥ तिनमेविद्यावानभयेविपन्नोउ ॥ धर्मआपतमुखमानतसोउ ॥ ग्रंथ
करतहिंसाप्रधानहेतामे ॥ परंपराचलिआतहिंसातामे ॥ १७ ॥ प्रथमत्रेतामेभयेधर्मकोनासा ॥ वेदितसे
यागकुंसेहिंसाभासा ॥ अहिंसधर्मसतयुगमेभयेउ ॥ बडुकालपिछेपायोडुप्रयुनितेडु ॥ ११ ॥ विश्वजि
तइडुपुनिदेवसहीना ॥ वास्तुदेवआगाधिसंपतलिता ॥ हरिक्रपासेपुनिसतधर्मतेडु ॥ पूर्वगार्दवदेलो
कमेतेडु ॥ १३ ॥ रसलोभसेताकीबुधिनासयाई ॥ ज्ञेसेनृपमुनिदेवजगमांई ॥ मानेआपतधर्मपूर्वकी
माई ॥ १४ ॥ सोरहा ॥ जितकामादिजनतेडु ॥ भक्ताकांतिजातलितेमे ॥ ज्ञेसेआपतकालेतेडु ॥ धर्मन
छोडेअबकेसेतते ॥ १५ ॥ सावर्णितोतुमकिन ॥ यागमेहिंसाकबडुसेभये ॥ याकीउतरहमहीन ॥ आप
तकालेआदिकल्पकुंसे ॥ १५ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेविष्णुखंडेश्रीवास्तुदेवमाहात्म्येश्रीसहजानंदस्वा
मिनिष्णुभुमानंदमुनिवृत्तभाक्श्यांनवप्रोःध्यायः ॥ ६ ॥ दोहा ॥ दशमेमेंसबदेवने ॥ उर्धवाकुतपकीन
वास्तुदेवघसनभये ॥ ताहिकुंदरशनदिन ॥ १ ॥ चोपाई ॥ स्कंदकहोपुनिकेसेडुपावा ॥ लक्ष्मीजोतुम ॥ १६ ॥

मोसेकहिबतावा ॥ लिनभयेथेसागरमेंनाथा ॥ धर्मसहितआईकहोअसगाथा ॥ १ ॥ सावर्णिककुं
वतियांमेतीई ॥ लक्ष्मिपायेवाकोसाधनसीई ॥ निरधनइंद्रकीदैसधनहीना ॥ छत्रचामरइंद्रासनछिनलि
ना ॥ २ ॥ गिरिवनकुंजमेंभटकहिजाई ॥ दिगपालवरुणाआदिडुखयाई ॥ पक्षीपशुमांसकोकरेआहारा
वल्कलचरमवसनअंगधारा ॥ ४ ॥ देवदानवनरनागसमवेशा ॥ मटिभाजनश्रीचआचारनलेशा ॥ रंक
भयेस्फरपित्राचनिनारि ॥ बारवसतोडिवरसेनवारि ॥ ५ ॥ पुत्रिकबुबरसातहोतकबुनांही ॥ दरिद्रभयेडु
विवर्षशतताही ॥ कठिनप्रारब्धसेमरतनकोउ ॥ दुखपावेनरककीटसमसोउ ॥ ६ ॥ धनलियेयमाकरे
सबतेहा ॥ कोकुंनपावतश्रीकुंनितगेहा ॥ दोहा ॥ सहस्रवरणपिछेगये ॥ मेरुपरसबस्फर ॥ दुर्वासकेश्रा
पसे ॥ विनवसनमुखनुर ॥ ७ ॥ चोपाई ॥ बोलेविधिसंस्करेश्रासिनाई ॥ नितडुखतानकुंकिनसबगाई ॥ ब्र
ह्माभवहोउमिलिइंद्रकुंकीना ॥ हमनमेदेडुवतोरविष्णुविना ॥ ८ ॥ देवकृतब्रह्माक्षिरसिंधुआवा ॥ आरा
धनकरिणकविष्णुरिखावा ॥ क्षीरसागरकेउतरत्रटआई ॥ भुजहोउउंचपावराकटिकाई ॥ ९ ॥ अनशनव्रत
जुतमनवशालाई ॥ करततपईश्रधरिउरमाई ॥ सतवरषअसविधतपकीना ॥ घसनभयेप्रभुजानीडुखिहीना ॥ १७

वास्व
॥ १७ ॥

अ. १७

ब्रह्मविततपसिनदेवतनेऽ॥ अर्कलक्षतेननुतन्नायेतेऽ॥ तेनअंवारसवदेखतहिदेवा॥ अनुपथ्येत
घनअकलअभेवा॥ ११॥ ब्रह्माभवतेतमेरसापतिनेर्ऽ॥ घनसमानचङ्गभुजधरसोर्ऽ॥ कमलगदाशंख
चक्ररहेधारि॥ किरिटकुंडलकटिमेखलाहारि॥ १२॥ दिव्यमुरनिपितावस्तनेऽ॥ ब्रह्माभवकियेदेव
ततेऽ॥ हरिश्छासेदेवदत्रीपाये॥ महामुदपाईसवदेवतनाये॥ १३॥ दोहा॥ रंकायकेमाधन॥ हरस
जुतसुहोर्ऽ॥ स्तवनकरतरकजोरिके॥ भक्तीनुतस्फरसीर्ऽ॥ १४॥ चोपाई॥ अनिरुधप्रद्युमनवास्वदेव
स्वामी॥ संकरषणभगवाननमामि॥ ओंकारब्रह्महोर्ऽविष्टमविधिनिवा॥ सर्गपोषणनाकारतहेती
वा॥ १५॥ निरगुणरूपलोचनलाभदाई॥ आश्रितकेदेतसंकटमिदाई॥ स्वन्तरर्नाकेवावनमामि॥ का
लप्रायामीहभक्तस्वरधामी॥ १६॥ सहानंदरूपसतधर्मकेधरता॥ किरतीसंजनभवपारकरता॥ सुंदर
नामघनतुल्यदिअरुपा॥ नांखचक्रगदाकमलअनुपा॥ १७॥ चतुस्रजुजंमेतुमधारि॥ धर्मगोविप्र
स्फुररक्षाकारि॥ वरवालायकवरईछीतद्यत॥ शरणागतकुंजगक्रगपाता॥ १८॥ आगामनिगमजा
ननमोनमामि॥ अक्षरधामिदिव्यमूर्तिहोस्वामि॥ वाणीमनहरहिमहिमातिहाय॥ अक्षररूपअक्षरअक्ष॥ १७ ॥

रसेंआरा॥ १६॥ आश्रितजनकुंएकस्वरदाता॥ शरनप्र्रायेतोरज्ञानोत्तनताता॥ प्रापतकालसेअ
तिकष्टपावा॥ यादवाअप्राईअनपानविनखावा॥ २०॥ भक्ततिहारोदुरवासानामंनेऽ॥ अप्रमानक
रिहमकीपायेतेऽ॥ अनपानबसनस्थानविनजोर्ऽ॥ लक्ष्मीसहितछोडगयेधर्मसोर्ऽ॥ २१॥ करजुरक्षा
विप्रवापसंताता॥ धर्मअरुदेवहेतोरिविख्याता॥ कष्टहमारोसबदेऽमिदाई॥ करजुंस्फुलिप्रभोरुवर
किन्माई॥ २२॥ दोहा॥ स्कंदकहेसावर्णिसे॥ देवस्तवनतीकीन॥ संनिप्रभुप्रसनहोयके॥ घनसमबोले
प्रविना॥ २३॥ चोपाई॥ प्रभुकहेसनोर्ऽद्रादिकदेवा॥ महानकोपेकष्टपायेअभेवा॥ ताकीनिवृतीके
उपायवतान॥ करजुंमथनतुमसागरजाउ॥ २४॥ प्रीषधिताईसवडागेसिंधुमाई॥ करजुवास्वकीने
त्रमंदररवाई॥ दत्तजसेहेतकरकेसबस्फरा॥ सहायकरेहमहोयहनुए॥ २५॥ सिंधुमथनसेअमृतरमा
आई॥ हेवेगेदृगभरिस्फरस्फभदाई॥ हमसेविमुखजोदनुजकहाई॥ कलेबामिलेगेइनकुंयामांई॥ २६॥
सोरवा॥ स्कंदकेप्रभुअसागथ॥ कसिस्फरसेअगोचरभये॥ देवपरेपावतोरिहाथ॥ उपायकरनलगे
प्रभुकही॥ २७॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेविष्टमुरवंदश्रीवास्वदेवमाहात्म्येश्रीसहजानंदस्वामीत्रिष्यभुमान

दमुभिकृतभाषायां द्वाभ्यां ध्यायः ॥ १० ॥ दोहा ॥ अमृतकेलिये कियो ॥ सागरमंथनजे ॥ एकादश
 में निकसे ॥ ऊरपिये विवते ॥ १ ॥ चौपाई ॥ स्कं दसावर्णिसेकहे गाथाए ॥ अमररूपसरमेलापकिये
 ते ॥ केलादा विवन्नहागयेसतलोका ॥ सातलदेवगये होय प्रवीका ॥ २ ॥ अस्फुरकुंडू फललाभ
 देखाई ॥ किये मेलापनिति कृतीसे लाई ॥ देव अस्फुरक्षीरसागरतीरा ॥ ओषधिलाइ डारतस्फुरविरा ॥ वृ
 मं दरदिगदेवदनुजनाई ॥ सिंधुपरलावनइ छतउवाई ॥ रुद्रहजारजोजनभूमिमांई ॥ निकासनसमर्थहो
 तनतांई ॥ ४ ॥ स्तवनकिये हरिकोस्फुरनबही ॥ पवायेसं कर्षणप्रभुतबहि ॥ मंदारगिरिउवावनकाजा ॥
 आयेतुरतते हित्यलअहीराजा ॥ ५ ॥ एककुंकसे गिरिदिये उवाई ॥ युगलयोजनफेंकेतुलकिमांई ॥ स्फु
 रअस्फुरदेखगिरिमुदपाये ॥ करि कुलाहलउठावनधाये ॥ ६ ॥ भोगलयुल्यभुजअतिबलवान ॥ उवाय
 चलिनहिसके देवदान ॥ फकेवदनखेदकतस्फुरजोई ॥ गरुडकुआगपाकरतयुमुसोई ॥ ७ ॥ निजबलसे
 लेतब्रह्मांडउवाई ॥ मनतुल्यवेगसे आयेचलाई ॥ चंचेउगयगिरिडारिसिंधुतिरा ॥ जैसेपकरजावेपिलुफ
 लकिरा ॥ ८ ॥ सोरठा ॥ आश्चर्यदेखमुदपाये ॥ देवदानवसुकतकपपके ॥ वास्तुकियायेबोलाय ॥ अमृत

नभागादेवनकरके ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ सागरमंथनप्रायेसबधाई ॥ ताहिसेबोलतसिंधुदिगन्नाई ॥ स्फुरअ
 स्फुरकुंनुवास्तुकीनागा ॥ मद्योगेंतबमोयदेकूंस्फुधाभागा ॥ १० ॥ सबमिलिकहेयाभेभागहेतीरा ॥ ओ
 षधिडारसिंधुमेंकरितीरा ॥ मंदारगिरिसेनागलयटाई ॥ ध्यानसेदेवलियेहरिकुंबोलाई ॥ ११ ॥ आयेअंत
 रत्तामिकुंदेवजोई ॥ पकरेफणासबहरिमतसोई ॥ देवनकुंनिजपक्षजनाई ॥ देवदिगवाटेप्रभुजबनाई
 १२ ॥ बोलेदनुजपचंडकरकोथा ॥ विद्यारूपवयसेहमबउजोथा ॥ अमंगलनागापुच्छकहाई ॥ याकुंपकरे
 असेमुखनाई ॥ १३ ॥ दनुजकुंदियेफणासुसकाई ॥ देवसहितप्रभुयहेपुच्छधाई ॥ दोहा ॥ अहि वि
 षदावदहनसे ॥ किनअमरउधार ॥ असप्रभुचरित्रनजानहि ॥ दानवमूदगमार ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ कंच
 नगिरिशिखरऊतराजे ॥ किनखडोदेवदैतसमाने ॥ चर्मसेंकरकसिसबधाये ॥ करकुलाहलगिरि
 सिंधुमेंलाये ॥ १५ ॥ योजनबाईशहजारउंचाए ॥ गरुडभारसेंकिचविषेते ॥ देवदानवभयमुखमलि
 ना ॥ स्तवनकरतदेवहोयसबदीना ॥ १६ ॥ लक्षयोजनभयेकुरमआकार ॥ उवायगिरिनिजपितपरा
 धारा ॥ भक्तवसलकेचरितअसतोई ॥ फुलेवनमहामुदकतहोई ॥ १७ ॥ देवदनुजवाटेकछपरदोउ ॥

चाक्रं
॥ १८६ ॥

अ- ११

॥ १८६ ॥

मंथहि सागर निरहयसोउ ॥ फिरत गिरिसें गिरेबं कुडुमा ॥ घसायदावानलभयोनुतधुमा ॥ १८ ॥ गिरिपर
 जलेसिंदादीं अपारा ॥ सिंधुमेपिसायेनलचरसागर ॥ मंथननादमानुं घनप्रतिगात्रे ॥ योप्रच्छंदादश
 दिवामेवाने ॥ १९ ॥ देवदानवतानतकरिजोरा ॥ नागमुखसें गिरेविषकजोरा ॥ विषत्वाला नुतमारफुत
 काए ॥ देसभयेहेमानुंबुकेअंगाए ॥ २० ॥ लटकनलगेअदिफनाहतारी ॥ विषअनलवषतक्षयका
 रि ॥ तबप्रभुपेरेसंकर्यणनेऊ ॥ पकरेफनाभुतहतारसेंतेऊ ॥ २१ ॥ दोहा ॥ सहस्रवर्षसिंधुमथ्ये ॥ भ
 योहलाहलकेरे ॥ दशोदिशदीउतभये ॥ लोकदहतसबधरे ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ देवदनुजदिगकुतावानअ
 ई ॥ छोउमथनसबगयेउपलाई ॥ अजअरुदेवप्रजापतिजेहा ॥ विषपांनकरशिबकहेतेहा ॥ २३ ॥ प्र
 भुकहेदेवमेंसेछनुमशिवा ॥ सिंधुसेंप्रथमभयेचलोपिवा ॥ देवकेकष्टदेरवकेभूतनाथ ॥ हरिअगाप
 सेलेतविषनिनहाथा ॥ २४ ॥ योगकलासेकरुणा निधिआऊ ॥ पियेततकालककेकंउमेतेऊ ॥ निलकं
 वनामसंकरविरयाता ॥ करऊंसेविषबिंडुभयेभुपाता ॥ २५ ॥ सोरठा ॥ विषकनिकाकरपांन ॥ अही
 विच्छादिरेभये ॥ ओषधिभयेकरवान ॥ श्रीगडियावच्छनागअादी ॥ २६ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेवि

ष्मुखंश्रीवासुदेवमाहात्म्ये श्रीसहजानंदस्वामीशिष्यभुमानंदमुनिऋतभाषायोराकादशोऽध्यायः ॥
 ११ ॥ दोहा ॥ छादशमेअमृतलिये ॥ सागरमंथनकिन ॥ चोदरस्वतिनमेंभये ॥ सोसबबादिदिन ॥ १ ॥ चो
 पाई ॥ स्कंदकहेकरुपफुतमुदपाई ॥ सहस्रवर्षपुनिमंथतअाई ॥ कजुननिकसेसिंधुसेजबही ॥ उ
 दासहोयदेवदनुजतबही ॥ २ ॥ शिथलहोईसबछोरेनिस्वासा ॥ वासुकिनागतजेतिवनअासा ॥ मंदर
 गिरिलीगडोवनजबही ॥ सबउछाह्विनदेवप्रेरतबही ॥ ३ ॥ हरिअगापसेप्रब्रुमनअाई ॥ प्रवेवाकर
 बलप्रेरेसबमांई ॥ पकरेमंदरअनिरुधथाई ॥ दुसरेगिरिसमरुपफुहाई ॥ ४ ॥ दोहा ॥ देवदनुजबलपा
 यके ॥ मंथहिपूर्वमांई ॥ सहनप्रभुप्रतापसें ॥ वेगसहितमुदपाई ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ मंथनसोहेसमजोस्क
 रताना ॥ गिरेसिंधुमेंसओषधिनाना ॥ भयेसिंधुविषेकलाऊकोधामा ॥ ओषधिअन्नपतिफधाक
 रनामा ॥ ६ ॥ शसिसमवानपुनिकामधेनुजाता ॥ सकलगोवनकिरेविविरयाता ॥ पुनिहयदेवभये
 श्वेतवारिरा ॥ श्वेतचतुर्हंतत्रैरावतधिरा ॥ ७ ॥ सबतरुदेवपुनिभयोपारिजाता ॥ कौस्तभमणिभयोर्ल
 मेविरयाता ॥ रूपलावनधामअअराभयेउ ॥ सकलकेफदेविस्तराभइतेउ ॥ ८ ॥ वासुसबनदेवसा

वास्को
॥२०॥

अ- १२

गधनुना ॥ पांचनमवांखवानित्रभूषा ॥ **सोपवा ॥** अणपसराचंदपारिजात ॥ सूर्यमगहोईस्वसागये ॥ अशु
 मदिरासाक्षात ॥ दैसपकरायेवेगकुंसे ॥ ८ ॥ **चोपाई ॥** इंद्राएगवतलियेप्रभुदिना ॥ कौस्तभचापवांख
 प्रभुलियेतिना ॥ कामधैनुकृषीलियेयागकजा ॥ सिंधुमथ्यतपुनिमिलकसमाजा ॥ १० ॥ सिंधुसेपुनी
 भयेश्रीसाक्षाता ॥ आनंदबटायविलोकिनगमाता ॥ ताकुंलेवनस्तरनरुप्रस्तरा ॥ रमाप्रतायेसबवाढ
 रहेडुए ॥ ११ ॥ करकमलदेखईनेजाने ॥ प्रगटभयेतगमाताअसंज्ञाने ॥ आनंदपायेभवब्रह्मास्त्रेसा
 श्रीदृगकुंसेभयेनौतमवेवा ॥ १२ ॥ नरतनुधरबोलेअंबुधिआई ॥ मोरकनाहेलियेगोदउगई ॥ हेम
 आसनपरबैवेपुनिजाई ॥ सिंधुमथ्यतस्तरुफधालियेधाई ॥ १३ ॥ सिंधुसेअमृतनिकसेनजबही ॥ भये
 मनभंगदेवदनुजतबहि ॥ स्फुकेबदनअतिआतुरजोई ॥ करुणानिधिउवेमथ्यनकुंसोई ॥ १४ ॥ रत्नक
 चिसेंपितांबरकळदोउ ॥ तेतकरतकटियरकसेसोउ ॥ पकखीअहिमध्येधरिभुजचोउ ॥ द्विभुजपुल
 दिगफलादिगहोउ ॥ १५ ॥ देवदनुजकुंभयेवायकारि ॥ देतआनंदनिजनेनयसारि ॥ सिंधुमथ्यतसो
 भाअजुतधारि ॥ देवतकृषीब्रह्मावेमानवारि ॥ शिकसेसिंधुसंधंनवनंतरिजिऊ ॥ अमृतकुंभजतगो ॥ २० ॥

॥ २० ॥

रत्नंगतेऊ ॥ १६ ॥ **सोखा ॥** घृतादिरससबतेऊ ॥ ताहिकीसारसबेयामिहे ॥ अमृतग्रहिकरतेऊ ॥ रमा
 समियेसोनायखंडे ॥ १७ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेविष्णुखंडेश्रीवासुदेवमाहात्म्येश्रीसहजानंदस्वामिश्री
 ष्यभूमानंदमुनिव्रतभाष्यायांछादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ **दोहा ॥** अमृतपायेदेवकुं ॥ धरिहरिमोहनिरु
 त्रयोदशेअध्यायमें ॥ लिखेअसकथाअनुप ॥ १ ॥ **चोपाई ॥** स्कंदकहेदेवतदनुजदेवा ॥ धनवंतरि
 रमादिगततवेवा ॥ करकंचनकुंभसुधानुतधारि ॥ देखदनुजछिनगयेनिग्राचारि ॥ २ ॥ तामहिबल
 वंतजोदनुजा ॥ छिनगयेनिबलसेकरुपपतनुजा ॥ पुनिदुर्बलताकुंनितिबचलाई ॥ कहेअसभांती
 मतकरेअमाई ॥ ३ ॥ धर्महीईअधर्मनहिकरना ॥ देवकुंपायपिछेआपहरना ॥ याकीवचअनादरक
 रितेहा ॥ पिवनलियेगयेडरसबएहा ॥ ४ ॥ करनलगतानवेचसबसेऊ ॥ पहिलेहमपिवेहमकहेएऊ ॥
 पिवनअवकावापावतनकोउ ॥ लरतभयेपरस्परसोउ ॥ ५ ॥ दैससैरुधालेवनदेवजोउ ॥ समर्थनहि
 गयेप्रभुदिगसोउ ॥ पाहिपाहिदेवकहतपोकारि ॥ दनुजलेगयेसबसुधाहमारि ॥ पानकरेगेतबअमृ
 तअस्तरा ॥ हालहमारतबहोयगेबुरा ॥ ६ ॥ **दोहा ॥** स्कंदकहेप्रभुदेवकि ॥ अरतिअंतरधार ॥ बो

वास्तु
॥ २१ ॥

अ-१३

लेप्रभुकुलमतउगे ॥ करिंजितहारिसार ॥ १ ॥ **चोपाई ॥** सकललोकमोहनरूपधारि ॥ दैसनजिककि
येकंडुकविहारि ॥ देवदनुजमोहनिमोहपाये ॥ छोरिनकरबोलेबानिदिगन्नाये ॥ ८ ॥ अमृतकुंभ
सलेकुंभारि ॥ बांटेदेहमसबतीरअगपाकारि ॥ इतनेवचनकहिसुधाघटदिना ॥ बिनइछतताकुंभ
मतिहिना ॥ ९ ॥ मोहनिकहेखेरिणिहमनारि ॥ मोरविश्यासनकरेअम्पाकारि ॥ हमारिइछाकुंसेपाये
हमबांदि ॥ मूढकहेपाकुंकछुनांहिआंटी ॥ १० ॥ मोहनिकुंनेतबअपपादीनि ॥ फरअफरनागपं
क्रित्तोकीनि ॥ मोहनिकायेतबदुरसेंचलाई ॥ देवदिगावादेहेमसिंहासनाई ॥ ११ ॥ अमृतघटनिजस
मिपेधारि ॥ देवतइतउतहगनपसारि ॥ दारचरित्रकियेउक्षणएक ॥ वाटेनिस्त्रेहिमानुक्ततविवेका
१३ ॥ **सोरठा ॥** देवपंक्तीदिगजोई ॥ दैसमिलिसंकाकरतभये ॥ देवयक्षकिजबहोई ॥ अमृतयाकुअ
धिकपायेगे ॥ १४ ॥ **चोपाई ॥** अफरमोहनिदिगधिरेआई ॥ युनिघटलेभगेहगनबंचाई ॥ जायएको
तपिवनलगेसोउ ॥ तेहिक्षणप्रायेनरनाएयणदोउ ॥ १५ ॥ अफरकुरेकहेनरआई ॥ नारायण
घटनोरसेछिनाई ॥ दियेप्रभुघटमोहनिसंजाई ॥ नरहननप्रायेअफरजोधाई ॥ १६ ॥ अरिखलअ

॥ २१ ॥

मरनरदानवनेहा ॥ नरकुंनजितहिमिलसबतेहा ॥ तबदेवपंक्तीमेंमोहनिआई ॥ अमृतपावतशि
घचलाई ॥ १७ ॥ रविदादाविचराकुंबैवेछुपाई ॥ मोहनियानेकुंअमृतआई ॥ हगसानकीयेफरचंदने
जबही ॥ संभरिचक्रआईवडेतबही ॥ १८ ॥ अमृतकृतदियेसिरउडाई ॥ पुरुषभयेप्रभुतेहिक्षणमांई ॥
गिरिश्रंगतुसभयेगिरततकाला ॥ त्रिलोकगिलेगेजनुअतिविकाला ॥ १९ ॥ **देहा ॥** सबजनकिसं
तिलिये ॥ प्रभुनेस्थापनकीन ॥ चंदसूर्यसमग्रहमें ॥ राकुंकरदिन ॥ २० ॥ **चोपाई ॥** अमृतपानसेदे
वबलपाई ॥ लरतअफरसेंप्रभुक्तजाई ॥ सिंधुतदक्तधभयोअफरसेभारि ॥ हरिबलसेंदेवअमृतअ
हारि ॥ २१ ॥ देवनरमिलकेकरतलराई ॥ दनुजगायेसबरसातलधार् ॥ फरअफरसभयेतेहिवारा ॥ श्री
दिगन्नायेसबदेवकृतदारा ॥ २२ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेविष्टपुरवंशेश्रीवास्तुदेवमाहात्मेश्रीसहजामंद
स्तामिशिष्यभूप्रामांदसुनिकृतभाषायांत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ **देहा ॥** चतुर्दशोनारायण ॥ लक्ष्मीकी
विवाह ॥ उच्चवजोवरननकियो ॥ संनिभयेसबउछाह ॥ १ ॥ **चोपाई ॥** स्कंदमावर्णिसेदिनेउगमाई ॥ फर
रमाविवाहमेंप्रायेसबतोई ॥ शंभुपत्रेशअतमनुकवीनेकु ॥ रुद्रअर्कवसंगंधरवतेकु ॥ २ ॥ सिधचा

वासुदे
॥२३॥

अ-१४

रणासाध्यवायुदिगपाला ॥ अश्विनिकुमारविश्वदेवदंडबाला ॥ धर्मअनलगरुडगणादेवा ॥ किनरत्रि
 षण्प्रादिनागबहुभेवा ॥ ३ ॥ अमरदारुसवउमाअतनारि ॥ सरस्वतिभुवाचिनिवावायुहारि ॥ गोरीव
 णासंज्ञासूर्यकिनेउ ॥ कृष्णकबेरखाहाअग्निकिनेउ ॥ ४ ॥ रोहिणिचंद्रधुमर्णायमकुंकि ॥ अद्रितिक
 नृपपकीअरार्धर्मनुकि ॥ नांडीलिअरुंधतीअनसूयानिकु ॥ पतित्रताकृषीकीलोपामुद्रुतेकु ॥ ५ ॥ गंगा
 यमुनारंवेसासरस्वतितापि ॥ चंद्रभागाविपावादेविकापि ॥ सरयुगोदावरिकौशिकीकविरि ॥ ह्रदमावेली
 भिमरथीताम्रपेरि ॥ ६ ॥ निर्विधासूरसाकृतमालानेहा ॥ वितस्तापयोद्यमीचर्मणचतितेहा ॥ मोरवा ॥ वि
 श्वानामनदिआई ॥ अप्सरागरुवशिरादिसब ॥ मेनकातिलोतमासुहाई ॥ रंभाघृताचिचिश्वाचिआये
 ७ ॥ चीपाई ॥ गोलोकवेकुंगपारसदआये ॥ अष्टसिधिमणिमादिकहाये ॥ नवनिधिम्रायेवंगवपद्या
 दिनेउ ॥ चंद्रहरततमनिवाकीसेउ ॥ ८ ॥ श्रीकोअभिषेककरनकाजा ॥ अजअप्रायासेआयेसुरराजा
 मंडपरचायेविश्वकर्माबोलाई ॥ तंभरलकजामेंहजारसुहाई ॥ ९ ॥ अनुपउलेचरवेविधिनाना ॥ कद
 लिकसुमुकुंसेसुहाना ॥ बहुविधरंगसेमनोहराऊ ॥ कोटिरत्नदियपंक्तीनुतेकु ॥ १० ॥ कुलही ॥

॥२३॥

तेरनमोतनकेहार ॥ राजहिरलजुतमंडपहार ॥ तामेंसिंहासनरत्नकुंकोराजे ॥ रमाबैरायेगीतबाजो
 बाजे ॥ ११ ॥ महाकृषीश्रीकोअभिषेककरही ॥ चतुरसागरजलदिगतहरी ॥ पुंडरिकवामनकुमुदं
 जेहा ॥ रोगवतपुष्पदंतयुजितेहा ॥ सारवभोमअंतनंगतरुपा ॥ स्रुपतिकारीहेमकुंभसेअनुपा ॥ १२ ॥
 गंगाअप्राहीकनदिलावतवारि ॥ वेदमुरतिमानमंत्रउचारी ॥ नरत्नअसरागंधर्वकृतगाना ॥ देवबजा
 तबाजांविधिनाना ॥ त्रिलोककेउरआनेदभयेउ ॥ कृषीभनेवेदनारिगानकरेउ ॥ १३ ॥ तालमृदंगवि
 णावनायगावे ॥ पलाकआनकमेघगोसुरवबजावे ॥ जयतयबोलेदेवदंडुडभिवजाई ॥ करेसुमनकरिम
 हामुदपाई ॥ १४ ॥ दोहा ॥ अष्टसिधिमरुधर्मकी ॥ यलीकहावेजोई ॥ लक्ष्मीकैसेवाविषे ॥ रहेउतत
 परहोई ॥ १५ ॥ चीपाई ॥ स्नानकियेश्रीतबपितपटलाई ॥ देतयुगलरत्नकृतसिंधुआई ॥ इंद्रआसन
 विश्वकर्माककणानि ॥ रत्नमुद्रिकापुंजिदेतसोआनि ॥ १७ ॥ नासाभूषणसुधाकरनिनभ्राता ॥ केश
 भूषणपुजिदेतसाक्षाता ॥ सरस्वतिमात्मानमोतनकीलाई ॥ शेषकुंडलब्रह्माकंजदेतआई ॥ १८ ॥ कुंकु
 मअंतनदेतभवानि ॥ ललाटभुषणअजनारिदेतआनि ॥ तांबुलनशाचीकुलहारवसंता ॥ वरुणवैजंती

वासु ० शिवकंठसुत्रतंता ॥ १९ ॥ दायणकुबेरमाकेकाजा ॥ अनलकंचुकीविंजनयमराजा ॥ समयउचिन
 ॥ २३ ॥ भूषणप्रोरेदेवा ॥ रत्नकेमबलाइदेनतखेवा ॥ २० ॥ सोरठा ॥ भूषणधरिकेश्रीअंग ॥ सिंधुपुल्लतत्र
 ह्याटिगजाय ॥ कमांमंसहितउमंग ॥ किनकुंदेवैयाकोवरकहो ॥ २१ ॥ चोपाई ॥ अजकहेसिंधुअसक
 मातिहारि ॥ ममअप्रशिवसबदेवमेंतारि ॥ लोकमातापतिनारायणजानो ॥ परब्रह्मपुरुषोन्तप्रवर
 मानो ॥ २१ ॥ अखिलजगतईवावासुदेवविना ॥ तोरकमापतिहमनांहिचिना ॥ आयरवदेहेगोचरप्रभु
 तेऊ ॥ सिंधुकमाताईविधिजुतदेऊ ॥ २३ ॥ कारुण्यवित्रकुलजनमफललेऊ ॥ भवसागरसेंउधारकुलते
 ऊं ॥ कारुण्यकमादानहोवेजसतेगा ॥ ससंसिंधुरूपवियातहोदेगा ॥ २३ ॥ संनिअजतवचंसिंधुमहामुद
 पाई ॥ निजसुतदेवमईछेउरमाई ॥ सिंधुब्रह्मानुतप्रभुटिगजाई ॥ वचनव्याहकिनपुनिविधिलई ॥ २४
 दोहा ॥ इंद्रचंद्रधनवंतरि ॥ पुनिसबदेवसमाज ॥ सिंधुकेशिभये ॥ व्याहफहावनकाज ॥ २५ ॥ अस्
 नवसनअरुभूषण ॥ करनकुंजनसनमान ॥ यानादिदेवनलिये ॥ इतनेसुखिहेतान ॥ २६ ॥ चोपाई ॥
 रमांगलमेंमुख्यनारिजेहा ॥ सरितगंगात्राविआदिदेवितेहा ॥ नैनारिमेनासिधिअणिमादी ॥ चं
 दनारिकोतिअप्रअआदी ॥ २७ ॥ नारायणव्याहकिविधिविस्तार ॥ सुहृद्वनलियेअजमातातथा
 गालेवांनंदीश्वरकृतशिवसेउ ॥ परिचिआदिकृषीनारदप्रतेवा ॥ पारसदबंदश्रीदामाखगेत्रा ॥ २९
 वालिउमाअनमृयादिकृबिनारी ॥ धर्मकीदागसबसावित्रिकुहारि ॥ धर्मपक्षमेइतनिसुखनारी
 उभेपक्षभयेब्रह्मावेदचारी ॥ ३० ॥ विवाहविधितानब्राह्मणतोउ ॥ उभयपक्षमेभयेपुनिसोउ ॥ सिंधु
 सराजामदेतजीतोलाई ॥ निजसुताप्रतापसंमुदपाई ॥ ३१ ॥ सिंधुतोसंकल्पमनऊमेकरही ॥ निजदी
 गसिधिसोलायकेधरही ॥ पुनिकियेवेहिकामंडपकेमाई ॥ अग्निस्थायनलियेविप्रनेबोई ॥ ३३ ॥
 गंधकमनअक्षतरंगनाना ॥ अंकुरकुलत्रामविकेअना ॥ अलंकारकृतवेदिइतंसैकिना ॥ मंग
 लकारिबिजातनविना ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ महामुनिमंत्रउचारसे ॥ स्थानकरिभयेसार ॥ वसनभूषणप्र
 नाजा

अ. १४

२३

ग
त

क्षा
ने

द नारि कोति अ पक्ष रा प्रादि

असनवसनअरुभूषण ॥ करनकुंजनसनमान ॥ यानादिदेवनलिये ॥ इतनेसुखिहेतान ॥ २६ ॥ चो
 पाई ॥ रमांगलमेंमुख्यनारिजेहा ॥ सरितगंगात्राविआदिदेवितेहा ॥ नैनारिमेनासिधिअणिमादी
 चंदनारिकोतिअप्रअआदी ॥ २७ ॥ नारायणव्याहकिविधिविस्तार ॥ सुहृद्वनलियेअजमातातथा
 गालेवांनंदीश्वरकृतशिवसेउ ॥ परिचिआदिकृषीनारदप्रतेवा ॥ पारसदबंदश्रीदामाखगेत्रा ॥ २९
 वालिउमाअनमृयादिकृबिनारी ॥ धर्मकीदागसबसावित्रिकुहारि ॥ धर्मपक्षमेइतनिसुखनारी
 उभेपक्षभयेब्रह्मावेदचारी ॥ ३० ॥ विवाहविधितानब्राह्मणतोउ ॥ उभयपक्षमेभयेपुनिसोउ ॥ सिंधु
 सराजामदेतजीतोलाई ॥ निजसुताप्रतापसंमुदपाई ॥ ३१ ॥ सिंधुतोसंकल्पमनऊमेकरही ॥ निजदी
 गसिधिसोलायकेधरही ॥ पुनिकियेवेहिकामंडपकेमाई ॥ अग्निस्थायनलियेविप्रनेबोई ॥ ३३ ॥
 गंधकमनअक्षतरंगनाना ॥ अंकुरकुलत्रामविकेअना ॥ अलंकारकृतवेदिइतंसैकिना ॥ मंग
 लकारिबिजातनविना ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ महामुनिमंत्रउचारसे ॥ स्थानकरिभयेसार ॥ वसनभूषणप्र
 नाजा

वाक् ७
॥ २४ ॥

भुपेरके ॥ रत्नमुगदसिंधार ॥ २४ ॥ **वीपार्ई** ॥ वातां शब्दमेदवो दिशगाने ॥ नाचतस्करदारा गिततुतए
जो ॥ स्तवनकरतसबस्करमुदपार्ई ॥ मंत्रुपमें वैवेहेमपीठपरजार्ई ॥ २५ ॥ चरनसरोनेधोवनकेकजा
नारिनितगंगानुतसिंधुसप्राजा ॥ कंचनकारिसिंधुभुपदधोई ॥ सिरसें वहततलसखांतुतसोई ॥ २६ ॥
गातमंगलस्वरअधिकनिकासी ॥ अतअगपादेतकमाअंबुगामी ॥ महाकृषीनुतब्रह्माअनल
जगार्ई ॥ हवनकरतवेदजं के मंत्रगार्ई ॥ २७ ॥ **सो रता** ॥ वसनभूषनरत्नकृत ॥ देतकमादानप्रभुकुं
सिंधु ॥ तनमनधननितकृत ॥ करनिछावरप्रभुपरडारे ॥ २८ ॥ **बोपार्ई** ॥ फिरतप्रकमाअनलचो
उत्तोरि ॥ नारायणलक्ष्मीअनुपमतोरी ॥ एकअसासनपरसदेपुनिदोउ ॥ ब्रह्मांडमनपीताकहि
जोउ ॥ २९ ॥ दारासहितदेवसबभेदलाई ॥ नारायणलक्ष्मीकुंदेतमुदपार्ई ॥ मंगलगातरूषीदिवकीन
रि ॥ दुर्गादिकदोउपक्षमेगारि ॥ ३० ॥ हसतवदनउररुआनेदअपार ॥ वरवधुविचदोउत्तोरि ॥ देवदारा
याकुसुंनिदेवकृषीअरुनारि ॥ देवतनुगरुपउरविनुधारि ॥ ३१ ॥ **दीहा** ॥ अदभुतलिलदेखके ॥
महामुदपायेदेव ॥ वरअक्षतअरपनकरि ॥ स्तवनकरततखिव ॥ ३२ ॥ **इतिश्रीस्कंदपुराणे विसु**

अ. १४

॥ २४ ॥

वंडे श्रीवाक्देवप्राहातमे श्रीसहजानंदस्वामिनिष्पभूमानंदमुनिकृतभाषायांचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४
दीहा ॥ पंचदशोअध्यायमें ॥ देवसबेशिरनोई ॥ स्फुतिश्रीनारायणकी ॥ करतनमरतालाई ॥ १ ॥ **बोपार्ई**
अतकहेवेदेतिनवेरविचारि ॥ मुक्तीदायकएकभक्तीनिहारी ॥ वेदसेंसांरुसखिनोविकासी ॥ भक्ती
करेसोफलपावेअविनासी ॥ २ ॥ प्रभुतीरमहिमायाविधनतोने ॥ रजतमगुनिब्रह्माशिवकुंमाने ॥ त
पअरचनहमलियेकरेतोउ ॥ मूदमतितरज्ञानजं सोउ ॥ अक्षयधामकुंकवजनपावे ॥ याकारन
हमप्रभुतसगावे ॥ ३ ॥ सिवकहेवेदेतिनसांख्यपुराणा ॥ योगवेदांतधर्मज्ञासूविधानाना ॥ पंचरात्रगा
वेप्राहान्तनिहार ॥ भक्तीसहितसबअनेतप्रकार ॥ ४ ॥ आगामनिगमतोरविधेरहेतोउ ॥ स्वाससे
प्रयेताकेप्रभुतुमसोउ ॥ सेवतचरनरामानिस्वामि ॥ याविधवाक्देवकुंमैनमामि ॥ ५ ॥ धर्मकहे
प्रभुकथाजोनिहारि ॥ तोरस्वरूपज्ञानदेतविस्तारि ॥ अमृततुल्यतापतिनकिहरता ॥ मुक्तीदभवद
रअधक्षयकरत ॥ ६ ॥ हरितनमुगवसेनिकसितेह ॥ रहोउरकानप्रवेशकरतेह ॥ तुमविनरुतोर
वासनासबहरजं ॥ नमोदयालुकपाअसकरजं ॥ ७ ॥ प्रजापतिकेधमकल्पवृक्षाएज ॥ ज्ञायमेवा

वाक्ये
॥२५॥

अ-२५

देशीकृतप्रभुतेजं ॥ धर्मप्रसभुविधमंडपकारी ॥ पितृपरवादेतामेतुमकृतनारी ॥ ८ ॥ यालोक
 मेंप्रतिधमप्रबुगामी ॥ नितरुतादिनतामिप्रविनामी ॥ धर्मदमसबताकुं दवीहिस्वामी ॥ लक्ष्मीस
 हितईवानमोनमामी ॥ ९ ॥ होहा ॥ मनुकहेसबधर्मसें ॥ उतप्रधर्महेजोउ ॥ जामेभक्तीहोतही ॥ तोरवी
 चेप्रभुसोउ ॥ १० ॥ धर्मधुंधरतुमकुं ॥ सबसेवलभधर्म ॥ धर्मकृतप्रभुतुमहे ॥ तुमसेंबदेविनषर्मे
 ११ ॥ चौपाई ॥ कृषिकेतुमसें विमुगवभक्तीहिना ॥ ज्ञानप्रयासकरिपुरतपावेदिना ॥ कामकरममे
 राकृतनेनेउ ॥ प्रक्षयकरकेसेपावेप्रभुसोउ ॥ १२ ॥ याकारनहमश्रदानुतहोई ॥ भक्तीधर्मतपवेद
 पहेतोई ॥ कालप्रेरकमायातितरमास्वामि ॥ प्रक्षरपरएकतुमकुं भजामि ॥ १३ ॥ इंद्रकहेमहापुरा
 येस्वामी ॥ डर्वासाडरायप्रंतरजामी ॥ तुमविनांरक्षकजुतीकीजोई ॥ ब्रह्माभवप्रादिदेवजोकहाई
 १४ ॥ असनचसनविनरंकभयेउ ॥ हरेसबकष्टहमारप्रबनेउ ॥ सोरता ॥ अग्निकेप्रभुतुमप्रन्न ॥
 निरम्पोहेदेवनरप्रफुरलिये ॥ ताहिसेंकरतयजन ॥ देवनरतोरेलियेयुनि ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ हरिनिवेद
 सेओरदेवयजही ॥ कामकरमरततुमकुं तो भतहि ॥ निरबंधहोई ब्रह्मपुत्रकुं पावे ॥ तुमकुं नयतेसे ॥ २५ ॥

॥२५॥

चोरकहावे ॥ १६ ॥ प्ररुतके जनराकांतिकजोउ ॥ प्रक्षरधाममेंचतुर्धासोउ ॥ मुक्तीनइछततोरेसेवाही
 ना ॥ केवलमीक्षकुं भक्तप्रविना ॥ तवसेवानुतजन्मश्रुपचगोहा ॥ प्रतिउत्तममानेतवजनतेहा ॥ १७
 ॥ होहा ॥ सिंधुकेसबब्रह्मांडके ॥ करहरपालकजोउ ॥ तामेंकर्मफलदेतेहो ॥ सबकुं नमामितीउ ॥ १८
 रुद्रकहेतगामोहनी ॥ प्रायामीहननिर्मोही ॥ कालतुमहोकालके ॥ पुरुषोत्तमनसुतोहि ॥ १९ ॥ चौपाई
 रविकहेहमकुं प्रकाशोतबहि ॥ जलप्रकाशकभयेहमतबही ॥ प्रकाशमुरतिसहातुमस्वामी ॥ या
 विधमहिमाजानिकेनमामि ॥ २० ॥ साधकेफुरनरप्रफुरगता ॥ मनुप्रतापतिनागसिराजता ॥ ताहि
 केतुमएकत्रिक्षकस्वामि ॥ गजाधिराजतानितुमकुं नमामि ॥ २१ ॥ वरुकेविपरातादेससमहोई ॥ मु
 परनावाकरधर्मकेजोई ॥ तबतुमधर्मरक्षणकाजा ॥ नरतनुधरतनमोमहाएजा ॥ २२ ॥ होहा ॥ चारण
 कहेतुमकभचरित्र ॥ करहिरुपअनेकधरि ॥ गावेसंनेसोउनरउभ ॥ पवित्रहोयप्रभुपदपावहि ॥ २३ ॥
 चौपाई ॥ अप्रधुंरगंधवकहेकथातोरी ॥ छोरागायसुनेओरकिनवोरि ॥ सोनरजोनिदंकरसदापावे ॥ तो
 रसनविनकीउनछोरवि ॥ २४ ॥ सिंधुकहेनिचतानितनजोकीई ॥ तवतोरेजनसेवाकरहिहोई ॥ अन्न

वाक् ०
॥ ३६ ॥

धनवसननमनतलदाई ॥ महाजनकियदविपावेताई ॥ ३५ ॥ पार्थदकहे प्राततातसगा जोउ ॥ यतिगु
रुदृष्टसबधनसोउ ॥ तुमविनस्वतनहमारे जोई ॥ ईश्वरतुमविनत्रिलोकके माई ॥ ३६ ॥ मूर्त्तिकहे नारिष्ठु
दुःखरुग ॥ पक्षिपक्षुपापिनिवनिचबुग ॥ सोतो रधानसे ब्रह्मपुरपावे ॥ धानविनकरेश्वरअपूजहो
जावे ॥ ३७ ॥ योगवित्तिकहे प्रभुदगजुमें जोई ॥ उवाये प्रकृतिपुरुषतुमदोई ॥ ताहिसे तत्वचो विवाउपताई
तत्वसे वैराजअनंतबनाई ॥ ३८ ॥ वैराजतुमपु निब्रह्मरूपदोई ॥ अहिनरुकरुअरुत्तगतोई ॥ श्याव
रजंगमरचेतुमस्वामि ॥ सबकरताजानितुमकुंजमामि ॥ ३९ ॥ होहा ॥ कहे दुर्गाअतिशितसे ॥ उगमे विं
तहितोई ॥ अतई इतगारजकी ॥ फरबनचाहतसोई ॥ ३८ ॥ चोपाई ॥ देतजोगवरि फरवतानिदासा ॥
तवअर्चनविनछोरयाकिआसा ॥ याफरवमेन हिलोभेक्षणपांमि ॥ जानिसबफरवकेनिघितोयस्वा
मि ॥ ३१ ॥ नदिकहेतानअजानजनजोउ ॥ तोरनमनकिरतनकरेकोउ ॥ जन्ममरनभयतमकोनताई ॥
याकारलतोरसरनमें आई ॥ ३३ ॥ देवदागके जन्मचरिततिहाग ॥ लोकपावननिरगुनउदाग ॥ तुमनि
रगुनतोरआश्रितनेह ॥ रततमोगुनिहोतनिरगुनतेह ॥ ३३ ॥ कहेरुषीदागतापतिनसेंतरहि ॥ जिव

अ. १५

॥ ३६ ॥

तोरपदधानविनुनतरहि ॥ डालमेदनवारागतवजानी ॥ आयेहमपाहिप्रभोसारंगपानि ॥ ३४ ॥ शीरग
भुमिकहे मुपुसामनुचंद ॥ पुनमजुको सोलकलानुत ॥ वारिजलोचनभवकंद ॥ श्रीविजोगपीडामोचन
पाहि ॥ ३५ ॥ चोपाई ॥ सरस्वतीकहे मोरलोचनलोभाई ॥ तोरमुखविषेचंदचकोरमाई ॥ रहोसदाचंदस
मवदनकुंहेरि ॥ मेरेउररहोसदागुरतितेरी ॥ ३६ ॥ होहा ॥ स्कंदकहेसबदेवने ॥ स्तवनप्रभुदरिगकीन ॥ प्र
भुतवप्रसनहोयके ॥ श्रीजुकुंआगपादीन ॥ ३७ ॥ चोपाई ॥ देवकुंदेरोदेविदयाउरआनि ॥ श्रीनेदेरे
सबदेवजिवपानि ॥ चितिनुतश्रीकिहागजुसेदेव ॥ त्रिलोकमे श्रीमानभयेततलेवा ॥ ३८ ॥ ग्रहीपाये
धनसागिज्ञानादिनेहा ॥ पुरवमाईभयेधर्मादिकतेहा ॥ प्रभुनिजतरदियेलक्ष्मीकुंगोह ॥ संपतरुपसा
पित्रिलोकमेतेहा ॥ ३९ ॥ सिंधुसेलक्ष्मीप्रगरभयेजबही ॥ सागथनामरत्नाकरतबही ॥ श्रीप्रतापसेअ
हस्ररत्नवाना ॥ अमृततुल्यअन्नलायविधानाना ॥ ४० ॥ जिमायेसबजुकुंजोतनआये ॥ दिखवस
नभूषणायुनिलाये ॥ देतदेवनकुंमहामुदपाई ॥ प्रसनकरनकुंनिजतमाई ॥ अदेनतोगधनअंत्रुधुं
नाई ॥ वरषततलदप्रानुदेतलाई ॥ ४१ ॥ होहा ॥ पारिवर्हिंसिंधुदियो ॥ वरवधुंकुंधनलाई ॥ सोषभुत्रा

वाक् ०
॥ २७ ॥

हसलकुंदियो श्रीतुतगायेलुयाई ॥ ४२ ॥ **चौपाई ॥** लक्ष्मीनारायणमुदकृतकिना ॥ इंद्रादिकगायेस्कर
प्रविना ॥ निजनिजधाममेदेवसबताई ॥ **अधिकारपायेयुनियुवकीमाई ॥ ४३ ॥** युनिहरिआगापसेम
रउताई ॥ गरुडनेधरेयाकेस्थानमेंताई ॥ सावरणिविघ्ननापसेलिना ॥ सागरमेश्रीदेवभयेदीना ॥ प्र
भुप्रतापसेइंद्रयुनियाये ॥ याकथाहमसबकहिंस्नानये ॥ ४४ ॥ याकथाअहोनिशिस्ननेअरुगावे ॥
सोनरदेउमहासंपतावे ॥ ग्रहीजोस्ननेताकुंधनसिधिहोहि ॥ ज्ञानवैरागभक्तीसागितनसोहि ॥ ४५
सोरवा ॥ सावरणितोसेकीना ॥ इंद्रपापोतेसेसंपतिकुं ॥ श्वेतद्विपगयेउप्रविननारदसोमुनुंककुंतुम
से ॥ ४६ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेविष्टपुरवंशेश्रीवासुदेवमाहात्म्येश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूषामंदमु
निकृतभाषायांपंचदशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ दोहा ॥ गयेनारदगोलोकमे ॥ देवतसोभाजेऊ ॥ बरमनकी
निसोलेके ॥ अध्यायविषेतेऊ ॥ १ ॥ **चौपाई ॥** स्कंदकहेनारदमैरुष्टंगताई ॥ मुक्तहजारुंदेखेश्वेत
द्विपमाई ॥ वासुदेवसेहृदाजोरिततकाला ॥ जोगिगायेधामश्वेतविनाला ॥ २ ॥ द्विपमेतायेमुनिउरह
रवाना ॥ मुक्तदेखेवांश्वेतचंदवाना ॥ ताकुंयुजतनारदसिरमाई ॥ नारदकुंयुनियुजतसोधाई ॥ ३ ॥

अ-१६
॥ २७ ॥

एमदरसलियेतपकियेनारि ॥ बाहुउरधयावभुपेएकधारि ॥ द्वादशअक्षरमंत्रतपेजोई ॥ श्वेतजनबो
लेतासेप्रमनहोई ॥ ४ ॥ मुनिवस्तुमहोएकांतितवही ॥ हमारदरसभयोतुमकुंतवही ॥ देवकुंडुर्लभद
रवानकीना ॥ कायकुंतपअवकरतप्रविना ॥ ५ ॥ **दोहा ॥** नारदकहेश्रीकृष्णके ॥ द्रवाकरनकेकाज
उरमोरउछाहहे ॥ मुक्तदेवाओमाहागन ॥ ६ ॥ **चौपाई ॥** स्कंदकहेकृष्णमेपेरेउरमाई ॥ मुक्तबोलेए
कनारदताई ॥ चलोमीरसंगेतीयकृष्णमेलाई ॥ बोलायनारदकुचलेआगेधाई ॥ ७ ॥ उरेनारदश्वेतमु
क्तकेसंगा ॥ देवधामलेंघिगायेउपरउसंगा ॥ सप्तकृषीअरुध्रुवधामजोई ॥ तामेआसकनभयेमुनिमो
ई ॥ ८ ॥ महरजनतपउलेंघिगायेउ ॥ ससलोकमेश्वेतमुक्तपिछैतेउ ॥ हरिकृपासेअष्टआवरणपाए ॥
पायेप्रमगायेउलेंघकेबारा ॥ ९ ॥ भुजलतेजबालुआकावाजीने ॥ अहंकारतत्वमायाआवरणचिनो
एकराकसेदवागुणाधिकाराऊ ॥ याकुंउलेंघिपायेगोलोकतेऊ ॥ १० ॥ जोतिमेंएकांतितजननिवास
विरजानदिदेवितामेंचकुंपासा ॥ गोपगोपिधोतचंदनतामे ॥ स्फुगंधिमाननदिफुलेकंजतामे ॥ ११ ॥
इंदिवरकोकनदपुंउरिकंजता ॥ स्फाटिकत्रिलामथतदमनरंजता ॥ निलपितश्वेतलालमणिघाटा ॥ सो

न

वासुदे
॥ २८ ॥

पानपंक्तीकेनिकबनेवादा ॥ १२ ॥ हंसकारंजतामेकरहिंकिंगोए ॥ कामधेनुहृददिसगतघोरा ॥ पिबे
जलनिरामलविश्रामे ॥ तदशोभादेखनारदचलेतामे ॥ १३ ॥ **श्लो०** ॥ विरजाउलंघिततकाल ॥ यरिखा
रुपतोगोलोकके ॥ सतशृंगगिरिविनाल ॥ पायेनारदयाशोभाककु ॥ १४ ॥ **चोपाई** ॥ कीटियोतनउं
चदशकीटिचोरा ॥ गोलोककीटकिमाईचोउओरा ॥ कंचनवानकल्पदृक्षरहेछाई ॥ पारिजातपुम
फुलेसुगंधसुहाई ॥ १५ ॥ युथिकामलिकालविंगएला ॥ सोभहिगिरिल्लयौसोनेरकेला ॥ दिव्यमृग
गतकेफिरैतामेहंदा ॥ पक्षीबोलहिमवमुक्तखहंदा ॥ १६ ॥ ताकेशिखरपरमंउपजोउ ॥ अखंडरस
रमनकेसोउ ॥ देखेनारदनेदिव्यविनाला ॥ जामेरसतप्रभुहोयगोवाला ॥ १७ ॥ सुगंधिफुलनुतचोउ
ओरवाटी ॥ चोउचोउछारप्रतिरत्नकपाटी ॥ विचित्रतोरणारत्नकेसंभा ॥ उलेचमोतिनकेहारकरंभा ॥
१८ ॥ कस्तूरिकेसरुअगरुअनुपा ॥ दुर्वाधाणिनुतमंगलरूपा ॥ चोकसुंदरसबमंडपराते ॥ तामेवा
तितरवज्रविधवाते ॥ १९ ॥ ताकेब्रह्ममनोहरसंनि ॥ रमतदेवेगोपिहृदयुनि ॥ वासभूषनदिव्यरत्न
केरते ॥ योचिकंकराकांचिनुपुरवाते ॥ २० ॥ रूपलावनकिशोरवयवांना ॥ शृंगारकतराधालक्ष्मीस

अ. १६
॥ २८ ॥

माना ॥ दिव्यअनंतभोगमंडपमांश ॥ हरितसगातगोपितामेसुहाई ॥ २१ ॥ **दोहा** ॥ शतशृंगनिचेभुमिका
तामेहंदावनजोउ ॥ सावरणिफुलनुंकंदकहे ॥ नारददेवेउसोउ ॥ २२ ॥ **चोपाई** ॥ राधाकृष्णसदारमहि
जामे ॥ कल्पद्रुमकुंतनुतसरतामे ॥ बदरीदाडिमअंबपुगअपारा ॥ रवुरनारंगिनालिकेरछारा ॥ २३
जांबुजंबिरचंदनचंपसोहे ॥ यनसअनारदेचदारुमनसोहे ॥ इक्षकेतकीकेलपंक्तीसुहाई ॥ पुष्य
भारेदृक्षरहेसबनाई ॥ २४ ॥ लविंगयुथिमोगारामलिकाद ॥ प्राधविसुगंधिसुमनवेलिअदि ॥
मंदशीतलसुगंधिसमिरा ॥ हंदावनकुमेचलहिधिरा ॥ २५ ॥ शतशृंगसंकरेनिरनिलाई ॥ सदावसं
तरुनुरहेवनमांश ॥ विचित्रभुमिक्तकुंतसुहाई ॥ अनेकगलिमेरत्नदियमांश ॥ २६ ॥ गोपगोपिहृ
दमकिरतनगावे ॥ ताकेभुषनकेब्रह्मसुहावे ॥ वल्लगोवनप्रतिबोलेवीरवीरि ॥ दधिमंथनकुंसे
रहेवनधोरि ॥ २७ ॥ **श्लो०** ॥ ब्रंदावनकेचकुंओर ॥ उपवनमनोहरवत्रिदृहे ॥ फलफुलकतअ
वमोर ॥ तेहिक्तवनदेखनारदचले ॥ २८ ॥ **चोपाई** ॥ पायेगोलोकसुनिमुदपाई ॥ रत्नपुरगगोलउ
ज्वलसुहाई ॥ अनंतकीटिविमानरथआई ॥ रत्नरचितरहेपुरपछाई ॥ २९ ॥ रत्नमगमेदेहवेलि

रुहाई ॥ रत्नरचितसोभावरनिनताई ॥ कोटिकपंक्तीसेरचनाहेभारी ॥ रत्नरचितनुतगोखअटारि ॥ ३० ॥
 रमनमंडपरत्नरचितविशाला ॥ रत्नरचितवेदिरत्नदियमाला ॥ अंगरुकेत्रारकस्करिसेलेपाई ॥ कं
 कुदधिधोधांलिसेंरुहाई ॥ ३१ ॥ केलसोपारितोरणबंधतोउ ॥ अंगणकलनाथ्यापनकृतसोउ ॥
 मणिबंधभुमिराजमगमेंसारी ॥ रत्नघोएकीभिरहेतामेंभारि ॥ ३२ ॥ शिवविंरचिआतदरानका
 त्त ॥ जनिअनंतकोटिब्रह्मांडकेरजा ॥ कछप्रदेखनगोपगोपिचंद्रधाई ॥ देखनारदमगकुमेंसुदपाई
 ३३ ॥ पुरविचक्रछमंदिरदियातोई ॥ नंदादिगोपकेगोहत्रंतसोई ॥ सोलपुरगखार्कृतहेताके ॥ चक्र
 चक्रद्वारचेसवयाके ॥ ३४ ॥ कीटिकगोपवृत्तद्वारपालतेऊ ॥ रत्नकमाउनुतद्वारवादेतेऊ ॥ देखेन
 रदनांमकऊतानो ॥ विभांनुचंद्रसूर्यभांनुगनी ॥ ३५ ॥ वरुभांनुदेवनाकभांनुएऊ ॥ रत्नभांनुविशाल
 कृषभतेऊ ॥ अंशुबलदेवप्रस्थरुपाश्रुतोउ ॥ वरुश्रपश्रीदामगोपवडसोउ ॥ ३६ ॥ सोसा ॥ नारद
 आगपायाकियाय ॥ येउरजकोटमेंपुनि ॥ देखेउचोकयामाय ॥ विशालतेजपुंततामेंवड ॥ ३७ ॥
 इतिश्रीस्कंदपुराणेविद्युत्खंडेश्रीवासुदेवमहात्म्येश्रीसहजा नंदस्वामिशिष्यभूमानंदमुनिकृतभाषा ॥ ३८ ॥

यांघोडगो ॥ ध्यायः ॥ १६ ॥ दोहा ॥ सतरकेअध्यायमें ॥ नारदकुंभयेतेऊ ॥ दरानवासुदेवको ॥ बरन
 नकियोहेतेऊ ॥ १ ॥ चौपाई ॥ स्कंदकहेतेजपुंनहेएऊ ॥ कीटिअकंसमश्रुतदियतेऊ ॥ दशोदिनामे
 व्यापरहेतोउ ॥ सच्चिदानंदअक्षरब्रह्मसोउ ॥ २ ॥ प्रकृतिपुरुषकीकारजतोउ ॥ प्रधानपुरुषादीमें
 व्यापेसोउ ॥ अष्टांगगतोगसमाधिवंतनेहा ॥ ब्रह्मरंधमेतेजदेखततेहा ॥ ३ ॥ रविवाशिताराअनलते
 जतासें ॥ पायप्रकावाहिब्रह्मांडतासे ॥ अमृतब्रह्मपुरप्रभुधामएऊ ॥ पुनककोदितादेयादिगनेऊ ॥
 ४ ॥ अतनुंकरचंद्रबलिदानलाई ॥ गिरतउपरीपरिमाहामुदपाई ॥ गोपगोपिकेचंद्रदुमितोउ ॥ देख
 तकेवलतेजसवसोउ ॥ ५ ॥ दोहा ॥ छहप्रकपाकरिताही ॥ बोलातदरानकरनलियु ॥ देखातमुरती
 तोहि ॥ दिअअसौकिकआनंदप्रद ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ तेजकेयुंजमेमेंदिराका ॥ दिअमएांस्तंभतामेंअ
 नेका ॥ रत्नरचीतमंडपमनहारी ॥ ताकेचक्रंओरहवेलियुभारी ॥ ७ ॥ राकंतिकनितजनकीअनुंया
 जामेरहेनरारिदियरुपा ॥ दिअवसनभूषणअंगधारि ॥ दिअमंदिरकीओररहेचारि ॥ ८ ॥ दोहा ॥
 दिअमंदिरकेविचमे ॥ सिंहासनहेतेऊ ॥ रत्नमणिमथरचना ॥ दिअअनुपमतेऊ ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ जो

वासुदे
॥ ३० ॥

अ०-१७

जनदेवे सोऽप्राश्चर्यं पावे ॥ नारदके उरःप्रानंदनमावे ॥ सिंहासनपरकरमईशुसोई ॥ परब्रह्मपुरुषोन्नम
 प्रभुजोई ॥ १० ॥ अखिलब्रह्मांडजनः प्रेतरकीतेकु ॥ कर्मः प्रांबलमांई ज्ञानतेतेकु ॥ निरगुणपरमेश्वरवा
 सुदेवा ॥ अक्षरपरब्रह्मविद्युभेवा ॥ ११ ॥ कोटिकंप्रमनोहरकिचोरे ॥ करुणानिधिशांतंरुपतुततोर
 क्षरः अक्षरपरस्वतंतरणका ॥ दृगसेरवेपाले ब्रह्मांडः अनेका ॥ १२ ॥ अनंतकोटिब्रह्मांडभूपेश ॥ याकुं
 हेयुसपुनिनदवरवेषा ॥ दिव्यः अनुपमपितपटधारि ॥ रत्नभूषणदिव्यमणिप्रयभारि ॥ १३ ॥ नविनमे
 घसमदेहकीवांम ॥ मकरकृतकुंडलकृतकाना ॥ नितः अंगतेतसैरहे प्रभुछाई ॥ याकारनश्चेतवानक
 हाई ॥ १४ ॥ सोरठा ॥ रत्नउज्वलसैरचित ॥ मुकटमणिजुतसिरसोहे ॥ सरदसरोजउपमित ॥ पांगवडिसप्र
 विशाललोचन ॥ १५ ॥ चोपाई ॥ सुगंधिचंदनचरचितदेहा ॥ उरविशालसोहेजक्ष्मीकीगोहा ॥ अधरप
 रभुजयुगलसंधारि ॥ वेणुवजातमधुरस्वरकारि ॥ १६ ॥ सुत्रिगाललितानयासखिसहिता ॥ राधासेव
 तचरनकृतधीता ॥ तांबवतिप्रसभामारमाधार्थ ॥ सेवेचरनसदामहासुदार्थ ॥ १७ ॥ धर्मरुवेदगोश्वर्य
 षटतेहा ॥ आयुधमुरतिमानयुनितेहा ॥ सेवहीसर्वैरुगलकरजोरे ॥ पार्यदसेवाकारतपुनिदोरे ॥ १८

॥ ३० ॥

सामलालमणिसमदेहवाना ॥ कंचनवांनकीउमुक्तसुजांना ॥ श्रीदांमनंदसुनंदगोपवेशा ॥ वज्रंभुजकी
 उद्धिभुजभक्तेशा ॥ १९ ॥ गुणवचक्रगदापद्मधरतेहा ॥ गरुडसिधिरः प्रजुतसेवेहाहा ॥ मुरतिदयातुष्टिशां
 तिजोउ ॥ उन्नतिप्रदाहि प्रेत्रिमैधासोउ ॥ तितिक्षासमृतिबुद्धीक्रियादिमाता ॥ हरिकुंसेवतसबजगविसा
 ता ॥ २० ॥ दोहा ॥ याविधयुततदेवके ॥ अदभुतमुरतिः प्रतुंय ॥ प्रानंदवारिः अंखिमै ॥ पायेनारददिव्य
 रूप ॥ २१ ॥ चोपाई ॥ श्रेमसेरोमरवदेभयेः अंग ॥ दंडवतपरेभुमिक्तउमंगा ॥ प्रभुदिगवदेनारदकरजोरे
 देवतमुरवमानुचंदचकोरे ॥ २२ ॥ नारदकुंमानदेतबोलाई ॥ भक्तएकोंतिनिजतानिमुददाई ॥ रुद्रमव
 चनरुपः प्रमृतजोउ ॥ यानकरपायेसमृतिमुनिमोउ ॥ २३ ॥ दोहा ॥ नारदहरिमुखहेके ॥ पायेः प्रतितुरकु
 लास ॥ स्तवनकरतभक्तीजुत ॥ प्रभुकीएकोतिदास ॥ २४ ॥ चोपाई ॥ वासुदेवनारायणः कृष्णतयारी ॥
 एकोंतिजनवलभज्जकारी ॥ राधारमासेवेचरनतेकु ॥ कैवल्यमोक्षहायकप्रभुएकु ॥ २५ ॥ निसकेनिस
 तुमतीवडुंकेतिवा ॥ चेतनके चेतनयुनिप्रदशिवा ॥ क्षरः अक्षरपरब्रह्मकहावे ॥ याकुंभतिचितकथ
 नापावे ॥ २६ ॥ भक्तीसंजनकीकाजतीहोई ॥ जपतपदानसैंहोतनसोई ॥ तीरचरनकिकोंतिनेहा ॥ निज

वास्तु
॥ ३१ ॥

जनउरसेअग्रधरतेह ॥ ३१ ॥ वेदकहेतुमपुसइत्यएका ॥ तुमकियेहेमायाऽप्रादिअनेका ॥ रोमछिद्रप्र
तितेततवजोउ ॥ कोदिइंडुसेअधिकतेजसोउ ॥ ३० ॥ निरगुणअक्षररूपमृतनामा ॥ तेजमेरहोकरिनिज
धामा ॥ तोरउपासनावलपायेजेह ॥ कालमायाभयगिनतनतेह ॥ ३० ॥ नारनतिहारमेंपायेउस्वामि ॥
माहायुरुषहोसबअंतरजामी ॥ तोरचरनमेंभक्तीतेसेहोई ॥ मोपरक्रपाप्रभुकरेतुमसोई ॥ ३० ॥ श्रीवर्
स्कंदकहेनारदयाविध ॥ स्तवनकरतभयेभक्तीमें ॥ आनंददाईस्वमिध ॥ प्रभुबोलेअमृतसमवानी ॥ ३१
इतिश्रीस्कंदपुराणेविष्णुखंडेश्रीवास्तुदेवमाहात्म्येश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूषानंदमुनिव्रतभावा
यांसप्तदशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ वास्तुदेवप्रवतारजो ॥ वनेउक्ततचरित ॥ अतारकेअध्यायमें ॥ ना
रदसेंप्रभुकिन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ नारदतुममोरदरवानकीना ॥ भक्तराकांतिकहोयप्रविना ॥ ब्रह्मचर्यधर
दंभहिंसासागि ॥ दयादानदमनजुतरागि ॥ २ ॥ उपनामअरुस्वधर्मकृतसोई ॥ वेगगवानअनात्मनि
ष्ठतुमहोई ॥ अष्टांगयोगसतसंगकेकरता ॥ पंचविषेमेंनिजइंदिकुंहरता ॥ ३ ॥ निमारभक्षकतपकर
ताहोई ॥ असनसकलसागितसरसोई ॥ ज्ञानरुमाहात्मकतभक्तीजेह ॥ मोरविषेकिनारदतुमतेह ॥ ४ ॥

अ. १८

इतनेसाधनजुतनारदसोई ॥ दियेहमदरवानक्रपाकरतोई ॥ इतनेलछननुतजनजोकोउ ॥ राकांतिमांई
देवतमोकुंसोउ ॥ ५ ॥ दोहा ॥ मारागधापार्थदनिज ॥ सहितअक्षरधाममेसदा ॥ रहकुंनिवासकरही
ज ॥ वास्तुदेवस्वरुपहभजेहु ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ जनअंतरजामीफलकेदाता ॥ स्वतंतरमोकुंतुमजानोसाक्ष
ता ॥ नंदगरुडपारषदकृतजोई ॥ श्रीकृतरजुंमेंवैकुंठकेमांई ॥ ७ ॥ भुपरतेजोमयश्वेतइपनामा ॥ रजु
तामेसदाकरिनिजधामा ॥ मुक्करहहितामेश्वेतअपाग ॥ देतदादाताकुंदिमेंपंचवाग ॥ ८ ॥ अनिरुद्धप्र
द्युमनसंकर्षणोउ ॥ नामअरुपहमधरकेसोउ ॥ अनंतकीदिब्रह्मांडसर्गजेहु ॥ पालननावापुनिकर
तमेंतेहु ॥ ९ ॥ सर्गआरंभविषेअनिरुधहोई ॥ मोरनाभिसेब्रह्मासरनेसोई ॥ ब्रह्माआराधनकरतह
मारा ॥ तयअरुयज्ञकरिकेअपारा ॥ १० ॥ तबब्रह्मासेबोलेगरतिहमहोई ॥ माराहुंवरईछितदेवेतोई ॥
पाओगोसामृथप्रतारचीतामे ॥ रहेगेसकलजनतोरअग्यामे ॥ ११ ॥ ममवरसेवेदसनातनजोउ ॥ पदे
विनफुरेगेंबुधिजुमेंचीउ ॥ मोरस्वरुपज्ञानअततोरहोई ॥ तवकृतमरजादलोपेनकीई ॥ १२ ॥ सरासर
मुनिकुंइच्छावरदाता ॥ अजतुमएकहोवेगोसाक्षाता ॥ जोजोकारजतामेंसिधनहोई ॥ तबतोरैअजसंभ

वासु ७
॥ ३३ ॥

अ० १८

रजोमोर्द्ध ॥ १३ ॥ प्रगतहोयकाजकरेहमसोउ ॥ प्रथमचोरोत्तविश्वतुमजोउ ॥ हरेगेहिरापक्षभुमि
नवन्नाई ॥ वागहहोर्द्धहममारेगोताई ॥ १४ ॥ सागरकुंसेपुनिधरनिलाई ॥ देवेगेब्रह्मातीयस्थानवहगई
दोहा ॥ अजतोररजनिकेविषे ॥ होहिहममिनाकार ॥ बित्तसहितभुनावपर ॥ करेगेप्रनुकीउधार
१५ ॥ चोपाई ॥ कवपपकृतसुधालियेताई ॥ मथेगेसिंधुकरमंदरवाई ॥ सागरमेंउबतगिरिजोई ॥ ध
रेकमतरुपपियपरसोई ॥ १६ ॥ नृसिंहरुपहमसरलियेधारि ॥ हिरापकशिपुजोरेगोविदारि ॥ विरोच
नकृतनामबलिअक्रुग ॥ इंद्रकुंजासैनिकाजोगेदुग ॥ १७ ॥ त्रिलोककुंजबलेवेखोंचाई ॥ तबअदी
तिफतकरुपपसेताई ॥ उपेंद्रनामवामनजितोउ ॥ बलिछलनलियेहोयहमसोउ ॥ १८ ॥ इंद्रासनपर
इंद्रवेठाई ॥ सबसरकुंनिजस्थानकेमांई ॥ बलिकुण्डपातालकीजोउ ॥ देवेगेविधितुमरुनोसव
सोउ ॥ १९ ॥ दोहा ॥ देवकुतिकेहमसें ॥ होयकपिलअवतार ॥ नानापावेगेसांरखती ॥ ताकोकरनउ
धार ॥ २० ॥ चोपाई ॥ अनसुयाअत्रिसेदेतावयनामा ॥ यदुप्रह्लादकुं ब्रह्मविद्यादामा ॥ मेरुदेवीना
भिफुतकृषभदेवा ॥ देखायेगेपरमहसमगभेवा ॥ २१ ॥ यमदगनिरेणकाकुंसेहोई ॥ त्रेतायुगमेप ॥ ३३ ॥

॥ ३३ ॥

रजुगंसोई ॥ धर्मकिमरजाहातोरनहारा ॥ छत्रिहनेगेहमएकिशवाग ॥ २२ ॥ हापरत्रेतायुगसंधिमं
ई ॥ कौशल्यादशरथकुसेहमतार्ई ॥ लक्ष्मीजनककृतहोयगोतबह ॥ शिवधनुषतोरवरगेतबही ॥
२३ ॥ देवकृषिद्रोहितनकताहारी ॥ कुंभकरवनुतदेवेगेमारि ॥ वाल्मिकअरुक्रुषीबइतेहा ॥ अद्य
हरचरितगावेगेतेहा ॥ २४ ॥ हापरकलियुगसंधिकेअंता ॥ भूभारअसरमारनभगवंता ॥ धार्मिक
जनअरुधर्मकेपाता ॥ वरुदेवदेवकीसेमथुगंजाता ॥ २५ ॥ ह्रस्वपासुदेवनामहमारा ॥ संकर्षणहो
यगेबलभरा ॥ अनिरुधप्रद्युमनजदुकुलजाता ॥ वृषभानुराधातातकलावंतिसाता ॥ २६ ॥ मोरवा
देदावनमेंविहार ॥ राधिकासंगेहमकरेगेअज ॥ भिष्मकगेहअवतार ॥ लक्ष्मीधरेनमरुकमीलि
२७ ॥ चोपाई ॥ याकुंहरेगेराजादुष्टकुमारी ॥ धर्मद्रोहिपुनिअसरसंहारि ॥ असरप्रवेशराजामेंभये
कुं ॥ भुभाररुपहनेगेहमएकु ॥ २८ ॥ सकामनिष्कामसेमनमोमांई ॥ तोरहिब्रह्मगतदेवेहमतांई ॥ ध
र्मथापियदुकुलक्षयकरके ॥ होयअंतरंध्यानभुभारहरके ॥ २९ ॥ मोरचरितसबतनअद्यहारि ॥
गावेगेआसआदिबहुप्रकारि ॥ परासरमेंआसरुपहमधारि ॥ एकवेदकेहमकरेगेचारि ॥ ३० ॥

वास्तु ० वेदविधिप्रनुसरिअस्फुर ॥ तिनलोकमेअतिकरेगेबुग ॥ ताकुंछजेगेहमबुधरुपहोई ॥ पुनिशुधध
 ॥ ३३ ॥ मंत्रतावेगेंसोई ॥ ३१ ॥ अर्जुनकृतहमरणविषेतेऊ ॥ हनेअस्फुरपुनिदेहधरितेऊ ॥ भुपरअधर्मवराता
 येतबही ॥ नरनारायणारूपहमतबही ॥ ३३ ॥ सुरतिधर्मकृतद्विजसामवेदी ॥ कलिमेहोईहमअकल
 अभेदि ॥ दुर्वासात्रापमेनरदेहतेऊ ॥ कृषिनुततातमोरहोयगेतेऊ ॥ ३३ ॥ अस्फुरगुरुदेविकारसेया
 की ॥ रक्षाकारेगेमीरधर्मपिताकी ॥ रोहा ॥ कलिअंतेहमकलकी ॥ दिव्यअश्वपरवार ॥ यवनतुल्य
 पापिसब ॥ जनकुंआरेगेमार ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ वेदधर्मदैतकरेजबनात्रा ॥ तबतबप्रगतकरेविलासा
 वेदधर्मकीरक्षालियेआई ॥ विधितोररचनामेकरेगेसहाई ॥ ३५ ॥ इतनेवरहमअजकुंदीना ॥ अमद
 र्भयैसुनुनारदप्रविना ॥ अजकुंदियेवरहमजीतोउ ॥ होगयेहोवेगेहालहोसोउ ॥ ३६ ॥ अज्रतारसा
 मृथक्ततसबएऊ ॥ नारायणकहेनारदसेतेऊ ॥ सबजनईशामेरेदरानतेऊ ॥ दुर्लभहेसोनारदपाये
 तेऊ ॥ ३७ ॥ मोरता ॥ मांगकुंवरमुनितोय ॥ इच्छितदेवेहमप्रसबभये ॥ दरुअप्रफलनहिहोय ॥ नार
 दतुमकुंभयोगममजो ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ स्कंदकहेनारायणवचस्कंनि ॥ कृतारथहोयनारदबोलैपुनि ॥ ३३ ॥

मनोरथपुराभयेसबमोरा ॥ सबतनदुर्लभदर्शकरतोरा ॥ ३९ ॥ तबतोरजनतोरअमूनधामा ॥ देसम
 वभयेहमपुरनकाम ॥ तोरदरवाविनदुर्लभकहाई ॥ ब्रह्मांडमेंएसोपदारथ्यनई ॥ ४० ॥ तदपिप्रभुह
 ममामेवराएऊ ॥ तबतोरजननसगानसवेऊ ॥ उछाहसहितरहोमतिमोरी ॥ सहाप्रीतिमेंगावेकीरती
 तोरि ॥ ४१ ॥ वेदकर्मकरदेवलोकपावे ॥ पुमफलभोगीपुनिभुतलआवे ॥ सोस्फुरतुममेनइच्छऊंस्व
 मि ॥ चरणरतिदेऊअंतस्तामी ॥ ४२ ॥ रोहा ॥ स्कंदकहेसावर्णिकुं ॥ नारदजाचेउतेऊ ॥ कृषकृपा
 करिकेदिये ॥ विनावजावनतेऊ ॥ ४३ ॥ चौपाई ॥ नारदतुमबड़ीकाश्रमताई ॥ करऊंआराधनमोर
 मुदपाई ॥ भक्तकाकानिनारदतुममोरा ॥ अजसेअधिकतानुमाहात्मतोरा ॥ ४४ ॥ सूचिदानंदचिद
 शक्तीपतिमोई ॥ जानहिसबविधिएकांतिकसोई ॥ एकांतिचिंतनकरेसदागमोरा ॥ मेंयाकीचिंतन
 करुंनिशिभोरा ॥ ४५ ॥ एकांतिकमोयवलभमेंयाकुं ॥ पतिव्रतागुणवशायतिनेमेंताकुं ॥ जहांवि
 चरेएकांतिजनमोरे ॥ तापिछेवराहोईश्रीनुतदीरे ॥ ४६ ॥ बिनुसतसंगनहिपावेमोई ॥ जिमिपरजनसु
 मुशुतोई ॥ मोरशनमनुषपावेतबहि ॥ मायाजिवबंधनमुक्तहोवेतबही ॥ ४७ ॥ सकामनिःकाम

वाक्यं
॥३४॥

अ. १८

प्रतिपोकुंपार्श्वं॥संमूनीनपावेहरिविमुखमांशं॥**दोहा**॥ स्कंदकहेकृष्णनेकियो॥अनुग्रहःछीतजे
 ॥ ताकुंनारदपायके॥ पिछेफिरतपुनिते॥ ४८॥**चौपार्श्व**॥ सतलनयनचरनशिरनां॥ चलेश्वेत
 मुक्तसंगपुनिधार्श्वं॥ गातहरिनसबजायकेविना॥ पुनिश्वेतक्षीपपायेमुक्तप्राधिना॥ ४९॥**सोपता**
 श्वेतमुक्तकुंपरनाम॥ करिमेरुआयेगंधप्रादनं॥ पुनिपायेबडीधाम॥ नभमगकुंसेततकालते
 ॥ ५०॥**इतिश्रीस्कंदपुराणेविष्णुखंडेश्रीवास्तुदेवमाहात्म्येश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंद**
मुनिहस्ताध्यायांअष्टादशोऽध्यायः॥ १८॥ दोहा॥ नारायणनारदकी॥ भयोसमागमते॥**अथा**
 मेंश्रोतगनिसके॥ कथाआयेगेते॥ १॥**चौपार्श्व**॥ स्कंदकहेनारददेवेदीउभाई॥ तपकरतपुनिपू
 र्वकीमांशं॥ रविमेंतेतवानजताधारि॥ श्रीवलचिह्नकृतपूसप्रघहारी॥ २॥ कंजरेवाविद्वितक
 रतलदोउ॥ चरनमेंचक्रचिह्नकृतसोउ॥ आज्ञानबाहुवित्रालउरयाके॥ सूक्ष्मसितवसनधनता
 के॥ ३॥ भालवित्रालवदनचंदमानुं॥ भुचापसमनाकतिलकुलजानुं॥ धनश्रामसुंदरदोउवि
 र॥ नारदआयेनतिकचलधिर॥ ४॥ घकंमापुनिदंडवतकिना॥ जोरिकरवादेप्रभुदिगदिना॥ ३४॥

॥३४॥

तपतसतेतकेनिवासरुपा॥ आत्मनिष्ठावानरूपीअनुया॥ ५॥**सोखा**॥ त्रैलोक्यव्रह्मचारिसोउ॥
 संधावंदनविधिकरपुनि॥ मीनव्रतसागकरिदोउ॥ नारदकुंकुंभवपुनत॥ ६॥**चौपार्श्व**॥ पुनिकुश
 आश्राननारदकुंदीना॥ बैवेपुनिदोउत्रिप्रविना॥ तिनूसोहतअतिदिमअनुया॥ यागभुमिमेमा
 नुतोतिस्वरुपा॥ ७॥ नारायणनारदपरकपालाई॥ बीलतवचनसकलरुभदार्श्वं॥ ब्रह्मपुरमेंपु
 भुसनातनतोउ॥ देवितुमकारनअपनोसोउ॥ ८॥ नारदकहेप्रभुरूपातुमकीना॥ तबवास्तुदेवमी
 यदरवानदीना॥ सोप्रभुनेमीयधैरतवयासा॥ तुमकुसेवेगेंसगकरिनिवासा॥ ९॥**दोहा**॥ नाराय
 णनारदकुं॥ कहेतुमधम्वचउभागा॥ निरविपुरुषोत्तमप्रभु॥ देवडलैभनुतरागा॥ १०॥**चौपार्श्व**॥ प्र
 क्तिआकांतिकयाकीकरेतीउ॥ अक्षरपुरुषदेवैतनसोउ॥ पुरुषोत्तमकोदरवानएऊ॥ करेजाईअ
 क्षरमेंनांहिसंदेऊ॥ ११॥ याकुंआकांतिकजनविनकीउ॥ बलभलीकमेंनांहितनतोउ॥ याकारनतो
 यदर्शनदिना॥ तेतपुंतमेसदारहंतौलिना॥ १२॥**अनुत्तरुपगुणतितश्रुधतेऊ**॥ अखंडरानंदअशु
 तप्रभुतेऊ॥ करचरणरुपवयदेहवांना॥ अमाधिकसबभूषणादिनांना॥ १४॥ नियुणअरुब्रह्म

वास्तु ० रूपजनतेह ॥ भक्तीवास्तुदेवकिकरेतेह ॥ अनंतवाक्कीकेईवाकहार्द ॥ महिमायाकोसबबरमोनताई
 ३५ ॥ निवअरुईशकुंकेअंतरनामी ॥ आकावायोंनिरलेपजनस्वामी ॥ दिग्दृगकुंसेंदेवहिननयाकुं
 वस्तुदेवस्तुतक्रमपुरुषयताकुं ॥ १६ ॥ सोरवा ॥ प्रकृतिपुरुषकेसाम्प्र ॥ निरलेपनिरगुणजेहिंसदा ॥ स
 कलगुणविवाणम ॥ करुणवाणणताआदिनेकु ॥ १७ ॥ चोपाई ॥ सोप्रभुकुंतपकरकेतोउ ॥ घसन
 करअक्षेपदपायेसोउ ॥ याकारननारदककुंतोई ॥ धर्मएकांतसेसेवोतुमसोई ॥ १८ ॥ करकुंतपमानव
 चनमोए ॥ अत्यकालशुद्धहोवेचिततीए ॥ वास्तुदेवकोमाहातमजोउ ॥ जानोगेमुनिकह्योहमसो
 उ ॥ १९ ॥ सर्वप्रथसाधकतपतेहा ॥ हृष्टकुंवह्वभतानोअतितेह ॥ विनतपप्रभुवशाकबकुंन
 होई ॥ नारायणकहेनारदसेंसोई ॥ २० ॥ होहा ॥ स्तंदकहेनारायण ॥ वचनस्तुनिरमांड ॥ तपकीइ
 छाधारके ॥ पुनिबोलेप्रभुताई ॥ २१ ॥ इतिश्रीस्तंदपुराणोविष्णुरवंडेश्रीवास्तुदेवप्रहात्मेश्रीसहजा
 नंदस्तामिद्विष्यभूमामंदमुनिक्रतभाषायांकोनविध्यायः ॥ १९ ॥ दोहा ॥ विशुकुंकेअध्यायमें
 चकुंवरनकेधर्म ॥ नारायणानारदसें ॥ कियेसबद्विज्ञतकर्म ॥ १ ॥ चोपाई ॥ नारदकहेप्रभुतुम ॥ ३५ ॥

॥ ३५ ॥

जोमाना ॥ एकांतधर्मकहोविधानना ॥ एकांतधर्मसेवास्तुदेवजोउ ॥ घसनहोवेतुमकहोमोयसो
 उ ॥ २ ॥ प्रभुकहेप्रअतिहागेशुभहार्द ॥ गुह्यहेतदपिककुंतुमताई ॥ कल्पयलेस्तरजसेजोकिनो ॥
 सनातनधर्मनारदककुंविनो ॥ ३ ॥ प्रभुमेअनमभावलक्ष्मीकोजेसे ॥ ज्ञानवैरणपधर्मकृततेसे ॥ प्र
 भुविबेभक्तीनिरंतरतेकु ॥ धर्मएकांतिनामहेएकु ॥ ४ ॥ जासेघसनहोवेअद्वैरधामि ॥ भक्तभिहोर
 हेयुरनकामि ॥ नारदकहेस्वधर्मादिके ॥ प्रथकलंछनकहोजानुनिके ॥ ५ ॥ आगमनिगमकामसु
 लतेकु ॥ प्रभुतुमएकांतधर्मकेगेकु ॥ अद्वैरवासिवास्तुदेवजोउ ॥ बदिअप्रायेजनश्रेयलियेसोउ ॥ ६
 अज्ञादीकनितगुणववाएह ॥ यथारथधर्मनतानहितेह ॥ याकारनप्रभुकहोतुमसोई ॥ धर्मसन
 तनहेजोसोई ॥ ७ ॥ सोरवा ॥ स्तंदकहेनारदवचन ॥ स्तुनिघसनभयेधर्मस्तुन ॥ कहनलगेसना
 तन ॥ स्वधर्मादिअनुक्रमकुंसे ॥ ८ ॥ चोपाई ॥ बरनाश्रमकेवेदकहेजोउ ॥ धर्मप्रथकसदाचारसो
 उ ॥ सबजनकेसाधारणधामा ॥ प्रथकककुंतुमस्तुनोअनुकराम ॥ उनमधर्मअदिसाकहावे ॥ ति
 नकोरुपहमकहिसंनानवे ॥ ९ ॥ नितमुखधर्मनिविकाजेह ॥ तनइदकरनोननिमिततेह ॥ भ

वासु० गवतधर्मछोटोडावेजोकोउ॥ द्रोहवणिआवेतौततनोनसोउ॥ १०॥ कहेअहिंसाकोअसहृषा॥ सर्वकी
 ॥३६॥ सामामधर्मअनुपा॥ जोबोलेमेजनकीहनहोई॥ ससवानियातपककुअवतोई॥ ११॥ स्वदारासंगभो
 जनकुसेनेऊ॥ संकोचजितनौतपकावेतेऊ॥ मृतजलसेउपरशौचजोउ॥ भिंतरभक्तीसेरवोसबदो
 उ॥ १२॥ परधनचौररुछलकरिजेहा॥ लेनोनयंचमोसमानधर्मतेहा॥ अमांसादितनिनिज्जनारिसं
 गा॥ अग्रधाअोरनारिसंगव्रतभंगा॥ १३॥ ब्रह्मचर्यरखेकामकोधलोभसागि॥ पात्रकुंदेवेवितहो
 यक्ततरागी॥ संतोषिरहेभाग्यकुंसेधनपाई॥ निजपत्नीघातकरेकबुनोई॥ चतुरवरासिधिलिये
 नेऊ॥ तिरथाहीमेनहिमरनोतेऊ॥ १४॥ पशुरुपुरुषसेमैशुनजोउ॥ ब्राह्मणकुंरोगकरहिसेउ॥ १५॥
 तनेकर्मजातीअंवाकारी॥ ताहिकुंततेसवजनविचारि॥ १५॥ करचरसउदरुअरुवांनि॥ शिशुमुआ
 दिकरखेनिममेपेछानि॥ असनअभिचारमशुमांससागि॥ कुलधर्मपालेग्रहिअनुगणि॥ १६॥ ए
 कादशीहरिजन्मसबनेऊ॥ अहिंसाब्रह्मचर्यक्ततव्रतनेऊ॥ संतसेवेअन्नवांटकेपाई॥ भक्तीक
 रनिठरकीमलतालाई॥ १७॥ दोह॥ साधारनचकुंवरनके॥ धर्मकहेसुनितोय॥ अन्नवयाकेविशे

अ-३०
 ॥३६॥

यजो॥ प्रथकककुंपुनिसोय॥ १८॥ चोपाई॥ समदमतपशौचज्ञानविज्ञाना॥ आस्तिकमतिस्वामाई
 शभक्तीजाना॥ स्वभाविकविषुधर्मअसकिनी॥ श्रुपएउधिरतताछत्रिकेचिनी॥ बलअरुतेजश
 राएपतायामे॥ गोविषुसाधुरका मखकरेतामे॥ १९॥ नितिशास्त्रमेकहेजोरिति॥ नृपधर्मप्रजापाले
 जुतप्रीति॥ धर्मस्थापनधरापरकरही॥ देउनजोगपरदंडपुनिधरही॥ २०॥ वैवाविशेषधर्मकऊजोउ
 आस्तिकमतिदाननिष्ठासोउ॥ इअसंवेतामेसंतोषनयाकुं॥ ब्राह्मणसाधुमेवाकरनिताकुं॥ २१॥ द्वि
 जातिदेवगोवनकीसेवा॥ कपटवीनकरेशुधर्मभेव॥ विषुनितिकाककुंतिनप्रकारा॥ याज्ञनपटा
 वनसुधदानहास॥ २२॥ दाननलेनोविनआपतकाला॥ याज्ञनपटावनदोषदृगवाला॥ ताकीतीवि
 काओरचकुंप्रकारी॥ एकदृतिखेतहाटकनहारि॥ धनिलेजावेपिछेचुनचुनपावे॥ याकोनांमशि
 लोंछकहावे॥ २३॥ द्विपोरसंध्यावंदनजोकरही॥ द्विपोरखेतिअनुचितअनुसरही॥ निसयांचाएक
 अज्ञाचकएहा॥ चतुरमेउतमपुर्वकितेहा॥ २४॥ सोरठा॥ आवेजबआपतकाले॥ विषकुंवेवप्रअ
 रुछविजुंकी॥ दृतिसेहोवेदेहपाल॥ निचसेवाकबऊंनकरो॥ २५॥ चोपाई॥ धर्मरक्षालियेअायुध

॥३६॥

धारी ॥ आपतकालच्छत्री वैवृषट्टिचारी ॥ विप्रवृतीकुंभतुसुरं अरुतेहा ॥ नृपकि वृतिअबकडुं
हेतेहा ॥ २७ ॥ सकलप्रताकुंजनकरिएकुं ॥ विप्रविनकरलेवेनृपतेकुं ॥ विप्रछत्रिकुंआपतपरे
आई ॥ निचसेवातीभिनंदितकरहाई ॥ २८ ॥ होहा ॥ खेतबनिजगौरववि ॥ व्याजवेवाट्टिएकुं ॥ आ
पतकालेशुशुकी ॥ वृत्तिसोरवहीतेकुं ॥ २९ ॥ चोपाई ॥ द्विजातिसेवासेधनजोपावे ॥ शूद्रजिविकानि
गमब्रतावे ॥ आपतकालशुशुपरेआई ॥ ओरघोचादिकी वृत्तिकरेजाई ॥ ३० ॥ आपतकालसेमु
रुहेवेजबहि ॥ प्रायश्चितकरेचडुंबरनतबही ॥ निजवृत्तिसेपुनिवरतेतेहा ॥ सतसंगकरेकुसंग
तजिएहा ॥ ३१ ॥ सतसंगमुन्कीदनरककीदाता ॥ कुसंगविनडुजोनहीविरायात ॥ कामक्रोधरसन
मछरादी ॥ देभरहितसंतसाचेअनादी ॥ ३२ ॥ त्रियाअरुखेणपुरुषरसमांई ॥ आसकरहेधनहर
केतांई ॥ देभसेंसंतकीरिनिदेखावे ॥ असाधुएहिलछनसेंकदावे ॥ ३३ ॥ आसुरिसंपतअसंतमा
ई ॥ देविरहेसदासंतमेआई ॥ याविधनिश्चेकरिसंतसेवे ॥ असंतकुंकीसंगछोरदेवे ॥ ३४ ॥ सोरवा
नरअरुचाशुकीसंग ॥ होवेताकिबुधितेसिहोही ॥ सेवहीनुतउमंग ॥ संतअसंतकीसंगतजि ॥ ३७ ॥

चोपाई ॥ संतसेवारुचिहेसदाजाही ॥ दुर्लभलोकनहीकोउताहि ॥ ३५ ॥ पालहीनिजधर्मसबजेहा ॥
सतपुरुषघोहकरतजोएहा ॥ सुभगतिकबडुंनयाकीहोई ॥ कर्मकोफलनहीपावेसोई ॥ ३६ ॥ हरि
जनहोईमहापुजारतजेहा ॥ सतपुरुषघोहकरेजोतेहा ॥ तापरप्रभुनांहिप्रसनहोई ॥ सेवाकोफलन
हियावेसोई ॥ ३७ ॥ देहछोरकेजोनिमेजावे ॥ रोगक्षुधाकरउमरपीडावे ॥ संतघोहसेमहापुंसततक
ला ॥ आयुबनाशहोवेसंपतविशाला ॥ ३८ ॥ होहा ॥ सतपुरुषकुंसेवही ॥ जोचहहिकल्यान ॥ पुस्य
तिरथसेवेसदा ॥ विप्रधेनुऊतदान ॥ ३९ ॥ चोपाई ॥ तिरथदेवकीनिंदाकरेनेकुं ॥ जारतनिजवंशछे
दकतेकुं ॥ दानभोजनसेंत्रपतद्विजतोई ॥ जगतसहितप्रभुनिमसोई ॥ ४० ॥ एकब्राह्मणकीघोहबणी
आवा ॥ सकलजगतघोहफलसोपावा ॥ धेनुकेअंगमेतिर्यदेवजोउ ॥ निवासकररहेहेसबसोउ ॥
४१ ॥ एकधेनुकेपुजनमेआई ॥ तिरथदेवसबरहृतपुजाई ॥ एकगौवनघोहकरेनरतेकुं ॥ तिर्यदेवघे
हिहोरहेतेकुं ॥ ४२ ॥ चडुंबरनआगमविधिलाई ॥ देवब्राह्मणधेनुमानोमुदयाई ॥ चडुंबरनविन
जनहेयाकी ॥ चोरिहिंसाविनवरतिताकी ॥ ४३ ॥ सोरवा ॥ चडुंबरनकुंकेधर्म ॥ संक्षेपकरकेहममे

कहे ॥ आश्रम कुंके अनुकर्म ॥ धर्म क कुंतोय फन कुं मुनि ॥ ४४ ॥ इति श्री स्कंदपुराणे विष्णुखंडे श्री
 वास्तु देव माहात्म्ये श्री सहजानंद स्वामि शिष्य भूमा नंद मुनि कृत भाषायां विंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥ दोहा
 एक विश्वके प्रधायमे ॥ ब्रह्मचारिके धर्म ॥ नारदसे नारायण ॥ कहत भये सब कर्म ॥ १ ॥ चौपाई ॥
 फनु नारद क कुं आश्रम चारि ॥ ग्रही वनि जति अरु ब्रह्म चारी ॥ शुद्ध जो निदी ज संस्कार पाई ॥ सो ब्रह्म
 चारि धर्म क कुं मेताई ॥ २ ॥ वेद पदे रहि गुरु गेह ताई ॥ जित इंद्रि कौ धन मरत लाई ॥ शुचि रहै सत्य भाव
 ए कर ही ॥ सायं प्रभात काल हो म आचरहि ॥ ३ ॥ त्रिकाल संधा विष्णु पुजा करे कुं ॥ गुरु आग्याति से
 भिक्षा करिते कुं ॥ गुरु से वाकरे मित भोजि होई ॥ सकल वसन को साग कर सोई ॥ ४ ॥ ह्यान भोजन न पहे
 म कर ही ॥ तामे सो मुनि द्रत अनुसर ही ॥ नरवरो मार वे वस प्रति धीत नाई ॥ बडून घसे दंत दात न ल
 गाई ॥ ५ ॥ गुरु बोला वेत बपाव लेवे आई ॥ कपट रहित चरन शिर नाई ॥ शुद्ध कुं छो बिन पावे लेशु ना
 द ॥ भाषण करत न नास्तिक आदि ॥ ६ ॥ बिन छा मे न लपान न कर ही ॥ मेखला मृग चर म दे धर ही
 क मं र लु सित वसन खुनि दीउ ॥ यज्ञोप वित न पमाला धर सोठ ॥ ७ ॥ सोरवा ॥ दार प्रपाणि जटा शिर ॥ ३८ ॥

के रूफ धारत नाही कव कुं ॥ चंदन फन न शरि ॥ धरत न भूषन तेल अंग मे ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ काजल म
 द्युमास को संग सागी ॥ दार देवन भाषन मे न रागी ॥ याको पर सन्न रुचि त्राम न ते कुं ॥ त्रिया क्री उन अ
 दि करत न ते कुं ॥ ९ ॥ देव प्रतिमा विन दारु चित्र नारि ॥ ताकुं देखत छोट नां हि ब्रह्म चारी ॥ नंतु मेथुन
 सर्व देखत नां ही ॥ त्रिया गुन अ व गुन फन न त रगा ही ॥ १० ॥ गुरु दार चंदन करे विन छोई ॥ एकांतर हत न
 मात संगे सोई ॥ यह भांत ब्रत धर वेद पदि तोउ ॥ वैरागवान होत संन्यासी सोउ ॥ ११ ॥ यदपि विनेष्टिक
 ब्रह्म चारी ॥ विन वैराग ही बत ग्रह धारि ॥ ब्रह्म चरन च कुं भेद हे जानी ॥ एक त्रि रात एक वार स की ठानी ॥
 बार वार स को स कहे भेवा ॥ जिवत परयंत नेष्टी कतेवा ॥ १२ ॥ इति श्री स्कंदपुराणे विष्णुखंडे श्री वास्तु
 देव माहात्म्ये श्री सहजानंद स्वामि शिष्य भूमा नंद मुनि कृत भाषायां एक विंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ वा
 विवा के अ धाय विषे ॥ ग्रह स्थ धर्म हे तोऊ ॥ नारायण नारद से ॥ बर निदेखा ये सोऊ ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ना
 रद ग्रह होवे ब्रह्म चारि ॥ गुरु द छिना दे श न्की अनु सारि ॥ गुरु अग्या से विद्या समा सि लाई ॥ कुल उचिन
 नारि पर न न आई ॥ २ ॥ वय कर छोट पाप गे गरहिता ॥ नर लछन मुळ के वा विन किता ॥ प्रभु पसन ता वि

वाक् ०
॥ ३८ ॥

येग्रहिगहा ॥ देवकृषिपितृयज्ञतद्देहा ॥ ३ ॥ स्नानसंघाहीमपुजापावजो ॥ तर्पणवैश्वदेवप्रतिधि
 सो ॥ जपपुमकरनिममायेधनलाई ॥ प्रातपिताकृतदारनिजभाई ॥ ४ ॥ पोषणकरेयाकोविनसने
 ऊं ॥ घिउतनहीकबुग्रहिजनतेऊ ॥ अहंममतादेहगेहमेंसागि ॥ वैरनकरेपशुम्माईप्रतुरागी ॥ ५ ॥ अ
 नालसहीईसतजनकोसंगा ॥ करहिसदाग्रहिऊतउमंगा ॥ कामिलोभियसविकोसंगतेऊ ॥ ग्रहिकुं
 कबुनकरनोतेऊ ॥ ६ ॥ सोरता ॥ कामभावसेपरनार ॥ देखतनहियहीजनकवही ॥ आधकेदिननिज
 दार ॥ संगनकरेव्रतपरवविषे ॥ ७ ॥ चोपाई ॥ सांखरुयोगमैसिधभयेजो ॥ एकांसेमोहपावेकमा
 हिमेंसो ॥ निजभगनिमातकृताप्रसंगा ॥ एकांतेमोहउपतावेअनंगा ॥ ८ ॥ जोजोतगमैअकल्या
 कारि ॥ ताहिमुकटमणिविधवानारि ॥ याकोदरुपरसपुनिदो ॥ नरककृतफलहरतहिरो ॥ ९ ॥
 चलतविधवासनमुखभाई ॥ आतनपिछेदेशांतरजाई ॥ आत्रिषययाकिअहिकेरसमाना ॥ तासेंड
 रेग्रहीएक्षसीजाना ॥ १० ॥ भांगरुभांगंसनुगटादिजो ॥ बानिसेप्राणीदोहनतेसो ॥ अवतारचरि
 तगातअहोनिसा ॥ क्रियासबकरेजुप्रसनहोयईशा ॥ ११ ॥ दोह ॥ निमविशेषग्रहीराखही ॥ ता

॥ ३८ ॥

कुंकुंनिरधार ॥ कातिमाघवैशाकजो ॥ अधिकवृषाकुंकेवार ॥ १२ ॥ चोपाई ॥ पुमदेशकालमेकपा
 वकुंदाना ॥ देतजंतुसेदयाकरतकृतांना ॥ पुमदेशकालपुमपात्रहेतो ॥ धर्मवृधीकरकुंमेंसो ॥
 १३ ॥ भुविषेउत्तमदेशविशाला ॥ मोरधामतपकरेजामेंमएला ॥ हरिहरजनकोनिवासजो ॥ देशकि
 पुमताकोकारनसो ॥ १४ ॥ निमिशारएगंगाद्वारमथुरा ॥ अतोधांकुरुक्षेत्रप्रागयात्रिण ॥ क
 पिलपुलहकेआश्रमदीउ ॥ काशीप्रभासश्रीरंगपुनिमो ॥ १५ ॥ द्वाकापोष्करसिधपुरनामा ॥ एगेव
 रेवताचलहरिधामा ॥ गोवर्धनदृदावननेहा ॥ मलयदिशसकुलगिरितेहा ॥ १६ ॥ सोरता ॥ पुमनदीके
 स्तनुनाम ॥ युगनमेंप्रसिधजोहे ॥ गंगागोदाविकांम ॥ पुरनकरेसरखतिसरनु ॥ १७ ॥ चोपाई ॥ गोमती
 जमुनामहानदीएऊ ॥ शोणप्रदिनदपुमदेशतेऊ ॥ बडेउछवमेंप्रतिमापुजाई ॥ जेहिथलचीभिपु
 मदेशकहांई ॥ १८ ॥ भरुएफोतिकरहेतेहिरोए ॥ निरभयमृगविचरेबहोर ॥ अहिसकर्मकरनदारजे
 ऊं ॥ स्वधरमिप्रियदेथलते ॥ १९ ॥ जोतोथलप्रभुधरिअवतारा ॥ तेहितेहिदेशअतिपुमकेवार ॥
 तेहिथलअत्यधर्मकियेजो ॥ सहस्रगुनफलदायकसो ॥ २० ॥ पुमदृहीकरकालककुंती ॥ उत्तर

॥ ३८ ॥

यनदक्षिणायनदोई ॥ चंद्रकरजकोग्रहणविषुवंता ॥ क्षयदिनअतिपातअवणअनंत ॥ २१ ॥ दोहा ॥ द
क्षणायनकेपूर्वे ॥ त्रिसद्यदियुमकार ॥ उतरयनआयेपीले ॥ चालिसद्यदितिरधार ॥ २२ ॥ चोपाई ॥ एका
दशिसादक्षिसबनेऊ ॥ मनुआहीजुगादीतिथिजोतेउ ॥ अमांसवैधतिथुमकालजोऊ ॥ मासनक्षि
जुतयुनमसोउ ॥ २३ ॥ हेमंतशिशिरयुगलरुजुनेह ॥ यामेअंधारिसबअष्टमितेह ॥ निजअरुहरि
केजन्मदिनजेत ॥ निजअरुसुकतनारिसंस्कारसेत ॥ २४ ॥ अचानकधनमिलेअसकाल ॥ हरिजनमि
लेजबमहानमराल ॥ याकालमेदेचपितृयुजाजोऊ ॥ जपदानरुगानादीनयुतासोऊ ॥ फलदेवसबज
नकुंअनंत ॥ कालजानोपतनेयुमवंता ॥ २४ ॥ दोहा ॥ सतयात्रप्रभुएकहे ॥ पुजेसकलयुजात ॥ सिं
ओदक्षमूलैजल ॥ विवेसुंहालिरुपात ॥ २५ ॥ चोपाई ॥ अहिसकवेदविद्याजुतजोउ ॥ स्वधर्मभक्तीसे
तुष्टजोकोउ ॥ विष्टमोकीध्यानधरेउरमाई ॥ अैसेहिजसोपात्रकहाई ॥ २६ ॥ प्रभुएकांतिजनपात्रसतसो
ई ॥ नाहिरउरहेहरिनिवासोई ॥ हरिकेजनमेजोधनवांना ॥ छोबंधमंदिरकराईविधनांना ॥ २७ ॥ पु
जाप्रवाहचलावतकाज ॥ वापितडागकुपरेवतसमाज ॥ सुअनरससेविप्रसाधुजोउ ॥ जिमाइत्रय

नकरेग्रहीसोउ ॥ २६ ॥ अहिंसविष्टपुयागवृन्कीअनुसारा ॥ जनमउरुवकरेकृतसंभार ॥ भाडुकेकरु
पक्षदिनजेते ॥ क्षयदिनतिथ्यपरवपुनितेते ॥ मातपिताकीआधमेकरही ॥ तातबंधआधवृन्कीअनु
सरहि ॥ २७ ॥ दोहा ॥ देवरुपितृकर्मजेऊ ॥ करेतबहिनहरिभक्तकुंऊ ॥ जिमाईपुनहीपुनितेऊ ॥ प्रभु
सममानहिजनतजो ॥ २७ ॥ चोपाई ॥ देवकर्ममेंविप्रजिमेदोउ ॥ पितृमेंतीनजिमावेग्रहीसोउ ॥ दोउमें
एकएकजिमेंविप्रधार ॥ आधमेंबौतनहिकरेविस्तार ॥ २८ ॥ देशकालइयपात्रयुजाकाज ॥ यथाशा
खतांहिहोतसमाज ॥ आधमेंमांसकबुसुधतनखाहि ॥ घिडधमुनिअनपितृत्रयताह ॥ २९ ॥ मनवच
देहमेंहिंयानजेऊ ॥ प्राणिकीपित्रजमिमुलतेऊ ॥ हारदशास्त्रकीकुसंगसेतानी ॥ आधमेंमांसनखातक
बुआनी ॥ ३० ॥ हरिजतकरेग्रहिजनजोउ ॥ ब्रह्मचर्यआदियमकृतसोउ ॥ सोदिवसेअवहारिकर्मसागी
प्रभुपदमेंएकरेनोसहाणी ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ निजसबंधितनकी ॥ जन्ममरनजबहीही ॥ पुनिरिव्राज्ञिके
ग्रहणमें ॥ शौचपालनोसोहि ॥ ३२ ॥ चोपाई ॥ अवहारनिरणयकरनोउबही ॥ सागिरुविधवातजननात
बही ॥ नामेबडसागिरुविधवानारि ॥ धननाशकानहोतअभिवारी ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ किनधर्मग्रहीज

नके ॥ संक्षेपेकरिनेज्ज ॥ यथाविधिप्रनुसरही ॥ स्मरन्प्रक्षयप्रदतेज्ज ॥ ४१ ॥ **चोपाई ॥** त्रिलोकप्रज
 चज्ञांचारखेतकारि ॥ विप्रकेभेदभयेतृतीसंचारी ॥ त्रियाधर्मप्रबकजंमुनिनीई ॥ प्राहास्मरवपावेयामे
 नारिसीई ॥ ३८ ॥ स्मृवामनियतिसेवेषुकीसांई ॥ अधनरीगितृधुंकुमुदपाई ॥ युनिकरेस्मरदीक
 किसेवा ॥ भाजनउज्वलररेनिसमेवा ॥ ३९ ॥ स्वच्छगेहरवेनिसत्येपिरुकारि ॥ शुचिसहारहेसुसबोले
 विचारि ॥ क्रोधलोभहीसाचौरकर्मजेज्ज ॥ चंचलताउधतपणुतमितेज्ज ॥ ४० ॥ अधर्मिनरप्ररुनारिको
 संग ॥ ततिकेधर्मकरेप्रानितुसंगा ॥ जितइंदिप्ररुनमरनाजई ॥ पतिव्रताधर्ममेहेमुदपाई ॥ ४१ ॥ **सोर
 ता ॥** सधवानारिजोतोउ ॥ भक्तीकरेरमापतीकिसदा ॥ स्वतंतरवरतेनसोउ ॥ अबकजंविधवाधर्मसं
 नु ॥ ४२ ॥ **चोपाई ॥** विधवासेवेषुभुपतिभावलाई ॥ कामसबंधिगाथासंनेनगाई ॥ समिपसबंधिवितन
 रजगमांई ॥ आपतविनछेपज्ञोवतनांई ॥ ४३ ॥ धावतबाळकट्टरुपशंज्ञोउ ॥ विधवाकुंभूषणाहारनसो
 उ ॥ अवशाकान्तमेवृधकेसंगा ॥ भाषणसेनहिब्रतकोभंगा ॥ ४४ ॥ अवहारकान्तमेनरसेगाथा ॥ करे
 कबजंनारिप्रनाथा ॥ अववपकान्तइपरीजवही ॥ नरसेमेदानमेबोलेतवही ॥ ४५ ॥ यच्चजादीक ॥ ४२ ॥

जंतुमैशुनकारी ॥ जानिनजोतकबुविधवानारी ॥ सकलभोगकुंदेवेसागि ॥ एकवेरमितजिमेविनरागी ॥
 ४६ ॥ सतारसूक्ष्मवसनप्रलंकार ॥ दिवानिहप्ररुखाटतनेराए ॥ तांबुलभक्षणकरतनराह ॥ अंतन
 तेललगानतहीदेहा ॥ ४७ ॥ **दोहा ॥** कालसरपकुंदेखके ॥ विवतजुसंसार ॥ सुंपुरुषप्रसंगसे ॥ उरत
 जोविधवानार ॥ ४८ ॥ **चोपाई ॥** देखपुरुषमोहपावतमतीउ ॥ रमाविनप्रोरनारीनहिकोउ ॥ धर्मनिष्ठ
 निजश्रेयकरनारी ॥ पुरुषप्रकारछोतजोतनधारि ॥ ४९ ॥ चांदायणव्रतकबुआदिनेहा ॥ भक्तीसहि
 तकरेनिमकततेहा ॥ सुतपितादीतरुणवयवान ॥ तासैएकांतमेंरहेनसुताना ॥ ५० ॥ सधवाविधवाकु
 संगसागी ॥ स्वरजछपाइनरवतसुभागी ॥ तिनदिवसमनुषमृतभात ॥ रजस्वलाछोतनहिमुनिराजा ॥
 ५१ ॥ **सोरता ॥** चांडालिप्रथमदीन ॥ ब्रह्मघातिडुसरेज्ञानज्ज ॥ तिसरेरजकिसोचिन ॥ चोथेस्नानकरिशुद्ध
 हीहि ॥ ५२ ॥ त्रियाकेधर्मसंक्षेप ॥ करिकेकहेनारदतुमसे ॥ त्वालिनहीवेयाकीखेप ॥ धर्मरविसोस्मरवपावे
 सदा ॥ ५३ ॥ इतिश्रीकंदपुराणेविष्णुवंदेवामुहूर्तवमाहात्म्येश्रीसहजानंदस्वामिनिष्कण्ठभूमानंदमुनिक
 तभाषायांछविशोःध्यायः ॥ २३ ॥ **दोहा ॥** त्रयविंशकेप्रधायमें ॥ वानपुरुषकेधर्म ॥ युनिसंनारी

केकहे ॥ नारायनकृतकर्म ॥ १ ॥ चोपाई ॥ नारदनिमवानप्रस्थकेतीई ॥ एकावनवर्षेरवेककुंसीई ॥ त
 पसागीनिजसेवानुतनारी ॥ संगलेजावेताकुंवनचारी ॥ २ ॥ इतनलछन्नविनहोतजोदाग ॥ स्फुतकुंभलाई
 सागिवनमेवाग ॥ आलसभयसागितपरुचिवांन ॥ अग्निवालाकरवदोविनस्थाना ॥ ३ ॥ उनालेअ
 ग्निपंचतपेएकु ॥ त्रिशिरकंठबुडजलवसेतेकु ॥ चातुरमाससेमहेतलधाग ॥ जितक्रीधअरुईडीउदा
 रा ॥ ४ ॥ आसअरुपातरचितवस्त्रतेकु ॥ वल्कलअजिनपैरेअंगतेकु ॥ जितकंदकलअरुनिमारा ॥
 अग्निअर्कपक्कअपक्कअप्रहार ॥ ५ ॥ जाकेमुखमेंदंतनहोई ॥ पद्यासंकेतुटिपावतसोई ॥ मध्यानकाले
 अन्नअपान्त्रोअग्ना ॥ पावतसंचितकबकुंनयाना ॥ ६ ॥ सोरवा ॥ आपतविनअन्ताएकु ॥ पातनखे
 तिकीमध्यान ॥ फलअरुअन्नकुंसेतेकु ॥ अग्निखिचरुगुणैडसकरे ॥ ७ ॥ चोपाई ॥ कमंडलुडं
 उअग्निहोमसमाजा ॥ रवेपंचकेवाभैलेदंतमुनीगना ॥ मर्दनविनस्तानसोकरही ॥ भुतलसेंनतपच
 यतुस्मचरही ॥ ८ ॥ वानपुरुषकेप्रकारचोऊ ॥ गिरेफलपावतफेनपाजोऊ ॥ प्रभातउविदेखेदिशका
 उ ॥ तासंफलादिकलाईकेपाऊ ॥ ओंडुबानामसोउकहाऊ ॥ ९ ॥ नवांअन्नहोवेतवसंचितनरवाई ॥ ४२ ॥

वालखिल्यनांमतिसराकहाई ॥ विनदुषीअन्नजिततेकु ॥ वैरवानसवनिचोथोहेनेकु ॥ १० ॥ वसे
 वनबारवरषतजिगेहा ॥ अष्टवाचारवाएकदेह ॥ संमासिहोवेतीब्रवैएगिजोउ ॥ विनवैएगिवसे
 वनसोउ ॥ ११ ॥ दोहा ॥ चौथेआश्रमअसुरे ॥ सबविधकरिकेसाग ॥ कंधाकोपिनसोएरसे ॥ वैरवास
 जुतराग ॥ १२ ॥ चोपाई ॥ जलगलणुदंडकमंडलुधरही ॥ सदाचारद्विजगेहभिक्षाचरही ॥ एकगेहनिस
 जाचतनाई ॥ निरसमितजमेएकवेरताई ॥ १३ ॥ वानप्रस्थगेहकीभिक्षातेकु ॥ जतिजिततसुधिकारक
 तेकु ॥ मांसमदिगसुधैतितबही ॥ छद्वादिनपाराककरेतबही ॥ १४ ॥ सौचअचारसेसुधरहाई ॥
 शुद्धादिकंपरसतनाई ॥ विष्णुपुजेनिसनिवेदपावे ॥ बारअष्टाक्षरविष्णुमंत्रगावे ॥ १५ ॥ असतशास्त्री
 सेवादनकरही ॥ स्वजिविकालियेकथानचरही ॥ असतगुंथमेंसक्तनहोई ॥ वृत्तिकेवसनहोवतसोई
 १६ ॥ सतगुंथभासकरेमोक्षकजा ॥ मठमदिनाहीवांधेमुनिएजा ॥ अहंममसागिचोमासामांई ॥ वि
 नअपदअौरांगमनताई ॥ १७ ॥ निजहरिरुपज्ञानशास्त्रसेंजान ॥ यमनिमरतेजतिदयाअानी ॥ दो
 रवा ॥ कामक्रीधलोभभयवैर ॥ रखेनहिअनधनअादीअरु ॥ ज्ञानवैएगकतथैर ॥ धनत्रियावस्त्र

वासु
॥ ४३ ॥

अ-३३

संगे भ्रष्ट न होहि ॥ २८ ॥ **चोपाई** ॥ चंदन कुल तैलादिक जानी ॥ ग्रहण करि होत जति देह मानी ॥ जाकुं
 जित नो होत हे अहार ॥ ताहि उर काम लिये फुरही दार ॥ २९ ॥ निरस मित भोजन हितकारी ॥ ग्राम्य गा
 थासुं ने न हि धारि ॥ जाहि सुं ने हरिकथा रुची तावे ॥ मोक्ष सिधिसोया गिगमावे ॥ ३० ॥ चित्र नारिसाणी
 जीत छोट नोई ॥ भ्रष्ट भये भूरि दारदुर्ग पाई ॥ वैराग्य भेदे जतिके चक्रं अंशा ॥ कुरि चक्र बज्र दहं सपर
 महंसा ॥ ३१ ॥ सत्यासवान पुरुषा अमदोउ ॥ दुष्कर कतिमें निषेध देसोउ ॥ तीव्र वैराग नित वासु देव संता
 हरि से वे अहो निशि बुधिवंता ॥ ३२ ॥ भक्ती विनां क्षणया कुं न जाई ॥ सो हरि जन को धर्म कहई ॥ सब गुन
 जु न हरि विमुख जोउ ॥ सबंधि कुं हरि जन तजे सोउ ॥ ३३ ॥ हरि प्रसादी में चरणामृत डारी ॥ तुलसि क
 त अन्न जिमें सुभचारि ॥ स्त्री अरु स्त्री में प्रासुं जनतेता ॥ संग कर सं प्रावे ध्यान में तेता ॥ ३४ ॥
 वासु देव विन पुरुष की उनाई ॥ नारि कुं देव तोमी दून पाई ॥ स्त्री रूप देवि ब्रह्म रूप ने वे रवेरा ॥ ते हि थल
 त्यागिन वसे काल तेरा ॥ ३५ ॥ वसवे से निज धर्म नाश पावे ॥ बट होष सं स्ती दूरी कर दावे ॥ काम
 क्रीध ली भर सखा देतेहा ॥ स्नेह अरु मान सागन जोग तेहा ॥ ३६ ॥ कहे हि धर्म में जो नो नाश होई ॥ ॥ ४३ ॥

॥ ४३ ॥

प्रायश्चित करत वासु क हो मोई ॥ या विधवर्णा अमके धर्मा ॥ कहे हरि जन के संक्षेपे कर्मा ॥ ३७ ॥ **सो
 खा** ॥ जति अरु वरणि होउ ॥ धर्म में रही ब्रह्म लोक पावे ॥ रुषी लोक वान प्रस्थाउ ॥ ग्रहस्थ स्वरगया
 वेधर्म क्रतु ॥ ३८ ॥ हरि भक्ती जु त धर्मा ॥ जो जन रावे सो देह तजी ॥ विष्टु लोक पावे अलु कर्म ॥ करिक हे
 हम मोक्ष रिति ॥ ३९ ॥ इति श्री कंठपुराणे विष्टु वंदे श्री वासु देव महात्म्ये श्री सहजानंद स्वामि जि
 व्यभ्रामं दमु निह्न द्वाषायां त्रयो विशो ध्यायः ॥ ३३ ॥ **दोहा** ॥ ज्ञान स्वरूप चो विद्वामें ॥ सांख्य शा
 स्त्र नुत कीन ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञ पुरुष जी ॥ जान कुं मुनि प्रवीन ॥ १ ॥ **चोपाई** ॥ सुन नारद ज्ञान रूप क कुंतोई ॥
 जासे क्षेत्रादी कजा नियो सोई ॥ अक्षितोय निर्गुण दिव्य देह धारी ॥ परब्रह्म वासु देव अ वतारी ॥ २ ॥ अ
 गेथे अक्षर में एका एकु ॥ प्रधान जु त मुल प्रकृति तेकु ॥ काल स हित अक्षर ते त मांई ॥ लिन थे एति सु
 रत की मांई ॥ ३ ॥ ब्रह्मां र वन प्रभु इच्छे जव ही ॥ सकाल माया भई अक्षर सं त बही ॥ अक्षर पुरुष रूप
 पप्रभु होई ॥ ग्रहण करि काल वाक्की कुं सोई ॥ ४ ॥ सृजन इच्छी प्रभु हु गप सारी ॥ देवि माया कुंत ब भये
 जनु नारी ॥ प्रधान पुरुष की रिमाषा से ताई ॥ पुरुष प्रधान कुं से तो राई ॥ ५ ॥ **सोखा** ॥ पुरुष प्रधान वी

वेगर्भं धरेतासे भये ब्रह्मांडकोटी ॥ जेसे नारि कुंसे अर्भं ॥ तामहिएक कोबरजनक कुं ॥ ६ ॥ चोपाई ॥ पु
 रुषवीर्यदेम प्राकार ॥ धारत भये प्रधान सुदार ॥ तासें भये मद्दत त्व अरुणुपा ॥ तासे अहे कारजासे गु
 न त्रिरुपा ॥ ७ ॥ तमसे पंचमात्र पंचभूता ॥ रतसें दशार्द्धी बुधि प्राणानुता ॥ सत्वसें इंद्र देव मननुततां ॥
 चो विश्रत त्वनांम देवक हाई ॥ ८ ॥ वासुदेवने प्रेरज ब एकु ॥ ईश्वर वपु वि ए ज र चै ते कु ॥ सो वैराजनी ज
 स जे नार माई ॥ त्रै न किये वेद नारायण गाई ॥ ९ ॥ तार्दना भि ब्रह्मा जोगुणिते कु ॥ द्वादसे विद्युसुतो ए
 णिते कु ॥ तमोगुणि शि व ल लाट से जताता ॥ तेहि त्रिस्थल तिन दे वि भद्र अयात ॥ १० ॥ तामसि दुर्गा श्री
 सात्विकी जानी ॥ सा वि त्रि रा ज सी व स से फ हा नी ॥ दुर्गा रुद्र कुं र मा वि द्यु वार धा से ॥ सा वि त्रि भर्तृ पु नि
 ब्रह्मा की नारी ॥ ११ ॥ दुर्गा अर्भे भर्तृ चंडिका दि जे ति ॥ त्रयि आ ही शक्ती सा वि त्री अर्भे त्री ती ॥ श्री अर्भे
 दुसहा ह जारु भये उ ॥ तिन प्रकारे सो शक्ती के हे कुं ॥ १२ ॥ दोहा ॥ वैराजना भि कंज से ॥ प्रथम भये अ
 जते कुं ॥ जल विचक मल पर रहे ॥ अग्रे रु छु दे वे न ते कुं ॥ १३ ॥ चोपाई ॥ लोकरचनको ज्ञाननयाई ॥
 आप भये सो भि ज्ञानतनाई ॥ कोन ह म क हे सु भये युं वि चार ॥ कमलनालमें किन संचार ॥ वरष ॥ ४४ ॥

तलुं पाये नपार ॥ बाहेर निक सिठा दे आंत होई ॥ अट्टशार्द्धी श बोलै तप तप सोई ॥ १४ ॥ संनिवचन व
 क्ताकुनजोई ॥ गुरुउप दे श सुभां नि अत सोई ॥ देव वरष सहस्र तपे तब ही ॥ तपसे भये शुध मन अ
 जत ब ही ॥ १५ ॥ समाधिमें वैकुंठ दे वार्द ॥ कहि अत कुं सो क कुं मे गाई ॥ माई कतिन गुन ज्ञा हि में नाई ॥
 कालमाया भय रं च न जार्द ॥ १६ ॥ तेत के बुं त में ब्रह्मा जोगु ॥ श्री वासु दे व कुं दे ख त सी उ ॥ घन सां म दि अ
 सुर ति भुज चारी ॥ संव चक्र ग दा क म ल धारि ॥ १७ ॥ रत्न कि रित पि तां ब र पेरि ॥ नंद गुरु डा दिक रहे हे धे
 रि ॥ चक्रु भुज धर हरि पार्थ द जे कुं ॥ अष्ट सि धि षट भग से वे ते कुं ॥ १८ ॥ शोर ता ॥ सिंह म न पर श्री नु त ॥
 बैवे जो प्रभु कुं दे वि न प्र ज ॥ जो रि क र ल मे मानु हू त ॥ हर खि त म न प्र ति वि रं चि ख डे ॥ १९ ॥ चोपाई ॥ प्र
 भु क हे वि रं चि प्र स न मो य कि ना ॥ तो र त प ने व र भा गो प्र वि न ॥ सं नि प्र भु व च वि धि ज्ञां ने तां ई ॥ तप मे
 प्रेर क अ स वि न नां ई ॥ २१ ॥ विश्व कुं सृ ज पु नि ता कुं तां नि ॥ प्रा ग त व र वि धि प्र भु सें पि छो नि ॥ प्र ज्ञा मृ ज
 न कि श न्की स्वा मि ॥ प्र भु त म दे कुं मो य त मी न मा मी ॥ २३ ॥ ता हि में ते से बं ध न न हो ई ॥ कर कुं क्क पा मो प
 र तु म सो ई ॥ पु नि प्र भु वि धि सें बो ले हि त ल र्भ ॥ तो र म तो र थ हो से सि धि दा ई ॥ २४ ॥ वैराज रूप मो से ए क

वाक्ये
॥ ४५ ॥

अ. ३४

तायाई ॥ समाधिसे प्रजासृजोत्तमजर्ष ॥ तोसे कारज जो सिधन होई ॥ तब मोकुं समर करे गोसोई ॥ ३४ ॥
 दोहा ॥ इतनेवचन कहि प्रभु ॥ भयेउ अंतर ध्यान ॥ करि वैराज से एकता ॥ अज्ञ जो समाधि वान ॥ ३५ ॥
 चौपाई ॥ वैराज देह में लिन लोक ते ॥ सब देवत अज्ञ समाधि में ते ॥ सर्ग करन कि सामर्थ्य पाई ॥
 रचना करन कुंधारे मन मांई ॥ ३६ ॥ सर्गात्पारंभकाले प्रथम भयेउ ॥ ब्रह्म जोति प्रयत्नादिसते ॥
 ताको स्थापन ब्रह्मांड मध्य किना ॥ पुनितप भक्ती में शुद्ध विना ॥ ३७ ॥ मन से मन कादिक स्वजि चारि
 ताकुं अज्ञ कहे सृजो प्रता धारि ॥ मन कादिक न माने वच ए ॥ तापर कौ ध किये तात ते ॥ ३८ ॥ कौ
 धातुर ब्रह्माके भाल मांई ॥ तमो गुणिरुद्र भयो दुखदाई ॥ नियम में कौ ध करि अज्ञ ए ॥ मन कुंसे सृजे
 प्रजापति ते ॥ ३९ ॥ अत्रि मरिचिक त्रयुलस्त अंगिरा ॥ वसिष्ठ क्रुदम भृगु दक्ष पुलहिरा ॥ युनि अ
 न रुद्रा से धर्म हरिताता ॥ पृष्ट से अ धर्म भयो विख्याता ॥ ४० ॥ मन कुंसे काम वदन से वा नि ॥ शुद्ध से कौ
 ध भयो नरक नि सा नि ॥ शौच दयातप सत्य धर्म पावा ॥ ब्रह्माके चक्र मुख से बनि प्रावा ॥ ४१ ॥ सौर ता
 पूर्व मुख से रक्व देव ॥ यत्पुर्भयो दक्षिण मुख से ॥ पश्चिम कुंसे वा मभे द अर्थ भयेउ तर मुख से ॥ ४२ ॥ चौ

॥ ४५ ॥

पाई ॥ मारव तिहास पुराण रचिने ते ॥ वरुवायु विश्वासा ध देव ते ते ॥ विप्र वाताही सब मुख से भयेउ ॥
 बाहु से क्षत्रि राजन उर वैराज ते ॥ ४३ ॥ याव से शुद्ध वात हृति नुत की ना ॥ ब्रह्म चर्य आश्रम रुह से प्रची
 ना ॥ जघन से ग्रह स्था अज्ञ ते ॥ उर वनाश्रम शिर संसास ते ॥ ४४ ॥ हृदा से पितृ जघन से अस्तरा
 म् सुगुद से नर्क निरुति पुरा ॥ ब्रह्माना रायण आत्म क तो ॥ अंग से सृष्टी किये कुं होउ ॥ ४५ ॥ ग
 धर्व सिध चारण य क्षनागा ॥ नग मेघ विदुतरा क्षस भागा ॥ सिंधु सरित दु मय श्रु पंखि तेहा ॥ स्थावर जंग
 म सर जे तेहा ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ सृष्टि रचे निज देव के ॥ नाति प्रसन विधि होई ॥ ध्यान करि हरिको उर ॥ स
 माधि से काये क कुं सोई ॥ ४७ ॥ चौपाई ॥ मनु मनु कृत कृषी सब की ना ॥ योके निवास लिये लोक रचई
 ना ॥ स्वर भुवर भुर लोक तिन नामा ॥ पूर्व कर्म लाय क दिये धामा ॥ ४८ ॥ याकी आ जिविकार चे विधि तेहा
 ताके नाम क कुं नो मुनि तेहा ॥ अमृत देव लिये अन्न नर काजा ॥ अन्नो अधि किये सो कृषी समाजा ॥
 ४९ ॥ अहिय क्षर क्षर अस्तरा सिंहाही ॥ याके लिये स्तरा मांस प्रतिपादी ॥ गो मृगा आदि कुं या सर चिह्नि
 विश्व देव कुं ह अन्न प्रविना ॥ मुर्त्त अमृत पितृ विधि होउ ॥ तिनके लिये क अन्न सोउ ॥ ४० ॥ हे

वास्तु
॥४६॥

अ-२४

स्वपिशाचादीउपासकनेतेह॥ दुर्गासंशुक्लीभईसोपुजेह॥ स्फुरामांसनिवेदधरेणह॥ ४१॥ कृषीआदी
 कउपासकनेते॥ सावित्रीअंससेभईपुजेतेते॥ शक्तीकुंपुजेमुनिअन्नलार्ई॥ सोविप्रपुजाविधिकह
 ई॥ ४२॥ श्रीजातशक्तीउपासनहार॥ स्फुरस्फुरनररुअरुतोदार॥ पयघृतवांडसेपुजनकरही॥ अ
 खिलप्रजासेपुनिविधितचरही॥ ४३॥ सोरवा॥ पुनजं पित्रअरुदेव॥ हव्यकअभ्रात्मकयागकुसे
 मनोरथपुराततखेव॥ करोगतिहारसबप्रसनहोई॥ ४४॥ चोपाई॥ पितृदेवपुजनकरेगेनेतेह॥ जरु
 रनरकमेंजायगेतेह॥ नारायणआत्मकब्रह्मानेकीता॥ मर्यादादेवपितृकर्मपुनिता॥ ४५॥ सब
 केधर्मसेतुरक्षाकाजा॥ तोजातिमेंमुखिताकुं कियेराज॥ वास्तुदेवदृष्टाकरिसृष्टिआहु॥ वैराजब्रह्मा
 संहोतहेतेहु॥ ४६॥ आदिकल्पेनामजाकेजेसेहोहि॥ ओरकल्पेवेदशास्त्रक्रियासोहि॥ अधिकारी
 केधर्मजोनेह॥ कल्पकल्पमेंपुनिहोतहेतेह॥ ४७॥ वैराजआत्मकविष्णुजोउ॥ मर्यादपालकोकपोष
 कसोउ॥ मनुआदिसेधर्मसेतुरहेधारी॥ अस्फुरनायकेतोरेतेहिवारि॥ ४८॥ ब्रह्मादिदेवप्रार्थनाक
 रहि॥ तववास्तुदेवअवतारधरहि॥ होगयेहोमेहेहरिअवतार॥ याकिसंरमानांहेकरनहार॥ ४९॥

॥४६॥

धर्मसाधुदेवरक्षाकाजा॥ याकेजोहीवधकरनमाहारजा॥ अवतारअवनिउपस्वधारी॥ वेरवेरवी
 चरहिजनशुभकारी॥ ५०॥ दोहा॥ वास्तुदेवभगवानसो॥ प्रकृतिपुरुषकेमांई॥ अन्वितहेपुनीजक
 मे॥ धाममेप्रथकरहार्ई॥ ५१॥ चोपाई॥ अग्निवरुणअश्विनसेआपे॥ कार्यंमाराहेनिजनिजधाम
 आपे॥ तैसेंईवाअखिललोकतांई॥ व्यापिरहेस्फुलिनितधाममांई॥ ५२॥ सर्गपैलेशुद्धसच्चिदानंदा॥
 निर्गुणएकसदारहेखुछंदा॥ तैमेंअन्वितहेतीभिएहु॥ निर्मलरहहिआकाशमांईतेहु॥ ५३॥ भूज
 लतेजवायुमेंनभआई॥ निर्मलरहेतेसेईवाकहार्ई॥ सर्गकेपूर्वेजेसेथिएहु॥ आसंतिकलयमेंरहेतेहु
 ५४॥ वैराजपुरुषनामहेजोउ॥ सर्वोतजांमिईश्वरसोउ॥ ताकेरुपब्रह्मविष्णुशिवतिना॥ गुणवत्क
 हिक्रियाभिनभिना॥ ५५॥ ब्रह्मासेभयनरअस्फुरस्फुर॥ अल्पज्ञपरतंत्रजिवजतरु॥ ईश्वरअरुसब
 जिवकेदेह॥ महदादितलमयक्षेत्रनामतेह॥ ५६॥ सोरवा॥ देहकेजाननहार॥ क्षेत्रज्ञनामकहावही
 असेअष्टप्रकार॥ लछनकतजानेजानतेहु॥ ५७॥ क्षेत्रअरुक्षेत्रकेजान॥ प्रधानपुरुषमुलमायाका
 ल॥ पुरुषोन्तमभगवान॥ अक्षरअरुभेदअष्टआहु॥ ५८॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेविष्णुसंदेशीवास्तु

देवमाहात्म्ये श्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदमुनिकृतभाषायांचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ दोहा ॥ पंचवित्रकेऽप्रधायमे प्रलयचक्रप्रकार ॥ देववायेवेगगहित ॥ पुनिभक्तीनिरधार ॥ १ ॥ चौपाई ॥ नारद्वेगगपलछनसीई ॥ नारावंतवस्तुमेंऽप्ररुचितीई ॥ मायापुरुषादिकभयेतीदेहा ॥ हरिकालवाक्की हेंनाशपावततेहा ॥ २ ॥ प्रसक्ष्मनुमानघटादिनाचा ॥ त्राहिकश्रुतिऽरुकहेईतिहासा ॥ नामरुपकीऽप्रससताएकु ॥ जिवकीससताकोनिश्चयतेकु ॥ ३ ॥ आसंतिषादृतनिसनिमिता ॥ प्रलयसेकालगमनकीता ॥ निसप्रलयलछनएकुजातो ॥ जिवकेदेहक्षयप्रतिक्षणवानो ॥ ४ ॥ बाल्मतरुणवृद्धदेहक्षयकारी ॥ कक्ष्मकालगतजितातनविचारि ॥ सुंफलकिट्टधिरगतनोई ॥ कालगतियाविधकहाई ॥ ५ ॥ दोहा ॥ बाह्यादिवयकेविषे ॥ पावहिदुखऽप्रपार ॥ जायतऽप्रादिऽप्रवस्था ॥ शोभिदुखऽप्रागार ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ अंधात्मऽप्रधिभुतऽप्रधिदेवनाम ॥ बद्धदुखपावहिजिवसकामा ॥ हाहाकृतमराथीऽप्रबधरनारी ॥ मरनलगिऽप्राईपस्त्रीदुखभारि ॥ ७ ॥ रवागयोवाद्यमोरतातकुऽप्राई ॥ कृतबहुकुंकुटिसरपनेधाई ॥ हाहाद्वेलेनऽऽप्रनलजाए ॥ मनुसवरशियांजुतपटार ॥ ८ ॥ हाहाऽप्रबतोप

रेड्काला ॥ केसेजिवेगोछोटमोरबाला ॥ चणकपासतिलखेतमेंभारि ॥ भयेथेऽप्रबदीयोहेमनेजारी ॥ तस्करखुंछगयेधनजोउ ॥ हाहाबेलखेजातहेसोउ ॥ राजानेदंडकियोऽप्रनिभारी ॥ हाहात्रात्रुऽप्रवगयेमोकुंमारी ॥ १० ॥ किनकुंकुंकसेकरुमोरमाता ॥ अभिचारिभईलोकविरायाता ॥ लेगयात्रात्रुऽप्रबमोरनारी ॥ हाहाविषरवाईदेगेदेहपारि ॥ ११ ॥ हाहाकृतेछलेगयोस्वसामोारि ॥ अग्निमारेगेबचनटीगठारि ॥ ज्वरअथामेमरजातहेभाई ॥ हाहाकहोस्करवदेतमऽप्राई ॥ १२ ॥ सोरवा ॥ याविधगतहेसंसार ॥ प्रारब्धदुखकुंभोगहीसब ॥ जन्ममृत्युसुवारंवार ॥ बालजोबनदृधसंबंधिदुख ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ प्रारब्धकेऽप्रतेमृत्युदुखदाई ॥ आतहेताकीकछुउपमानाई ॥ मरकेनरकमेंमहादुखपावे ॥ सोदुखमोगिचोरसिमेंऽप्रावे ॥ १४ ॥ कर्मकेऽप्रधिदहीऽजनएकु ॥ बेरबेरजनकमेंकरेयुनितेकु ॥ निसप्रलयनारदऽप्रसकितो ॥ सूक्ष्मदृष्टिसंयाकुंतुमचिनो ॥ १५ ॥ कहुंऽप्रबनिमितप्रलयनेहा ॥ ब्रह्माकीरजनिमेहीनहेतेहा ॥ सहस्रचोकडिऽप्रजदिनमानो ॥ सहस्रपुनिरजनिमेंगानो ॥ १६ ॥ अहोनिशिमीलिकत्मकहाही ॥ दिनमेमनुचतुरदवाताहि ॥ स्वायंभुस्वारेविषयंतमएकु ॥ तामसरेवतचाक्षुष

वास्व ०
॥ ४८ ॥

एक ॥ १७ ॥ आद्देवसावर्णीभौसनामा ॥ ब्रह्मसावर्णिरैच्यगुणधामा ॥ रुद्रसावर्णिसावर्णिमेरु ॥ दक्ष
सावर्णिनामंभ्रतकेरु ॥ १७ ॥ एकोत्तरचोकडीमनुवयकीना ॥ ब्रह्मदिनमेंहीतचोदप्रविना ॥ देवव
र्षेवारहजारताई ॥ चोकडिएकइतनेमेंकहाई ॥ १८ ॥ दोहा ॥ चतुर्दशमनवंतरसो ॥ जबहियुरनहोई ॥
अज्ञकोसंध्याकालजो ॥ नारदज्ञानकुंसोई ॥ २० ॥ चोपाई ॥ सायंकालेवैराजब्रह्मजोउ ॥ स्थितिकी
शक्तीतामिलेतसोउ ॥ वैराजसेरुद्रभयेहेजेऊ ॥ त्रिलोकिहरनइछततेऊ ॥ २१ ॥ शतवर्षनहिभयेवर्षा
ता ॥ थोरबलवाननिवकीक्षयदात ॥ प्रलयकालकेसूर्यकीनेहा ॥ किर्णभुमिरसजारततेहा ॥ २२ ॥
सरनदीसिंधुसबंधिजलजेऊ ॥ शोषगयोलोकक्षयकतेऊ ॥ स्थारवर्जगामचिकावाहीना ॥ कुर्म
पितसमभईभुविना ॥ २३ ॥ कालाग्निरुद्रभयेशोषमुखमाई ॥ दशलोकदेततुरतजलाई ॥ सातपाता
लभुरभूवरखरतिना ॥ महरलोककुंउजडकरदिना ॥ २४ ॥ भूस्वरमहरलोकवासिदेवा ॥ पलायनक
रजनलोकवेना ॥ निवृत्तिधर्मनिष्कृषीसिधहोई ॥ भुतलजुसंगयेरूषीलोकसोई ॥ २५ ॥ सोरठा ॥ स
वर्तकनाममेघ ॥ अतिघोरआकाशमेंचरे ॥ अहागततुल्यबिंदुवेद्य ॥ बिजसहितभयंकरगरजे ॥ २६ ॥

अ-२५

॥ ४८ ॥

चोपाई ॥ धुम्रतुल्यकोउन्नतिपितवाना ॥ कुमुदतुल्यकोउलाखरसमांन ॥ वासपिच्छसमअतिस्थु
लधाए ॥ शतवर्षअहोनिश्चितलडारा ॥ २७ ॥ अनलज्वालाकुंदिनबुझाई ॥ ब्रह्मांडमेंभेजेजलध्रुव
तांई ॥ सोजलमेंस्फुतेवैराजआई ॥ अनिरुधरुपवोषासनमांई ॥ २८ ॥ रत्नतमसतीगुणवद्रूपकीदेवा
निजनिजगुणनेतानेतखेवा ॥ वैराजउदरमेंपैठकेएऊ ॥ ब्रह्मासहितसबसोवततेऊ ॥ २९ ॥ ब्रह्म
रुपभयेजोतिततिनगुना ॥ निवृत्तधर्मसेबेहरिकुंनिधुना ॥ महरुप्रादिकचक्रलोकमेंताई ॥ वैराजको
स्तवनकरेमुदपाई ॥ ३० ॥ दोहा ॥ नारायणवैराजसो ॥ चिंतनकरितुरमांई ॥ वास्वदेवस्वरूपको ॥ स्फु
तेयोगनिष्कलाई ॥ ३१ ॥ चोपाई ॥ वैराजरत्ननिकेअंतेपुनिआऊ ॥ विरंचिज्जतरूषीदेवसबतेऊ ॥
वैराजउदरमेंउसनहोई ॥ निजअधिकारकरतपुनिसोई ॥ ३२ ॥ निमितप्रलयकत्थोहप्रतोई ॥ प्रा
कृतप्रलयककुमुनितीई ॥ त्रिलोकिक्षयकरनिमित्तोकिता ॥ तिनसोसावनअनवर्षमेविता ॥
३३ ॥ पंचासवर्षसेप्रारधकहाई ॥ द्विप्राधसेवैराजनाशपाई ॥ संहाररुद्रकेरुपसेएऊ ॥ विराटवपु
निजनाशकरितेऊ ॥ ३४ ॥ वास्वदेवरुपथानइछेतबहि ॥ मेघनहोतशीवर्षखुंतवहि ॥ कालाग्निबो

ने ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ वास्वदेवरुपथानइछेतबहि ॥ मेघनहोतशीवर्षखुंतवहि ॥ कालाग्निबो

वाक् ७
॥ ४८ ॥

वसुवमेकज्ञाई ॥ आत्राणकृतं अंतदेतजलाई ॥ ३५ ॥ तापिलेनानवर्षभयंकार ॥ सांवरतकमेधमुत्रा
लधार ॥ प्रधानपुरुषसें भयो जो जो ॥ प्रभुइछासें पुनिनासपाये सो ॥ ३६ ॥ गंधमात्राजलगिलिगयोत
वही ॥ भूमिनात्रा भये वारिमेतबही ॥ रसमात्रतेजगये जबपाई ॥ जलसवगयोपुनितेजमें समाई ॥ ३७
रूपमात्रावायुकरगयेयासा ॥ तेजकी भयोपुनिचायुमेनासा ॥ स्पर्शमात्रा कुंन भगयोपाई ॥ वायुकीना
त्रा भयोनभमाई ॥ ३८ ॥ अहंकारनेत्रा इमात्र कुपिना ॥ तमअहंकारमें नभभयोलिनग ॥ एतसअहंमेई
इनानेहा ॥ सत्वमेलिनभयं देवमनतेहा ॥ ३९ ॥ सोरवा ॥ अहंकारतिन प्रकार ॥ महत्त्वमें लिनहो भरे ॥
तत्वप्रधानमें संहार ॥ प्रधानपुरुषमें सो प्रायामें ॥ ४० ॥ चोपाई ॥ प्राकृतप्रलोकट्यामुनितोई ॥ कहिकुं
आसंति कहे तो सोई ॥ हरिइछासें जि वई श्वर हो ॥ मुलप्रायामें भये लिनतबसो ॥ ४१ ॥ मुलप्रायापुरुष
कालतिना ॥ अक्षरतेजमें भये तबलिना ॥ तब रहे पुरुषोन्मत्तनेहा ॥ प्रासंतिकप्रलयनामएहा ॥ ४२
हरिशक्तीसें चक्रं प्रकार ॥ प्रलयकरहिलोकसंहार ॥ तासें अखिलअसततानिजे ॥ त्रितिनरदेवे
रागरूपते ॥ ४३ ॥ वाक् देव विनइतरकर ॥ कालप्रायावसहे विननुरा ॥ तामेकचितितोरि हरिसेवा ॥ ४८ ॥

अ. ३५

स्नेहसेकरनि सो भक्तीकी भेवा ॥ ४४ ॥ भक्तीकेनवअंगकुंसें जो ॥ अनम्यबुद्धिभजे प्रभु कुंकी ॥ यावी
धकोजनभक्तकहाई ॥ तासमवह्वभरि कुंनोई ॥ ४५ ॥ स्वधर्मज्ञानवैरागजुनतेहा ॥ भक्तीसो धर्मएकां
तिकतेहा ॥ हरिहरितनके संगविनसो ॥ धर्मएकांतिनपावे जतनको ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ अमंगलविना
शक ॥ धर्मएकांतिकविन ॥ पुमुशुकोश्रेयकर ॥ साधनहमनहि विन ॥ ४७ ॥ चोपाई ॥ एकांतधर्मकी
सिधिइछे तोई ॥ क्रियायोगकरे मोक्षप्रदसोई ॥ वेदपुण्यमेगुह्यअग्रहरि ॥ तत्वकत्वं च धुषिसे
धारि ॥ ४८ ॥ विनवाक् देवनअग्रधकोहनी ॥ विनवाक् देवनमंगलकर्ता ॥ विनवाक् देवनदेव विख्याता ॥
विनवाक् देवनवांछितताता ॥ ४९ ॥ दोहा ॥ याकीनामएकचार ॥ जदपिअतांते देहनततजपे ॥ चांडा
लपावे भवपार ॥ याविधवाक् देवनारदभत ॥ ५० ॥ इति श्री स्कंदपुराणे विष्णुखंडे श्रीवाक् देवमाहात्म्ये
श्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदमुनिकृतभाष्यायां पंचविंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ षटविंशोऽध्याय
यमें ॥ क्रियायोगकेते ॥ अधिकारिजोतनहि ॥ वरनिदेवायेते ॥ १ ॥ चोपाई ॥ स्कंदकहेसावर्णिसो
गथा ॥ स्तंनिनारदतोकहिनितनाथा ॥ पुनिनारदउरमेमुदपाई ॥ धर्मएकांतियुछेनाशयणां ॥ २ ॥

॥ ४८ ॥

वासु ७ धर्मसिधिलियेकीयायोगकीना ॥ तार्हेज्ञाननमेंलज्जुं वृवीना ॥ नारायणकहेकीयायोगजोउ ॥ वासुदेव ॥
 ॥ ५० ॥ कियुजाविधिसेउ ॥ ३ ॥ पंचरात्ररुवेदमेंएहा ॥ ब्रह्मविधिवरमोपुजाविधितेहा ॥ युजनहारभक्तुरुचिके
 प्रकार ॥ ब्रह्मतेहसूत्रिकेभिविस्तार ॥ ४ ॥ समग्रपुजाकोपारलभावे ॥ याकारनहमसेक्षेपेसंनवे ॥ या
 येवैद्यमवीदिक्षाज्ञानकोउ ॥ वर्णाश्रमिनरद्वाराकृतसोउ ॥ ५ ॥ इतनेसबयामेहेअधिकारि ॥ युजाकरेसंनप्र
 थकउचारि ॥ सतशुद्धचक्रंवरनकीनारी ॥ मूलमंत्रसेपुजाकेअधिकारि ॥ ६ ॥ वेदपुराणतंत्रसंमंत्रलाई ॥
 तिनबरनपुजाकरेमुदयार् ॥ नितनिजधर्ममेंरहिसवएऊ ॥ कुरविनभक्तीसंयुजेप्रभुतेऊ ॥ ७ ॥ सौख्य ॥
 वैद्यमवीदीक्षाकेग्रहण ॥ प्रथमकरेसतगुरुसेनर ॥ ब्राह्मणजातिपुनिवर्ण ॥ एकांतिधर्मधारकहुंसे ॥ ८
 चोपार् ॥ ज्ञानरुभक्तीसंयनजोउ ॥ स्वधर्महीनगुरुकरनोनसोउ ॥ दाराकुंहेवजाकीमनहराही ॥ या
 विधगुरुकवकरनोनाही ॥ ९ ॥ श्लेष्णगुरुहुंकीदिक्षाजेहा ॥ ज्ञानरुभक्तीनज्ञानहीतेहा ॥ जेसेवंदपुरुष
 किनारी ॥ प्रतानपावेकषऊंकरवकारि ॥ १० ॥ याकारनसतगुरुसेपार् ॥ दीक्षानुलक्षिमालसुदार् ॥ उर्ध
 पुंड्रगोपीचंदनसेधारी ॥ उरललाटभुजदोउपरचारि ॥ ११ ॥ पुजाविधिकह्योनिगमनेजोउ ॥ गुरुसेजानीभ ॥ ५० ॥

७८ न्कारभेसोउ ॥ पोरचाचक्रुंघडीरहेजवनित्रा ॥ उठकेसंभारहिघडीएकईत्रा ॥ १२ ॥ दोहा ॥ हरिप्ररु
 हस्तिनके ॥ घडिएकरहहिनम ॥ सौचविधियुनिकरके ॥ इंतधावननिकाम ॥ १३ ॥ चोपार् ॥ पवित्रमृ
 तिकाअंगमेंलगार् ॥ मंत्रसहितस्नानकरेशुधिदार् ॥ प्रथममिजन्तंगमेंशुधहोई ॥ तिरथदेवत्रपण
 करेसोई ॥ १४ ॥ धोतवसनधरिशुधभूमिपार् ॥ उर्धपुंड्रकरेआसनलगार् ॥ संध्याहोमप्रादीककरके
 पुजासराजामेलांतपुनिहरके ॥ १५ ॥ युष्पचंदनवसनादीजेऊ ॥ मांसादीस्यवां वनिंततेऊं ॥ जननसंछे
 देवपितृचरेनार् ॥ केशकीदिआदीजंतुविनलार् ॥ १६ ॥ जमणिवानुकेपरसवधारी ॥ उत्तलकरिघंटा
 दिजलकारि ॥ घिन्नरुतेससेदीपकप्रजादी ॥ कुराकंबलपरुआसनवादी ॥ १७ ॥ काष्ठकंप्रासनवर
 जितार् ॥ यज्ञकाष्ठलोहविनबिहार् ॥ प्रभुकेसनमुखपुतकवारी ॥ प्रतिमापुजहीरुप्रथप्रकारी ॥ मानसी
 रेतिकीमृतकधारी ॥ जिलामणिलिदाराचित्रधानुहुंकी ॥ सांमश्रुतपितरुक्वानप्रभुकि ॥ १८ ॥ द्विभुतक
 रकीप्रतिमाजेहा ॥ करमुरलिज्जुतकरमितेहा ॥ यज्ञतमणेकरचक्रधरही ॥ तववामभुजमेंचांखपकर
 हि ॥ यज्ञानमणैमेयद्यधार् ॥ अग्रभयदेनोतववामकरमार् ॥ १९ ॥ चक्रभुजमुरतीकरमकीजोउ ॥ संख

चक्रगदापद्मधरसीउ ॥ चक्रंभुजकेवामश्रीरमाजेह ॥ द्विभुजवामश्रीरराधिकानेह ॥ २० ॥ सोरवा ॥ द्विभुज
रुचक्रभुजदीउ ॥ मूर्त्तिकेप्रवैडीतहोवेजबही ॥ सिध्दिदायकहेसीउ ॥ पुननहारकुंपुरलक्षणगा ॥ २१ ॥ चौपाई ॥
वाक्देवतिगरमाद्विभुजधारी ॥ पंकजधरवस्तुक्तमूलंकारि ॥ हसतवदमिद्विभुजराधातीउ ॥ कामेक
मलफुलमालाधरसीउ ॥ २२ ॥ चलभ्रचलदीउ प्रतिमाकहार्द ॥ आवाहनविसर्जनभ्रचलकुंनार्द ॥ अ
चलमूर्त्तिकेअंगदेवनेता ॥ आवाहनविसर्जनकरनातेगा ॥ अचलमूर्त्तिकेपुनकरनेजेउ ॥ दिवानिमछो
उमनपुरववेरसीउ ॥ सालग्रामकीसेवामार्द ॥ आवाहनविसर्जनकरनीनार्द ॥ २३ ॥ चलमूर्त्तिकोअचकं
नेहा ॥ आवाहनादिककरहीतेहा ॥ चित्रभ्ररुकाष्टिकेमूर्त्तिनेति ॥ जलचंदसेनपुजेतेति ॥ वसनकुंसेमां
जनीअति ॥ २५ ॥ चलमूर्त्तिकेपुननहार ॥ नतरपुरवसनमुखवार ॥ योचप्रमाणेसाराजामलार्द ॥ प्रभुकुंडु
जनमहासुदपार्द ॥ २६ ॥ कपटविनभ्ररुभक्तीसेजेउ ॥ अर्पणकिनअंबुसेपुसुसोउ ॥ अतिप्रसनहोत
हेनबही ॥ अतिलपुजाकीकहाकजंतवही ॥ २७ ॥ दोहा ॥ अछाहीनतोअपही ॥ हेमरलचक्रअत ॥
ताकुंप्रभुनलेतही ॥ होयअतिवीप्रसन्न ॥ २८ ॥ याकारनभक्तीकृत ॥ कृष्णभ्ररचहिजेउ ॥ निजमंगलके

७७

कारने ॥ प्रभुरिऊवहीसीउ ॥ २९ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेविद्युत्वंडेश्रीवाक्देवभाह्वात्मेश्रीसहजानंदखा
मिनिष्पभूमानंदमुनिहृतभाषायाषडविशोःध्यायः ॥ २६ ॥ दोहा ॥ पुनामंडलकीरचना ॥ सप्तविंशमे
किन ॥ तामेअवतारशुंगेकी ॥ स्थापनहेसीचिन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ नारायणकहेधरातलएऊ ॥ रवननहिं
चनलेमनव्रीधितेऊ ॥ बकुविधरंगसेपुमिसीभार्द ॥ चक्रंपदपीठधरेउतामार्द ॥ २ ॥ पूर्वमुखवेरकेपुनन
हार ॥ पितकेपादचक्रकोणमेंधारा ॥ तामेधर्मादिकसिंहरूपा ॥ स्थापनकरेचक्रंपादमेंअनुपा ॥ ३ ॥ अ
ग्निकोणमेंउलधर्मा ॥ नेऊतमेरक्तज्ञानअनुकर्मा ॥ वायुमेंपितवैराग्यकीवाना ॥ इंद्रानकोणसांम
अशुभस्थाना ॥ ४ ॥ मनबुधितितभ्रहंकारजेऊ ॥ हरितरक्तश्वेतसांमतेऊ ॥ पितकेगात्रमेदिवाजोचारी
तामेंस्थापनकियेउधारि ॥ ५ ॥ सोरवा ॥ सततमसत्वज्ञोगुण ॥ रक्तरुश्वेतसामवानतेऊ ॥ स्थापनकरही
निपुण ॥ पितवाटिपरतिनऊकुं ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ अंतः करणरुपगान्रहेजेउ ॥ दीदोशक्तीतामेस्थापहि
सीउ ॥ विमलाउतकरषिगोरअंगगा ॥ विणावतावतकृतउमंगगा ॥ वैरितवसनअलंकारधारि ॥ पूर्वमेप
धरातविचारि ॥ ७ ॥ ज्ञानादिक्रियाधरेदृष्टनमार्द ॥ रक्तभ्रंगिपितवसनसुहार्द ॥ एकमृदंगडुजितालव

वाक् ०
॥ ५३ ॥

अ-३७

जाई ॥ ८ ॥ पश्चिमदिशमें पधारई जोउ ॥ प्रहवियोगामामं गि सोउ ॥ मुरलिलालवसन धर दोउ ॥ ८ ॥ समा
ईवानामहे अंगवाना ॥ सामवसनविला धर कृतगाना ॥ उतरमें पधारत रुजोना ॥ अत्रुग्रहाएकपाटिपे
हा ॥ कर जोरि रहेवा देखेद जेहा ॥ द्विभुज अलंकार कृत सब तेहा ॥ १० ॥ दोहा ॥ श्वेतद्वीप पवित्र परे ॥ श्वेतवस
नसे कीन ॥ कमल अष्टदलताहिमें ॥ श्वेतकर्णिकाविन ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ कमलखेतकी द्वादश भागा ॥ प
त्र अणि सोबास्य करिसागा ॥ कमलविचमं कुंडालितिना ॥ समानभागमें करुं प्रविना ॥ ११ ॥ पैलेकुंड
लिकर्णिकास्थाना ॥ मध्यकुंडलिके सरकी जना ॥ तिसरि कुंमें कमलदलने कु ॥ पत्रके अग्रहे बाहीर ते
कु ॥ १३ ॥ कमलचक्रं गौरपुरचक्रुद्धार ॥ रंचनोरंगलाई विविध प्रकार ॥ यद्वा तंडुल कुंमें सोभाई ॥ कर्ण
िकाके चनवर्णितामांई ॥ १३ ॥ कमलदल अष्टदिशामे रुजोना ॥ करहि कंचनके अतिलालवाना ॥ पुर
की द्वा रपुरवमे जो कु ॥ रक्त अरु रसामंद शिणको सोउ ॥ पश्चिमद्वारकी हेहे मवाना ॥ उत्तरस्फटिकमणी
समाना ॥ १४ ॥ सोरवा ॥ पुर अरु रुकमलके विच ॥ पुष्पवि विधभांतिकरके ॥ तामधे क्रम अर्षवच ॥ वा
मभागे राधाकृत धरे ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ राधाक्रमके पीछे जोउ ॥ संकर्षण ब्रधर सोउ ॥ गौरशरीर संदर ॥ ५३ ॥

॥ ५३ ॥

धारि ॥ १६ ॥ प्रद्युमनप्रभुके जमणि अंगे ॥ चक्रभुजसामचमरकरे जोए ॥ वामअनिरुधमणितुल्यवां
ना ॥ लालबसन धरचमररुजोना ॥ किशोरेवयु अलंकार कृततिना ॥ रत्नमुकुट धरकरुं प्रविना
१७ ॥ अष्टके शरकमलके मांई ॥ हरि अंबतारतामे दो दो धराई ॥ पूर्वके शरमे वामन बुधा ॥ घनसामद
याहु ब्रह्मचारि रूधा ॥ श्वेतवसनदक्षकरकंजधारि ॥ अभयवामे ब्रह्मसूत्रदोउ शरि ॥ १८ ॥ दोहा ॥
अग्नि की एमें कल्कि ॥ रवदगपाणि धर सोउ ॥ पशुं राम पशुं धर ॥ स्थापन किने दोउ ॥ चौपाई ॥ लाल
लोचननटा धारौ देहा ॥ श्वेतवसन ब्रह्मसूत्र धर तेहा ॥ की धर हित अंबतार दोउ एहा ॥ १९ ॥ दक्षिणमे
हयग्रीव चण्ड ॥ हयवदन नर अंग चौबा कु ॥ शंखचक्रगदापद्म धर ए कु ॥ श्वेतांबर धर हे मतुल्य दे कु
२० ॥ वराहवदन नर देह भुजचारि ॥ शंखादि अयुधपितांबर धारि ॥ अथवा द्विभुज भुरे देहवाना ॥
वराहको असरु पसु जाना ॥ २१ ॥ नैरतको एमे मछकछ दोउ ॥ कटिसे निचे निज निरु पसोउ ॥ कटि
उपर दोउ पुरुबाकाए ॥ वामे शंख गदा नमणे धार ॥ स्यांम संदर देह धर हे दोउ ॥ आभुषण कृत करना
सोउ ॥ २३ ॥ पश्चिममें धनवंतरी जेहा ॥ अमृत धर श्वेतांबर गौर देहा ॥ नैर देह सिंहवदनसामरंग ॥ द्वि

व २१६

वासुदे
॥ ५३ ॥

भुजगदाचक्रधरकेन्द्रभ्रंशा ॥ ३३ ॥ **सीरवा** ॥ हंसदतात्रयहीउ ॥ श्वेतवारिरयोगिजटाधर ॥ वायुकीण
मेंधरेसोउ ॥ दंडकमंडलुकरदोउमें ॥ ३४ ॥ **चोपाई** ॥ आसगणोवाउतरमेंहीउ ॥ विद्यालनेनघनवां
मव्यासोउ ॥ द्विभुजश्वेतांबरवेदजटाधारि ॥ ब्रह्मसूत्रपवित्रानुतडारि ॥ ३५ ॥ गणपतिगजवदनए
कदंता ॥ रक्तवारिररक्तवसनवंता ॥ नागजनीईतुंदिलभुजचारि ॥ पावाञ्जकुसवरनिनमेंधारि ॥ क
रणकमेंसेवणधरजेडु ॥ गणेशवासुदेवञ्जवतारलेडु ॥ ३६ ॥ कपिलसनत्कुमारब्रह्मचारि ॥ त्रैष्टि
कईज्ञानकीणमेंधारि ॥ तामेंकपिलवांतश्वेतवारिण ॥ श्वेतांबरकंतअभयधरधिए ॥ सनत्कुमारपंच
वर्षकीबाला ॥ द्विगंबरछोटेगिरपरवाला ॥ ३७ ॥ **दोहा** ॥ केसरमेंअवतारकी ॥ याविधस्थापनकीन
अष्टदलमेंतोपार्षद ॥ स्थापहिपुजाप्रविन ॥ ३८ ॥ **चोपाई** ॥ विश्वकर्मेनगरुडजिहीउ ॥ पुरवदलमेंधर
हिसोउ ॥ अग्निकीणमेंप्रवलवलजेहा ॥ कुमुदकुंभूदाक्षदक्षिणामेतेहा ॥ ३९ ॥ नैऋतमेंसकंदनेद
नामा ॥ जयंतश्रुतदेवपश्चिमधामा ॥ जयवित्तयवायुकीणमांई ॥ प्रचंडचंडउत्तरमेंहार्ई ॥ ४० ॥ सात्व
तपुष्पदंतकितोरि ॥ ईशानकीणमेंधरेनियादोरि ॥ सबचतुर्भुजवांखादिधारि ॥ किरटकुंडलधरमि

अ-३७
॥ ५३ ॥

नाकारि ॥ घनवांमदेहपितांबरहारि ॥ ३९ ॥ **दोहा** ॥ अष्टदलविचविचमें ॥ सिधिराष्टकैधाम ॥ पू
र्वादिदिशकीणमें ॥ स्थापहिभिन्नभिननांम ॥ ४३ ॥ **चोपाई** ॥ अणिमालघिमाप्रातिप्राकामा ॥ महि
माईछितावश्रितानामा ॥ कामावसाईनाअष्टमिजेहा ॥ भूषणकृतकंचनवानदेहा ॥ वेणुविलादी
कवाजितरधारि ॥ पैरेविचित्रवसनअंगभारि ॥ ४४ ॥ अष्टदलकेतोअग्रभागा ॥ तामेंवेदवाफ्छुधरे
नुतएगा ॥ पूर्वदिशमेंरुगवेदजेडु ॥ जपमालकृतश्वेतवानतेडु ॥ ४५ ॥ वामनअंगलंबीदरएहा ॥
कमलनेनश्वेतांबरतेहा ॥ यजुर्वेददक्षिणदिशामांई ॥ सामाम्अंगंक्रुशीदस्करहार्ई ॥ ४६ ॥ पितनय
नपितदेहस्थुलकंठा ॥ लालपटडाबेकरमालगंठा ॥ जमणकरकुंभेवज्रधारि ॥ यजुर्वेदकह्यो वि
स्तारि ॥ ४७ ॥ पश्चिममेंसांमवेदहेनेडु ॥ तेजस्करजसमदीरघदेडु ॥ जमनेजपमालवांगवामामांई
कंचनमयसबवसनसुहार्ई ॥ विद्याललोचनगावेमुदपार्ई ॥ ४८ ॥ अर्थवणउतरमेंधरना ॥ श्वेतां
गसांमवसननुतकरना ॥ खटयोअंगगतमनेकरमांई ॥ डाबेमेंतपमालधार्ई ॥ रक्तनयनेतेअमल
समांता ॥ वयजंसेवृद्धहेअर्थवाना ॥ ४९ ॥ **सीरवा** ॥ अग्निकीणकुंभेंधर्म ॥ शास्त्रकमलकआसनप

वासु ०
॥ ५४ ॥

अ-२७

र ॥ श्वेतवारिरुक्तमर्म ॥ मोतनमालात्राजविकर्म ॥ ३८ ॥ **चोपाई ॥** सांख्यकोनेकृतकोणमेंनिकेत
 वडउदरकेवानवस्रंगश्वेता ॥ दंडप्ररुतपमालाजीउ ॥ करकर्मंधरकेवदेसीउ ॥ ३९ ॥ वायुकी
 णामेवास्त्रहियोगा ॥ कंचनवानकयउदरनिरीगा ॥ उरउपरदोउकरकुंजारि ॥ नाकअणिपरनयन
 पसारि ॥ ४० ॥ ईशानमेंपंचरात्रश्वेतवांना ॥ वनमालाकृतकरहिस्रजाना ॥ जपमालाहलदोउकर
 मांई ॥ श्वेतवसनचक्रुंवास्त्रकहाई ॥ सबकेनेनकमलदलमाई ॥ ४१ ॥ **दोहा ॥** कमलदलअग्रविचे
 महाकृषीसबजुतदार ॥ पूर्वदिक्दिशि विषे ॥ करतहिवंदउचार ॥ ४२ ॥ **चोपाई ॥** अत्रिअनरुया
 कलामरिचिजेहा ॥ पुलस्तहविर्भूवापुनितेहा ॥ गतिजुतपुलहअरुअंगिया ॥ क्रियासहितकनु
 त्यातिभृगुधिर ॥ ४३ ॥ वसिष्ठप्रबंधतिअरुकृषीएकु ॥ दिभुजतदाडादिमुल्लधरतेहा ॥ कृश्वारिर
 सबहेतपचारि ॥ दंडकमंडलुरहेकरधारि ॥ ४४ ॥ कमलबाहिरअष्टदिगपाला ॥ दिवाअरुकोण
 मेंधरेरुढाला ॥ गेगवतपरइंदवारा ॥ चक्रुंभुजकंचनसमआकार ॥ ४५ ॥ वरवज्रअंकुशकंतधारी
 वसनककंबिभूषनभारि ॥ रक्तविद्याललोचनजुतजेकु ॥ पूर्वदिशमेंधरनोएकु ॥ ४६ ॥ अग्नि ॥ ५४ ॥

॥ ५४ ॥

चक्रुंभुजजुतअरुवांवावरना शक्तिअरुकंचनकरधारि चक्रुंभुजजुतदेमरवगरी

कोणमें **अग्नि** ॥ त्रिनेनधुमवसनकृतएकु ॥ पितडादिमुल्लजटाधरतेकु ॥ ४७ ॥ **सोहा ॥** दक्षिणामेयमराय ॥
 सांमचक्रुंभुजहेमवसन ॥ उनमतमहिषापेआय ॥ दंडखडगपाशापरशुधर ॥ ४८ ॥ **चोपाई ॥** नैरुमे
 नैरतदिगपाला ॥ खडेकेवालोचनविकाला ॥ खडगपाशादिभुजमेंधारी ॥ नरउपरयाकिअसवारि
 हरितडादिमुल्लधुमसमवाना ॥ सांमवसनहेमभूषनमाना ॥ अवेष्टमवकुंअतिभयदाना ॥ ४९ ॥ व
 रुहायश्चिममेषधाराई ॥ चक्रुंभुजसांमगणिसुंरुहाई ॥ श्वेतवसनमोतनकीमाला ॥ समहंसकृतए
 विद्याल ॥ दिभुजमेरुत्पात्रसंबधारा ॥ दिभुजमेंपाशापकरिगार ॥ ५० ॥ वायुकीणमेवायुवानहरी
 ता ॥ दिभुजसांमवसनअंगधीता ॥ मृगवाहनशिरछुटेहेकेवा ॥ मुखउघारीध्वजाधरवेशा ॥ ५१ ॥ उत
 रमेंचक्रुंभुजकुवेरा ॥ गदाशुलसांगथालरत्नकेरा ॥ सांमवसनमुल्लुदिकततेहा ॥ कंचनकायपाल
 खिपरतेहा ॥ पिरैवामनयनकृतएकु ॥ कवचअलंकारसहिततेकु ॥ ५२ ॥ **दोहा ॥** महारुद्रईशानमें
 अर्धनारिनरहेह ॥ वामभागारवती ॥ जमनेसंकरतेह ॥ ५३ ॥ **चोपाई ॥** ईश्वरअंगमैजटाचंदकता
 उमाभालमेंतिलकअभुता ॥ भस्मलेपनईशकेअंगमांई ॥ कुंकुमसेउमाअंगरुहाई ॥ ५४ ॥ नागतने

५४

५४

वाक् ७
॥५५॥

अ. ३७

इतिवन्नंगमंधारी॥ उमान्नंगमंधारहजारी॥ वामन्नंगमेस्तनक्तकंचुका॥ करिमेवलातुपुरहेमकु
 का॥ ५५॥ कर्कविवसनकंकणकरमांडं॥ रत्नमुद्रिकान्नंगुलिमेंसुहाडं॥ त्रिभुलरुद्राक्षमालारहेवा
 इं॥ ५६॥ नागमेवलाइंशन्नंगमेकरही॥ गजचरमकेवसनतनधरही॥ नागकंकणानुतकरहेहीउ॥
 दरपणकमलधारिरहेसोउ॥ ५७॥ सोरवा॥ याविधकेमहादेव॥ दृषभवाहनपरवारहे॥ पुजनहार
 जानिभेव॥ अष्टदिगपालदिवामेस्थापहि॥ ५८॥ चोपाईं॥ पुरसेवाहिरन्नप्रहृतनेकु॥ निजदिवामें
 वाहनक्ततेकुं॥ पुरवमेसरजपितवासा॥ द्विभुजसिंदुरवानउजासा॥ ५९॥ द्वादशआणकरथचक्र
 मांडं॥ सप्ततुरंगतेजोमयस्थवांडं॥ हरितवर्णजोरेवाप्रतांडं॥ भृगुकोस्थापनअग्निकोणमांडं॥ ६०॥ श्वे
 तसरिरश्वेतांबरधारि॥ दंडकमंडलुद्विभुजमेंभारि॥ दवाघोराजोरेविचित्रवाना॥ हेमकेरथपरवादेसु
 जाना॥ ६१॥ दक्षिणमंगलरक्तन्नंगवासा॥ गदाशुलवान्कीवरचक्रंमुतासा॥ कंचनमयहेरथवि
 साला॥ दालअश्विभूलवान्कीकरधारि॥ अष्टतुरंगभृंगवर्णाभारि॥ ६२॥ साममणितुल्यदानिचरनेकु
 पश्चिममेंद्विभुजहेतेकु॥ मंदलोचनचापत्रिभुलधारि॥ सामवसनरथकिअसवारि॥ काबलतुरं॥ ॥५५॥

अष्ट तुरंग जोरे रंगला वा १० नैरत मेरा कु तमरुप देहा राम वसन मुष वि काल हा च कु भुज लोह के रथ पर वारी

धारि॥ अष्टतुरंगभृंगवर्णाभारि॥ ६३॥ साममणितुल्यदानिचरनेकु॥ पश्चिममेंद्विभुजहेतेकु॥ मं
 दलोचनचापत्रिभुलधारि॥ सामवसनरथकीअसवारि॥ काबलतुरंगअष्टप्रहोएकु॥ शिवाकेर
 थमेंजोरेहेतेकु॥ ६४॥ वायुकोणमेवाश्वेतावनाना॥ श्वेतांबरगदाद्विभुजसुतांना॥ तिनचक्रमेंवा
 तदान्नआरा॥ वारिमयस्थकेपरवारा॥ मोगराकेसुमनसमधीरा॥ द्वादतुरंगजोरेदोउजोरा॥ ६५
 उत्तरमेंबुधअरुणअन्नगा॥ द्विभुजअभयवरधारसंगा॥ वैठेकंचनकुंकेरथतांडं॥ अष्टतुरंगपीत
 जोरेयामांडं॥ ६६॥ देवगुरुइंज्ञानकिजोरा॥ कंचनकायवसनधरधीरा॥ कमलनेनद्विभुजहेएकु
 दंडकमंडलुधारितेकु॥ कंचनकेरथकुंमेजोरा॥ तुरंगअष्टप्रहोवर्णापांडोरा॥ ६७॥ सोरवा॥ प्रभुके
 सबअंगदेव॥ याविधकेअर्चकस्थापहि॥ कर्णिकापुरमध्येतेव॥ अत्रिलिनिजमिजदिसीवि
 थे॥ ६८॥ वाक्देवकेअंगदेव॥ सुरतिमानधनादनकरहि॥ डुरवलकरहितोसेव॥ पुगचोवानेही
 स्थलस्थापकु॥ ६९॥ इतिश्रीस्कंदपुराणे विद्युत्खंडे श्रीवाक्देवमाहात्म्ये श्रीसहजानंदस्वामि
 शिष्यभूमानंदमुनिकृतभावायांसप्तविंशोऽध्यायः॥ ३७॥ दोहा॥ राधाकर्मस्वरूपको॥ ध्या

५०

मनसोऽप्युत्थितो वाक्पुत्रोऽप्युत्थितोऽप्युत्थितोऽप्युत्थितो

वासु
॥ ५६ ॥

ननिरूपणनाम ॥ अष्टविंशमेकहृते ॥ नारदनिसेंसांम ॥ १ ॥ चोपाई ॥ नारायणकहेऽप्रर्वकजोउ ॥
आचमनप्राणायामकरहि सोउ ॥ स्थिरमननिताईछमेंसिरनाई ॥ देवाकालकहेपुनिमंत्रबोलाई ॥
१ ॥ एकांतधर्मसिधिकेकाजा ॥ पुतेगोहमवाफुदेवमारजा ॥ संकल्पकरिपुनिमासकरहि ॥ बारअ
क्षरादिमंत्रउचरहि ॥ ३ ॥ विघ्नगुणयत्रिकरेमासमाई ॥ अष्टाक्षरवाफुदेवमंत्रगाई ॥ पंचअक्षरहरी
कोजोउ ॥ केवावकेषटअक्षरसोउ ॥ ४ ॥ विघ्नपुतीमाकेसबअंगमांई ॥ मासकरहि सोमंत्रपुनि
गाई ॥ पुनिवसनसेमूर्त्रिंछारि ॥ नितवामभागेकलशकुंधारि ॥ ५ ॥ तामेंतिरथकोआवाहनकरही
पुंभादिसेंपुभुपुजाअनुसरहि ॥ पुजासराजामसबनिजदेहा ॥ कलशजलमेंछिरकनोतेहा ॥ ६ ॥ सो
खा ॥ पुतिकेघंटाअरुसंख ॥ भुतफधिपुतककरहि ॥ पापशरिरजारिवंख ॥ अंतवायुवद्विसेक
रऊ ॥ ७ ॥ चोपाई ॥ शुधचितब्रह्मसेस्थिरमिलाई ॥ अक्षरब्रह्मरुपहोयउरमांई ॥ ध्यानश्रीराधाक
धमकोधारहि ॥ मनसावधानप्राणायामचरहि ॥ ८ ॥ अधोमुखनाभिकमलफहाई ॥ हेमांनुकदलि
कुलकिमांई ॥ सोकंतअपानवायुसेंमिलाई ॥ पुनिप्राणसेंकरिराकताई ॥ ९ ॥ यवनपयकीनाल

अ-३८

माए
॥ ५६ ॥

कलसउउमंउ

मेंचराई ॥ वायुजुतकमलउर्थउताई ॥ तेहिक्षणकमलतिव्रनादकारि ॥ पुनियाकुंउरविधेलेतउञ्जारी ॥
१० ॥ रुदाआकानुमेंफुलतसोउ ॥ प्रफुलिनतेजसमुहमेंजोउ ॥ तामेंतेतोमथराधापतिसोउ ॥ शांत
अरुदर्वनलायकजोउ ॥ ११ ॥ सोकबुबेउतउतफिरही ॥ ताकीध्यानपुतनहारधरही ॥ तेतोमथमु
रतिकीशोरजेऊ ॥ कंदर्पकीटिमनोहरतेऊ ॥ १२ ॥ अनुभवअमायिकफंदराहा ॥ करचरनादीकप्रव
यवनेहा ॥ सरदचंदसमनिरमलअंगा ॥ करहीउदीर्घफरवदरकरांग ॥ १३ ॥ दोहा ॥ स्तुकीमलतलच
रनके ॥ अंगुलिमनोहरमांई ॥ उंचलालनखकांतिसे ॥ उदपरहेउलजाई ॥ १४ ॥ चोपाई ॥ बाजतघुघ
रुअनुपनुपुरा ॥ चरनेकडांमालुहंसहेजोर ॥ गोलतंधानाउरुसमदोउ ॥ रत्नमेवलाबधपिताव
रसोउ ॥ १५ ॥ उंचहेउदनाभिकोअता ॥ त्रिबलिकृतनाभिउडिसेवेसंत ॥ अतिउन्नतविज्ञानसोहे
छाति ॥ जामेश्रीवञ्जरोमभ्रमरिभाति ॥ १६ ॥ देवछेदएकावल्मनामहारा ॥ कंतभूषणाकतललहिअ
याए ॥ सुगंधिवज्रविधफमनकिमाला ॥ कंचनयज्ञोपविनविज्ञाना ॥ १७ ॥ प्रफुल्लालकमलतुल
कांती ॥ करयुगमेंकडांसांकलांभाति ॥ सूक्ष्मपरवजुतअंगुलिमांई ॥ कांतिकरतरलमुडिकामुहाई ॥ १८

करगाहिमगोहरवेणुवजावे ॥ मधुरस्वरयुनितामहिगावे ॥ रंभाविवागलजंतुनुदुबेहेदीउ ॥ मद्राभुजवा
 जुकांतिनुतसोउ ॥ १९ ॥ सोरठा ॥ अमररुगंधलोभिनेजु ॥ करहिगुंजारवचनमालमं ॥ प्रभुधरिहेते
 जु ॥ कंबुतुल्यकंठकौस्तुभनुत ॥ २० ॥ चौपाई ॥ अधरलालबिंबिकुलसीभाहारि ॥ उज्वलमंदहास्य
 हेजामेभारि ॥ वदनहेपुरणचंद्रसमाना ॥ नासातिलकुलसमरुहाना ॥ २१ ॥ करणमंकुंउलमकाकारी
 तापररुमंनगुच्छाहेधारि ॥ समसूक्ष्मदंतकांतिनेहा ॥ कपोलपरसोभाकृतपरिनेहा ॥ २२ ॥ कमलदल
 समविस्तारवाना ॥ ररुल्लोचनकोणनुतसुजाना ॥ भालविवागलचडियातोसोहे ॥ कामधनुषसमस्तु
 हमनमोहे ॥ २३ ॥ बंकेसूक्ष्मसामंशिरकेरा ॥ मनोहरजामेचिकासकोलेरा ॥ बज्रविधरलसंमुक
 टजरावा ॥ साचेरलकेतीगकुक्रावा ॥ २४ ॥ प्रेमसेभिनेदृगमेंप्रभुजोउ ॥ निजजनसेमानुदेस्वरहेसोउ
 याविधरुदमकोध्यानउरधारि ॥ जाकेवामंश्रीराधिकाप्यारि ॥ २५ ॥ सोदोउभुजकंचनतुल्यदेहा ॥ अ
 मलकसंविवासधराहा ॥ रत्नभुषणसेसोहेदोउकांना ॥ नासांकिरकिनासामंभाना ॥ २६ ॥ किशोर
 वयचपलदृगदोउ ॥ मृगावालककेसमहेसोउ ॥ पिनउनतकविनस्तनजाके ॥ वरेनितंबकरिपातलि

याके ॥ २७ ॥ रलकिमेरवलाकरिपराने ॥ दिव्यअनेकआभुषणछाजे ॥ फुलेकमलतुल्यमुखमंदहा
 सा ॥ रत्नमुद्राकरुंरंगुलिप्रकासा ॥ २८ ॥ केयूरकंकरादोउकरमाई ॥ लुपुरकडंजुंसेचरनरुहाई ॥ भा
 लविवागलमेकुंकुमचंद्र ॥ ललाटभुषणदाइअनेदा ॥ २९ ॥ लालअधरकपोलसोभाकारी ॥ वेलामें
 रुमनमालतिकेधारि ॥ दोहा ॥ प्रभुकुंवलोकतप्रेमसें ॥ कमलधरिकरमाई ॥ याविधराधानुतसो
 प्रभुयुजकुमुदपाई ॥ ३० ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेविद्युखंडेश्रीवासुदेवमाहात्म्येश्रीसहजानंदस्वामि
 शिष्यभुषानंदमुनिकृष्णायायांअष्टविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥ दोहा ॥ वासुदेवपुताविधि ॥ कुंकोनिरुप
 णभिन ॥ अध्यायश्रीगानत्रिसमे ॥ नारायणनेकिन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ नारायणकहेयुजकनेजु ॥ मनक
 ल्यितलाईसराजामाहु ॥ तामेश्रीरुदमकिमानसिचनार्ई ॥ पुनिनिजप्रतिमाकुंयधार्ई ॥ आवाहनक
 रहिमुरतिमाई ॥ २ ॥ स्थापनमुद्रासंस्थापहितार्ई ॥ ताकेअंगदेवजोतोकरार्ई ॥ ताकेमंत्रेकरिआवाहनत
 र्ई ॥ नाममंत्रसेपुनिदेवेयधरु ॥ ३ ॥ जुतवाजितरघंटावजावे ॥ तालिबजाईपुनिप्रभुजगावे ॥ मानुसु
 रकेउवेप्रभुजोई ॥ दंतधावनकरातनाकुंसोई ॥ ४ ॥ नृपामाकविद्यमुकांतश्रोत्रोधितेहा ॥ पुर्वास्वर्गाधि

कमननुततेह ॥ शरिर्के देनोपाद्यजललाई ॥ पुनिअर्थक्याचमनदेनोतार् ॥ ५ ॥ **सीरवा** ॥ चौरवाचंदन
 फुलकुत्रा ॥ सर्वपतिलयवडुर्वोपुनि ॥ सबडारेजलकुस ॥ नामअर्थजलतानकुं ॥ ६ ॥ **चोपाई** ॥ एलवि
 जविंगतायफलतेकु ॥ उशिरकं कोखसेवासिजलजेकु ॥ देनोहरिकुंआचमनराह ॥ स्नानकरनोपुनिनु
 तसनेहा ॥ ७ ॥ तेलफुलेखप्रथमसुं चोरि ॥ अविगदिमेउतारनोरोरि ॥ घीदधिदुधमधखंडहेतामे ॥ पंच
 मृतस्नानकरवनीतामे ॥ भिनभिनमंत्रउचारिकेयामे ॥ ८ ॥ शुधसुगंधिउनीजलदोरि ॥ स्नानकरार्पु
 जेचंदनादिवोरि ॥ निर्माल्यपुष्पादिडारेउतारि ॥ तापिछेअभिषेककरहिभारि ॥ ९ ॥ **दोहा** ॥ सांमराजन
 वेदगांनतो ॥ रमाहरिस्फुंसेउ ॥ महापुरुषविद्यापुनि ॥ मंत्रउचारिसोउ ॥ १० ॥ **चोपाई** ॥ द्दिसितशुध
 रुत्रियाजानजेकु ॥ अद्योतरवानसहस्रनांमतेकु ॥ तासेंअभिषेककरिहरिसंग ॥ वसनसेंखुवतकत
 उमंगा ॥ ११ ॥ अमुखवसनप्रेमपेराई ॥ संकर्षणगाधाकृष्णकुलाई ॥ उयवितरलकेभुषनजेहा ॥ येराव
 नाप्रभुंकुंखबनेहा ॥ १२ ॥ केशारकपुरकस्तुरिमाई ॥ टिकाटिकरेकालकनुमेंफुहार् ॥ राधाकुंउचितअ
 लंकारधारि ॥ कंकुचौरापित्यतिलकभारि ॥ १३ ॥ पुनिदरपनदेखायकेमाला ॥ धरातनोरकतफुल

किविशाला ॥ तुलसिपत्रअरुमेंजरिहजार ॥ पुजहितासेहरिभक्तुदारा ॥ १४ ॥ अथवाफुलचरावो
 कएका ॥ विघ्नवेनममंत्रबोलिनुतदेका ॥ सुगंधअविगदिअरपकेएकु ॥ द्वांगांधुपपुनिकर
 हितेकु ॥ १५ ॥ **सीरवा** ॥ घृतसेकरकेदीपा ॥ बतियांदीतामेएकवदि ॥ पुजनहारसेअधिपा ॥ पकवान
 दिकभैवेद्यधरहि ॥ १६ ॥ **चोपाई** ॥ सिऐपुरिपयपाकमालपुजा ॥ जलेबिखंडलाडुमोतिचुररुडा ॥ साक
 विविधभातदधिदुधपोलि ॥ घृतसाकरकेरिंकेरसघोलि ॥ १७ ॥ बाजोवपासुबभोजनधारि ॥ जिमात
 बिचमेंपायकेवारि ॥ एकघटिकाजिमेहरिनबहि ॥ हस्तधोवनजलदेवैतबहि ॥ १८ ॥ उच्छिष्टअन्नप्रभु
 कीजेहा ॥ विषकसेनादिकदासकुंतेहा ॥ अर्पनकरियाकोप्रसादतेकु ॥ आपलियेऊरवारोअधरेतेकु ॥
 १९ ॥ तापिछेतेहिभुतलसुंधारि ॥ मुखवासएलचिलविंगसोपारि ॥ जावंतरितायफलपुमिजारि ॥ देनो
 तांबुलकीबिदिसुंधारी ॥ २० ॥ **दोहा** ॥ फलनालिकेरादिकजो ॥ धरनोप्रभुटिगलाई ॥ पुनिप्रभुतिकुं
 दक्षिणा ॥ देमिनितशक्तीसुहार् ॥ २१ ॥ **चोपाई** ॥ गितवातांबडुभांतवतार् ॥ काहिअारतिमहामु
 दपाई ॥ स्तुतिकरिपुनिपुष्पांजलिदेवे ॥ ताकेस्तोत्रकहिकेपुनिसेवे ॥ २३ ॥ प्रभुकेनांमकृतकिरतन

वाक्ये
॥ ५६ ॥

अ-३६

गाईं ॥ नृसकरेऽप्रागेदीउघडिताईं ॥ प्रदक्षिणापुनिदंडवतकरहि ॥ प्रभुकेजमनिवानुविधेपरहि ॥ ३४ ॥
 अष्टांगपंचांगदंडवतदौउ ॥ युरुषकरेनारिपंचांगजोउ ॥ करचरनजानुवरशिजेऊ ॥ मनवचनयनअ
 ष्टांगतेऊ ॥ ३५ ॥ मनवचनहगकरसिरनाईं ॥ दंडवतकरेसीपंचांगकहाईं ॥ प्राथनाप्रभुदिगकरेजाही
 सरणेऽप्रायोमेंसंसृतिसेंपाही ॥ ३६ ॥ **दोहा** ॥ निसपाठकरेपुनिएऊ ॥ स्तोत्रकोवेदपुणाराकेतो ॥ लेवे
 शिरचाराकेतेऊ ॥ निर्माल्यमानुमोकुंदिये ॥ ३७ ॥ **चोपाई** ॥ आवाहनकियेतेपूर्वजेसे ॥ राधाकृतप्रस्था
 पेरुहामेंतेसे ॥ प्रभुकेअंगदेवतोजोउ ॥ निजनिजस्थानमेंधरहिमोउ ॥ ३८ ॥ करंडअरुमंदिरसन्नामांईं
 प्रतिमाप्रभुकितामेंपोदाईं ॥ द्वाखासिपुनिवैश्वदेवकरह ॥ प्रसादीअन्नसत्त्वधिकुंधारहि ॥ ३९ ॥ पुनि
 प्रसादपुजनहारपाईं ॥ अवशिष्टदिनकटेहरिजसगाईं ॥ याविधपुजनकीमितकरता ॥ पार्यदप्रभुकीहै
 वेअथहतां ॥ ४० ॥ दिखतेतोमयवेमानेगए ॥ गोलोकमेंजावेदिअदेहधारि ॥ याविधपुजाकरेफल
 लियेतेऊ ॥ धर्मअर्थकाममोक्षपावतेऊ ॥ ४१ ॥ **दोहा** ॥ याविधकरनअज्ञानजो ॥ हरिअधापधरा
 ईं ॥ अंगदेवविनयुजही ॥ स्वल्पसामग्रिलार्ईं ॥ ४२ ॥ **चोपाई** ॥ बारुअक्षरमंत्रसेद्विजजोउ ॥ नाममंत्रसेपु

॥ ५६ ॥

जेनारिशुद्धमोउ ॥ प्रभुपुजनजुनभक्तीजेहा ॥ कसिधिदायकहीतहेतेहा ॥ ४३ ॥ एकादशहरिजनमदी
 नतेते ॥ महापुजाकरेहरिजनतेते ॥ श्रीगुरेकियेजोमेंदिरमांईं ॥ प्रतिमाप्रधरावेवेदविधिलार्ईं ॥ सोनरस
 कलभुमिपतिहोईं ॥ चक्रवृत्तिराजकरहिमोईं ॥ ४४ ॥ धनाढ्यनरहृदमंदिरकरार्ईं ॥ रास्यकरेत्रिलोकीको
 पाईं ॥ पुजापरंपराचलावनकाजा ॥ वृत्तिकरिदेवेवैष्टमवराजा ॥ सोननविष्णुकेलोकमेंजावे ॥ अक्षयअ
 लोकिकमहाकृत्वपावे ॥ ४५ ॥ **सौरव** ॥ स्थापनपुजनमेंदिर ॥ तिनकुंकुणायकेसीपावही ॥ सारिष्ठमु
 क्तिकुंधिर ॥ निश्चिवाकृदेवसत्त्वधसे ॥ ४६ ॥ **चोपाई** ॥ प्रभुलियेवृत्तीअपारपरकीना ॥ पुनिरवोंचलेवेजो
 मतिहीना ॥ सोनरककेकुंडकमेंताईं ॥ भोगहिपीशकलयएकतांईं ॥ ४७ ॥ आपेकरेअरुओरसेंकरावे
 सहायकरेअरुदेवमुदपावे ॥ सोचकूंहोतहेफलकेभागी ॥ पापअरुपुण्यकूंकेबिनएगी ॥ ४८ ॥ नारद
 कृहोमेंक्रियायोगवीधि ॥ जासेहोवेधर्मएकानिमिधि ॥ विषयचिंतनकरेचितमांईं ॥ बाहिरपुजेबोन
 सराजामलाईं ॥ ४९ ॥ यथार्थसोफलकुंनहिपावे ॥ याकारनजोमुमुक्षुकहावे ॥ सोइतउतधावतमनतांईं
 विष्णुपुजाकरेनिममेंलाईं ॥ ५० ॥ **दोहा** ॥ महाव्रतधरवक्रतपकर ॥ सांख्ययोगपयतोउ ॥ हरिअचन

विनसिधिसो ॥ पावेनबुधिवंतकीउ ॥ ४१ ॥ इति श्री स्कंदपुराणे विद्युत्खंडे श्री वास्तुदेवमाहात्म्ये श्री
 सहजानंदस्वामिशिष्यभुमानंदमुनि कृतभाषायां एकीनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥ ॥ दोहा ॥ त्रिंशुके
 अध्यायमें ॥ नारदसेकहेसामं ॥ अष्टांगगद्देयोगके ॥ ताही निरुपणनाम ॥ १ ॥ चौपाई ॥ स्कंदकहेनार
 णकह्योएऊ ॥ वास्तुदेवअर्चनविधितेऊ ॥ ताहिकुंस्ननिनारदमुदपाई ॥ पुनिस्वामिसेयुछेउशिरनाई
 ३ ॥ सबकह्योतुमक्रियायोगजोउ ॥ एकाग्रमनसेंकरनोसोउ ॥ मनकुंकीनियहकरनोसेह ॥ ज्ञानीपुरु
 षकुंभिडुकरतेह ॥ ३ ॥ याविनहरिकीअर्चानेऊ ॥ इच्छीतफलदायकनहीनेऊ ॥ याकारनमननिग्रहउ
 पाया ॥ जेसेहोवेतेसेकहोमुनिराया ॥ ४ ॥ स्कंदकहेनारदकीफंनिगाथा ॥ बोलिनारायणपुनिमुनिसाथा
 नारदतुमजोकहिससबांनी ॥ महाबलमनकीहेहमजानी ॥ ५ ॥ जितेमनविषेरात्रुकिंमाई ॥ विश्वासन
 करेविवेकीकहाई ॥ जिवकोमनसमजोररियुनाही ॥ हरिध्यानप्रभासजोगसेंताही ॥ कामादीदोष
 विनहोवेजबही ॥ चंचलपनाकुंमनतजेतबहि ॥ ६ ॥ सोरवा ॥ अदम्यअश्रुकीमाई ॥ केदूरहितमन
 निममेंकरे ॥ वैराग्यकृतनरताई ॥ तपयोगअष्टांगउपायसे ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ अष्टांगयोगकीअप्रभास

जेऊ ॥ सद्यफलदायकअष्टहेतेऊ ॥ यमनिमज्जासनप्राणायामसाधि ॥ प्रसाहारध्यानधारणासमा
 धि ॥ ८ ॥ अष्टांगमेंयमपंचप्रकार ॥ अहिमाविषयसागब्रह्मचरधार ॥ अचौरिससतोपंचयम
 एऊ ॥ योगकीएकअंगगद्देतेऊ ॥ नियमककुंपंचउजोअंगतेऊ ॥ सोचसेंतोषतपभरणयुजातेऊ ॥ ९ ॥
 अंगकुंकीचंचलतासागी ॥ स्तवहोवेसुंवेवेवडभागी ॥ स्तवपुखपीडाजाहिसेंजिता ॥ स्वस्तीअज्ञान
 निदोशअंगकीता ॥ १० ॥ चलतप्राणएकदेशधरतोउ ॥ गुरुआगपासेंप्राणायामसोउ ॥ चलबायुमेंवी
 तचलतेऊ ॥ स्थिरवायुमेंस्थिरहोवेतेऊ ॥ पुरकुंभकरेचकसेंजेह ॥ सदान्प्रभासचौष्टेअंगाएह ॥ ११
 दोहा ॥ इंद्रिनकीदृतीसबे ॥ पंचविषयसेंतेऊ ॥ मनसेपिछेखिचन ॥ प्रसाहारअंगाएऊ ॥ १२ ॥ चौपाई
 मुलाधारआदीचक्रजेता ॥ प्राणकृतओरचक्रमेंधरतेता ॥ प्रधुस्वरुपमेंधरनोचिता ॥ धारणायाको
 नामउदिता ॥ १३ ॥ करचरणद्विकअवयवजेता ॥ ध्यानसोपृथकचिंतहितेता ॥ अतिप्रमकरिहुरिअं
 गमांथी ॥ मनप्राणरुंधेसोसमाधिकहायी ॥ १४ ॥ सिधगुरुकुंसेअष्टांगजानी ॥ समाधिरुपयोगसि
 धकरैपानि ॥ अष्टांगयोगअप्रभासतुल्यनाई ॥ मननिग्रहकीसाधनकहाई ॥ १५ ॥ तपकरेताकोरात्रु

वासुदे
६१

अ. ३०

हेभारि ॥ मदननाम ब्रह्मांडक्षोभकारि ॥ अष्टांगयोगिकुंतासे भयनाई ॥ अंतकाल आनता निदंत
हवाई ॥ १६ ॥ सोरवा ॥ स्वतंत्रपने निज देह ॥ समाधिकरि के सो तजहि ॥ पेनिसे गुदा बंधाए ॥ करके प
वनसोपावसें धरि ॥ १७ ॥ चोपाई ॥ पावसे वायु कुधिरि धिरतानि ॥ मूलाधारचक्रमे धरो सो आनि ॥ मन
सें ध्यानके राव को धारि ॥ अट अक्षर जपे मंत्र चारि ॥ १८ ॥ मूलाधारसें पवन उवाई ॥ स्वाधिष्ठानचक्र
मे धरे लाई ॥ मणिपुरकना भिचक्रमे जो उ ॥ अनाहतचक्र हृदे लगत सो उ ॥ १९ ॥ विद्युधिचक्र उरके वप
येता ॥ तासे उपरि चगत वायु संता ॥ भृकुटि अनाहतचक्र कहाई ॥ स्वतंत्र होवे प्राणतामं चवाई ॥ २० ॥
अटचक्रमे इंद्रिमन प्राणजेऊं ॥ आपे रंधे रूद्ररुछीरे जो गितेऊं ॥ ताकुं छोरि मारचक्रमे लेजावे ॥ इंद्रि
प्राणकुं सो स्वतंत्र कहावे ॥ २१ ॥ अटप्रोस्थानकपावे जबही ॥ अभासमे अमही तनतबही ॥ ससली
इंधे इंद्रिमननुता ॥ प्राणचक्षवेता लुमें प्रबधुता ॥ २२ ॥ सोतो गिब्रह्मरंधंमे जाई ॥ मायिकपदार्थवा
सनाबहाई ॥ श्रीवासुदेवविषेमनधारि ॥ नितकलेवरतते तो गकारि ॥ दिव्यमुरति धरि हरि धाममां
जाई सेवे करमकुं मुदपाई ॥ २३ ॥ सोरवा ॥ नारदतुमसे किन ॥ योगशास्त्रं किरहस्य जो ॥ तासें मजनि ॥ ६१ ॥

६१

तप्रविन ॥ हृदयपकुंतुमसेवसदा ॥ २४ ॥ इति श्री स्कंदपुराणे विष्णुखंडे श्रीवासुदेवमाहात्म्ये श्रीसह
जानंदस्वामिशिष्यभूमानंदमुनिकृतभावायां त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥ होहा ॥ स्तूतिनारदने किये
नारायणकितेऊं ॥ अध्याय एक त्रिंशोमे ॥ कियो निरुपणतेऊं ॥ १ ॥ चोपाई ॥ स्कंदकहे नारायणव
चस्कंनि ॥ निरसंवाय होई नारदमुनि ॥ दोउक लोरि चरनसिरुनाई ॥ बोलोनारायणके से मुदपाई ॥ २ ॥
तोर प्रसादसे द्रासे टरे स्वामि ॥ वासुदेवमाहात्म्यपाये धामि ॥ तुमसेंतपकरि अत्मकाला ॥ ज्ञानादिकं
निपक्ककरु विवाला ॥ ३ ॥ स्कंदके या विधबोले मुनि सो उ ॥ प्रोदपायो नारायणसे जो उ ॥ तपकारतभये
विज्ञात्तामां ॥ सहस्रवरधदेवनके तो ॥ ४ ॥ हरिमुखसे निसदिनज्ञाने स्कंनि ॥ तामेपकृतापायो महा
मुनि ॥ हरिमें हेत अधिकपुनियाई ॥ भक्तसिंहे मणिभयो गुणगाई ॥ ५ ॥ सोरवा ॥ भक्तीनिष्ठापाय
जो उ ॥ सिधतो गिभयो नारदमुनि ॥ तासें नारायण सो उ ॥ बोलनजनकल्यानकर ॥ ६ ॥ चोपाई ॥ सि
धहोनारदलोकमें जाई ॥ एकांतधर्मदेऊं प्रवराई ॥ स्कंदकहत अगापा सिरचवाई ॥ स्ततिकरतप्रभु
किमुदपाई ॥ ७ ॥ नमोनारायणजक्तगुरु जो उ ॥ अप्रायिक दिव्यमूर्ति सो उ ॥ अनंतकल्यांनगुन

वाक्ये
६३

कितानि ॥ सदा प्रसनहोनामोयेहामजानी ॥ ८ ॥ तुमवास्तुदेवजगत्प्रतरजामि ॥ लोककल्याणली
येतपकरस्वामी ॥ योगेश्वरकेतुमहोर्द्वारा ॥ उपवासतुतब्रह्मनिष्प्रधिवा ॥ ९ ॥ सनकादिककेस
जुरुतेहु ॥ अगनासिहजारकृषीमेंवराहु ॥ अक्षराधिवातिवर्षेश्वरकेस्वामी ॥ महामायाकेर्द्वारा
तरजामि ॥ १० ॥ तोरभृकुटिङ्गसेकालहोई ॥ आसंतिकप्रलयकरतहेसोई ॥ प्रधानकेपुरुषरुपधर
ता ॥ नसतिपालनावातुमकरता ॥ ११ ॥ तामेंतोकरवडुरवतवहोतनाहि ॥ निरगुनब्रह्मयाकारनकहा
हि ॥ तोतिस्वरुपमसतुमकुंकहाहि ॥ तोराश्रिकीकीहुपारमलहहि ॥ १२ ॥ ब्रह्मरुपहोई तोरध्यान
धरहि ॥ त्रेष्टिकव्रतधरकाममदहरहि ॥ प्रसिधिरियुतपसिकेजेहा ॥ क्रोधरसमछारलोभादीकतेहा ॥
तोरआश्रममेंकबुआतनांही ॥ याविधप्रभुतोराप्रतापकहाहि ॥ १३ ॥ दोहा ॥ वेदकर्मप्रतिपादक
असंतमोक्षमगरुप ॥ सांख्यवास्तुसिधांतकुं ॥ कहवनदारअनुप ॥ १४ ॥ चौथाई ॥ धर्मसर्गपोष
कधर्मधारि ॥ अधर्मसर्गद्वियेमूलसेउरवारि ॥ अचेतनसर्गकुंचेतनकर्ता ॥ क्रियातिहारिनिर्गुनहे
भर्ता ॥ १५ ॥ धर्मअर्थकामकीइजाजाकुं ॥ पुतनतोपतुममुमुक्षुताकुं ॥ कालमायातमहुकीभय

अ-३१
६३

भारि ॥ समृथनुमतसेखेतहोउगारि ॥ १६ ॥ भक्तकेअपराधतुमजोतनाही ॥ भक्तवत्सलमहादेवालु
कहाहि ॥ प्रगटकेनांमरुपाएकचारा ॥ स्मरनकरेतबआवेअंतकारा ॥ १७ ॥ सोधोरअधकेओधव
हाई ॥ प्रभुपदसेवेकुं वमेंताई ॥ याविधकेप्रभुतुमकुंसागी ॥ देहगेहदारसुतधनादिमेंरागी ॥ या
मेंजोतनमेरीमानकेजोराई ॥ मायावंचितसोमुदकहाई ॥ १८ ॥ तोरभक्तीजोगपनरदेहाहु ॥ स्वर्गवा
सिंहद्रादिकइछेतहु ॥ स्वर्गकरवतवभक्तीहिनतेते ॥ नरकतुल्यमेंमानिहुंतेते ॥ १९ ॥ ब्रह्मांडवासिस
बजनकेकाता ॥ तपकरिदेतहोफलकृषीगता ॥ भारतखंडमेंअतिक्रपाकारी ॥ विचरोहोतुमनरदेहधा
रि ॥ २० ॥ सोरठा ॥ आश्रयकरतनतोर ॥ कतघ्ननास्तुमेंसोकहेहे ॥ याकारनकलकरजोर ॥ आश्रित
भयोमोसेप्रसनहो ॥ २१ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेविद्युरवंडेश्रीवास्तुदेवमाहात्म्येश्रीहस्तानंदस्वामी
त्रिष्वधुमामंदसुनिक्रिडावायांएकत्रिंशोःध्यायः ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ परंपरायायंथकी ॥ संप्रदायव
लिआत ॥ बन्नीवाकेअध्यायमें ॥ वरनिकहिमाक्षात ॥ १ ॥ चौथाई ॥ स्कंदकहेस्कृतिकरिमुनिजो
उ ॥ बड़ीसेआसनाश्रमगयेसोउ ॥ याकेराप्पाप्राज्ञानामकहाई ॥ जज्ञभयेहेअसंख्ययामोई ॥ २ ॥

६३

वासु०
६३

अ-३३
तत

आसेनारदकुं मानदियोजवहि ॥ नारद व्यासकुं धर्मकहेतवही ॥ पुनिविधिजुंकीसभामेंताई ॥ अत
 दिगगठेदेवकृषीकह्योताई ॥ ३ ॥ तामहीगठेथेस्फरतदेवा ॥ संज्ञधर्मएकांतकीभेवा ॥ प्रथमकल्पे
 नारायणसेतेजु ॥ स्फनेथेपुनिसंनेनारदसेतेजु ॥ ४ ॥ वाजविल्मकुं कह्योस्फर्यनेजोउ ॥ वाजविल्मईजु
 दिकुंकह्योसोउ ॥ इंद्रादिदेवनेदेवलकुंकीनो ॥ देवलकृषीनेसोपितकुंदिनो ॥ ५ ॥ सौरता ॥ अर्थमा
 दिकपित्तजेजु ॥ तंतनुकुं धर्मएकांत ॥ तंतनुभिष्मजुंकुंतेजु ॥ नितसुतता नितथार्थकहे ॥ ६ ॥ चोपा
 ई ॥ भिष्मभारतविधेसभामांई ॥ धर्मसेंकह्योत्रासजागोई ॥ यामभामेंगठेनारदतेजु ॥ संमिकह्योके
 लासशिवसेतेजु ॥ ७ ॥ स्कंदकहेशंकरकह्योपुनिमोई ॥ हमनेकहेउसावराणीनोई ॥ पात्रकुं देनोसासे
 कहिहेवानि ॥ शिवकह्योपीयकृष्णदासजानि ॥ ८ ॥ जिनजिनवासुदेवमाहात्मविना ॥ तिननेभक्ती
 एकांतिकिना ॥ धर्मतोभिष्मसेसंनिकेएजु ॥ देवकीसुतकोमाहात्मता नितेजु ॥ ९ ॥ नितबंधुसुत
 महामुदपाई ॥ दुबेउआश्चर्यसागरमांई ॥ नितपामाकीसुतहेतोई ॥ सबकेकारजजानेसोउ ॥ १० ॥ वा
 रहन्नादिकजो तोरुपधार ॥ सुहवासुदेवआदिकचार ॥ रमापतिकेअवतारजेते ॥ राजानेकृष्णके ॥ ६३ ॥

जानेउतेते ॥ ११ ॥ होहा ॥ अमायिकनरमुरती ॥ श्रीकृष्णकीजानं ॥ बंधुसुतयुधिष्ठिर ॥ भयोप्रतिभ
 क्तिवान ॥ १२ ॥ चोपाई ॥ ब्रह्मराजदेवकृषीसभामेंतेहा ॥ आश्चर्यपाथेसंनिगाथातेहा ॥ नरदेहधर
 कुंपरब्रह्मजानि ॥ भक्तीकरतयाकिमाहात्मजानि ॥ १३ ॥ याविधहेमाहात्मसेजानी ॥ सावराणीभजसा
 रंगपानि ॥ तुमसेंकह्योहममाहात्मजेजु ॥ भक्तीदपुरवासनारतेजु ॥ १४ ॥ सौरता ॥ स्कंदपुराणमेअ
 पार ॥ आद्यानतुमसेहमकहेहे ॥ तांसेनिकासीपुनिसार ॥ वेदउपनिषदसांख्ययोगको ॥ १५ ॥ चोपाई
 पंचरात्रधर्मत्रास्रमाजोउ ॥ वासुदेवमाहात्ममेंधरेसोउ ॥ धनजसन्नायुषमंगलमुला ॥ साक्षातप्र
 भुकहिहोईशानुकुला ॥ १६ ॥ स्फनेभनेकहेयाकुंकोउ ॥ प्रभुमेंअचलमतिहावेसोउ ॥ हरिकेभक्तीकां
 तिकतेता ॥ ब्रह्मरुपहोईपावेअक्षरतेता ॥ १७ ॥ धर्मोथीसोधर्मकुंपावे ॥ कामाथीकुंकाममिअिआवे
 धनइच्छतकुंमिलेधनजोउ ॥ मोक्षार्थिकुंउतममोक्षसोउ ॥ १८ ॥ विद्यार्थिहेसोविद्याकुंपाई ॥ गीगिसुन
 तकीगीगमितनाई ॥ हरिमाहात्मकुंअवणकरहि ॥ सकलपापकुंसोपरहरहि ॥ १९ ॥ होहा ॥ ब्राह्म
 णब्रह्मतेजपावही ॥ क्षत्रिपावहिराज ॥ शूद्रपावदिसखकुं ॥ वैश्यसोइविणामाज ॥ २० ॥ चोपाई ॥ या

वासुदे
॥ ६४ ॥

अ. ३३

सुंनिराज्ञारणामें जित आवे ॥ नारिसो भाग्यकमाई छावण्यावे ॥ सबशास्त्रमें शिरोमणी एक ॥ याकुं
के नो अरु सुंननी जे कुं ॥ जन कुं कुं वांछित देवे ते कुं ॥ ३१ ॥ सावर्णिपवभक्ती जुत एहा ॥ मनवाणी दे
हमें भज प्रभुते हा ॥ सुतकहे स्कंदवचन सुधा जो उ ॥ सावर्णिपान करके सो उ ॥ वसुदेवनंदन नरदेह
धारि ॥ ताकी भक्ती करत अघदारी ॥ ३२ ॥ सोनक आदि सब कृषी ही जे हा ॥ आगमनिगमज्ञानत हो ते
हा ॥ भजन जो गप वासुदेव एका ॥ भज कुं या कुं रविधर्म विवेका ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ तेजपुंज मय मुरति ॥
गोलोक कुं के शांम ॥ भक्ती ज्ञानंद प्रद मांन कुं ॥ प्रभु तु म मोर प्रनाम ॥ ३४ ॥ सदगुरु सहजानंदकी ॥ आ
ग्याउरमें लाई ॥ भूमानंद भाषा किये ॥ चरन कुं मे सिरनाई ॥ ३५ ॥ संवत अवारें छनवो ॥ सुक्लपक्ष अषा
ढ ॥ सोमवार एकादशी ॥ ग्रंथ भयो क कुं बाढ ॥ ३६ ॥ साभरगंगा तिरमें ॥ श्रीनगर सुभधाम ॥ नरनाग
यण चरन ठिग ॥ भूमानंद कविनाम ॥ ३७ ॥ इति श्री स्कंद पुराणे विष्टपुरवंडे श्री वासुदेव माहात्म्ये श्री
सहजानंद स्वामि शिष्य भूमानंद मुनि कृष्णायामां ह्यत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥ ॥ इति श्री समाप्ता ॥ ॥
लिं ग व ल जे वा मोर जि सं व त् १६५८ ना चै त्र मा से कृ ष्ण प क्षे अ ष्ठी ने गुरु वा सं रे में था ण ग्रामे समाप्ता ॥ ६४ ॥

